मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 64 | अंक : 3 | सितम्बर, 2013 | मूल्य : ₹10

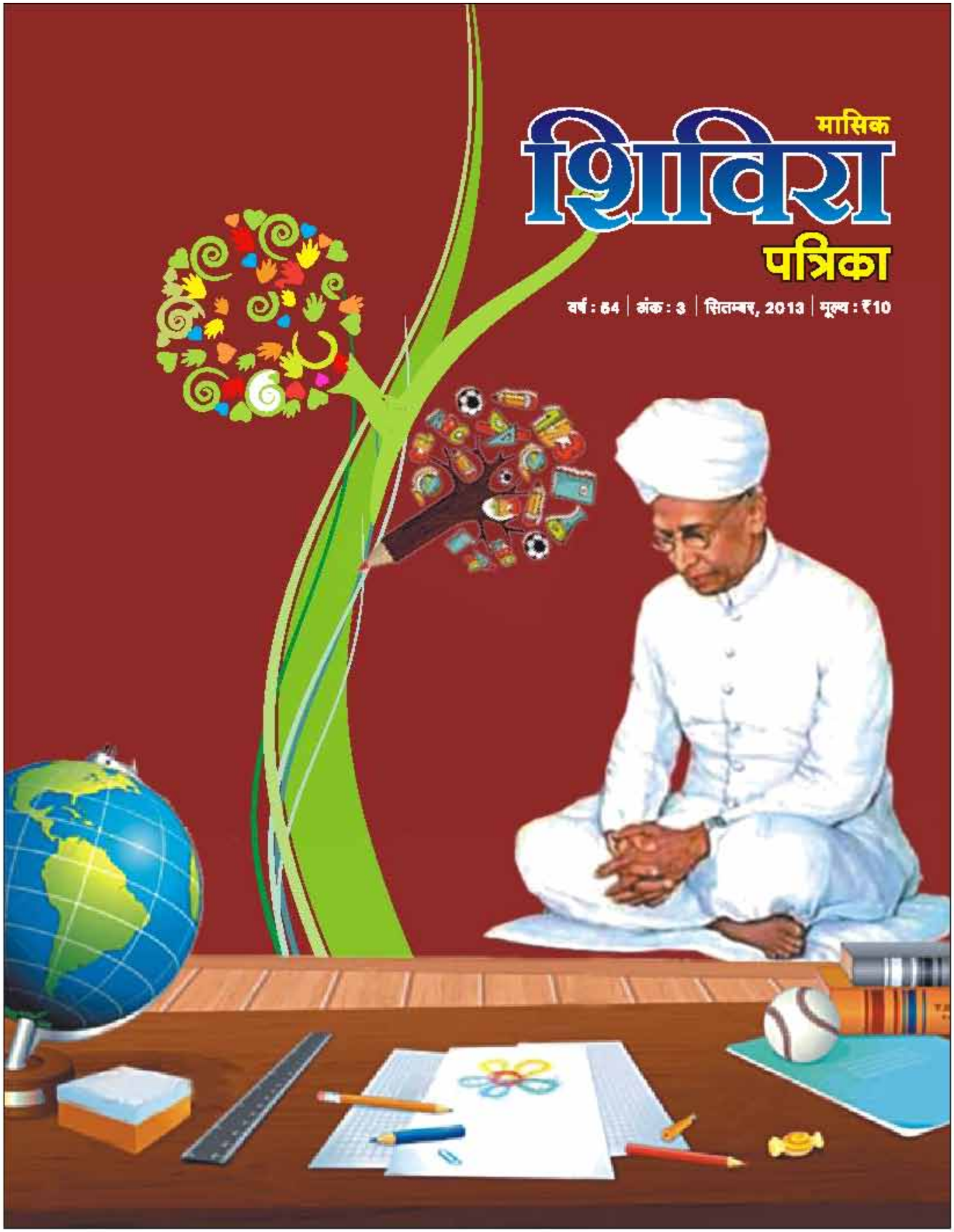

शिविरा, सितम्बर–2013
चित्र समाचार

जयपुर

महामहिम राज्यपाल श्रीमती मार्गरेट आल्वा, माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत एवं माननीय मुख्य सचिव श्री सी.के. मैथ्यू के साथ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सम्मानित हुए माध्य. एवं उच्च.माध्य. परीक्षा 2013 में राज्यस्तरीय वरीयता सूची में स्थान पाने वाले होनहार विद्यार्थी।

जोधपुर

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना के अंतर्गत लैपटॉप वितरण कार्यक्रम में एक बालिका को लैपटॉप प्रदान करते हुए।

जयपुर

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना के अंतर्गत लैपटॉप वितरण कार्यक्रम में एक बालिका को लैपटॉप प्रदान करते हुए।

जोधपुर

माननीय शिक्षा मंत्री श्री वृजकिशोर शर्मा राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना के अंतर्गत लैपटॉप वितरण कार्यक्रम में एक बालिका को लैपटॉप प्रदान करते हुए।

दुर्ग (चित्तौड़गढ़)

लैपटॉप व पीसी टेबलेट वितरण समारोह में विधायक माननीय श्री सुरेन्द्र सिंह बाड़ावत एवं पार्षद श्रीमती रामकन्या मालीवाल छात्र को पीसी टेबलेट प्रदान करते हुए। साथ हैं रा.मा.वि. दुर्ग के प्र.अ. जगदीशचन्द्र कशोरा।

जैतारण (पाली)

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैतारण (पाली) के छात्र को लैपटॉप प्रदान करते हुए।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 3 | भाद्रपद–आश्विन २०७० | सितम्बर, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. बीना प्रधान

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
ज्ञान सिंह
मुकेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंकड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाबोध

- आत्मचिन्तन का दिवस है – शिक्षक दिवस 5

शिक्षक दिवस विशेष

- काम सिद्धान्त एवं गुरु काम 6
  डॉ. के. के. पाठक
- महान शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् 9
  शिवराम सिंह
- डॉ. राधाकृष्णन् की हाजिर जवाबी 10
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- शिक्षक दिवस । आत्मावलोकन दिवस 11
  गोपाल प्रसाद मुद्गल
- जन्मे को सलाम / महेन्द्र सिंह 12
- साक्षरता शिक्षा का स्वाभिमान 13
  सांवलाराम नामा
- अब तो हम इन्सान उगाएँ 14
  डॉ. दाऊदयाल गुप्ता
- सवाल शिक्षकों एवं विद्यालयों की साख का 16
  रामनेरा सोनी
- शिक्षक दिवस । शिविरा परिचर्चा 18
  प्रस्तुति : प्रकाश पण्ड्या
- हिन्दी देश की धड़कन।आबाद है, आगाज है 21
  रामगोपाल राही
- हिन्दी हमारी पहचान है 32
  ललिता चाहर
- अभिभावक विद्यार्थी संबंध 37
  मधु सोनी
- नैतिक शिक्षा और विद्यार्थी 38
  जसपाल कौर
- सुधरें बच्चों का भविष्य 39
  मधुबाला शर्मा
- युवा ही बनाएंगे बहादुर नई दुनियाँ 41
  करण सिंह चौहान
- मूल्यपरक शिक्षा – एक विचार 42
  रमेश चन्द्र कलोरिया

हमारे संस्थान

- उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर 33
  महेन्द्र पाण्डे

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- कल्याण धणी की पावन धरा टोंक 35
  योगेन्द्र सिंह नरूका

श्रद्धांजलि 43–45

- शताब्दी शिक्षक श्री रेवतदान डंडिया की याद में
  ओमप्रकाश सारस्वत
- युगदृष्टा थे डंडिया जी/रामेश्वर प्रसाद शर्मा
- आत्मीयता को नमन/महावीर प्रसाद गर्ग
- अर्पित भाव सुमन/टेकचन्द्र शर्मा
- स्नेह के सौदागर/कल्याणरावण काबरा
- फूल के धनी डंडिया जी/पी.डी. सिंह

संस्मरण

- चिरस्मरणीय चतरसिंह मेहता 45
  शिवदान बानावी

इस माह का गीत

- शिक्षक / ओमप्रकाश सारस्वत 8

लघुकथा

- दोषी कौन / बुद्धिचन्द गोदवाल 10

प्रेरक संस्मरण

- दो मन्दिर / मुरलीधर भारद्वाज 30
- उच्च मनोभाव / यमुना सिंह एकलव्य 31
- पारखी आँखें / विश्वनाथ भाटी 36

पुस्तक समीक्षा 46–47

- स्पर्श : डॉ. दाऊदयाल गुप्ता
  समीक्षक : मेनाराम कटारा 'पंक'
- मिट्टी के पाँव : देवेन्द्र कुमार देव
  समीक्षक : सुरेन्द्र शर्मा
- लोक सूक्ति कोश : माधुरी शास्त्री
  समीक्षक : बजरंग सारस्वत

प्रतिध्वनि

- ज्ञान के प्रवाह की परम्परा और गुरु-शिष्य 50

स्तम्भ

आदेश–परिपत्र–23 विद्यालय प्रसारण–30 इस माह का पंचांग–31
चतुर्दिक समाचार–48 हमारे भामाशाह–49

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261335185

▼ परिचय

हमारे नये प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक

श्री वी. सरवन कुमार

श्री वी. सरवन कुमार ने 13 अगस्त, 2013 को प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म 30 जुलाई 1973 को तमिलनाडु में हुआ। मेकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक श्री वी. सरवन कुमार 2006 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुए। आप धौलपुर एवं बारां में जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, कोटा एवं भरतपुर में मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद्, नगर निगम, अजमेर के मुख्य कार्यकारी तथा आयुक्त रहे हैं। प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के पद पर पदस्थापन से पूर्व आप अतिरिक्त आयुक्त, वाणिज्य कर विभाग के पद पर कार्यरत रहे।

श्री वी. सरवन कुमार स्वाध्यायी एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व के धनी हैं जिसका प्रमाण है आपका इतिहास एवं पब्लिक पॉलिसी विषयों में अभिरुचि होना। आप शिक्षा को प्रगति का द्वार मानते हैं। आपके माता-पिता भी शिक्षक होने के कारण आपको विरासत में ही शैक्षिक संस्कार मिले हैं।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका छात्रवृत्ति विशेषांक में नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी एवं विगत चार वर्षों में स्वीकृत की गई छात्रवृत्ति का विवरण प्रकाशित किया है। शिविरा पत्रिका की पहुँच राज्य की प्रत्येक शिक्षण संस्था एवं प्रत्येक शिक्षक तक होने से उक्त योजना का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होगा, जिससे राज्य के कक्षा-8 के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के योग्य विद्यार्थियों को योजना की पूर्ण जानकारी होकर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त होगा। —संजय सिंह सान्दू
  निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
- छात्रवृत्ति विशेषांक नये कलेवर एवं अधिक पृष्ठों में सुसज्जित होने के साथ-साथ भामाशाह प्रेरक एवं छात्रवृत्ति की अद्यतन सामग्री लेकर पहुँचा। दिशाकल्प में निदेशक द्वारा चाहा गया है कि आदर्श नागरिक की कल्पना को साकार करना हर शिक्षक का नैतिक कर्तव्य है, इसे निभाएं तब सार्थक है शिक्षक पद। निदेशक से सीधी बातचीत स्तम्भ प्रारम्भ करने पर अधिकाधिक कार्मिक लाभान्वित होंगे वहीं आदेश-परिपत्र में छात्रवृत्ति आदेश से सम्पूर्ण पत्रिका छात्रवृत्ति दस्तावेज सदृश बना है। कन्या एवं माँ लेख के साथ पुस्तक समीक्षा पठनीय.. एतदर्थ बधाई।
  —छगनलाल व्यास
  शिक्षा सेवा अधिकारी, खांडप (बाड़मेर)-344043
- शिविरा के छात्रवृत्ति विशेषांक को आद्योपांत एक ही बैठक में पढ़ गया और आपने सच्चे पत्रकार की भांति शिक्षकों को केवल महिमामंडित नहीं किया बल्कि शिक्षा और शिक्षकों के संबंधों में व्याप्त कमियों को भी रेखांकित करने में कतई कोर-कसर नहीं रखी। कई ऐसी जानकारियाँ, जो जानने के अभाव मात्र से उनसे प्राप्त होने वाले लाभों (छात्रवृत्तियों) से सही जरूरतमंद वंचित रह जाता है, जिस पीड़ा को आपने समझ कर विशेषांक के नाम को पूर्णता प्रदान की। इस हेतु सभी लाभार्थी आपको अवश्य हृदय से साधुवाद दिए बिना नहीं रह पायेंगे। शिविरा मर्मस्पर्शी ही नहीं सूचनाओं का सार भी है? इसकी एक घटना से अवगत कराना अपना धर्म समझता हूं-'प्रातःकालीन योग कक्षा लेने प्राकृतिक चिकित्सालय जाता हूँ वहाँ मंच पर शिविरा रह गई। इसके पश्चात् उत्तर प्रदेश से पधारे लोगों का कार्यक्रम था जिन्हें मिली। दूसरे दिन पूछने पर किसे मिली उन्होंने क्षमायाचना करते हुए कहा कि मंच से मैंने इसके मिलने की घोषणा की, परन्तु कोई नहीं आए तो मैंने इसे पढ़ा और रख ली, यह पत्रिका अद्वितीय है।' यह अतिश्योक्ति नहीं वास्तविकता है।
  —वासुदेव दाधीच, निधी सचिव
  जयपुर मेट्रो रेल कॉरपोरेशन, जयपुर
- शिविरा पत्रिका, अगस्त 2013 प्राप्त हुई और इतनी आकर्षक लगी कि इसे पूरा पढ़कर ही दम लिया। सारस्वत जी ने श्रीकृष्ण के गुरु कार्य को अपने लेख में बहुत ही सरल शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए आज के शिक्षक का एक गुरु के रूप में किस प्रकार रूपान्तरण हो सकता है, बताया जो प्रेरणादायक है। सृजन हेतु श्री पवन के. भूत का आनुभाविक लेख अनुकरणीय है। 'सा विद्या या विमुक्तये' की अति सरल व्याख्या श्री टेकचन्द शर्मा ने की है, जो श्लाघनीय है। इस अंक में डॉ. कल्पना शर्मा के विद्यालय प्रबंधन एवं प्रयोगशाला के प्रभावी संचालन विषयों पर अभिव्यक्त विचार समस्त संस्था प्रधानों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी हैं, इस हेतु बधाई। रमजान और ईद के बारे में श्री मोहम्मद इदरीश खान के द्वारा दी गई सारगर्भित जानकारी ज्ञानवर्द्धक रही। अंक को ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी बनाने हेतु साधुवाद एवं बधाई!
  —विष्णु दत्त शर्मा 'विकल'
  प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. सरदार नगर
  कोटा (भीलवाड़ा)
- शिविरा अगस्त, 2013 का अंक मिला। मुखावरण आकर्षक था। निदेशक महोदय का स्काउट गणवेश में छपा चित्र देखकर स्काउट के प्रति बड़े अधिकारी का लगाव व नियमों को पालन करने की प्रेरणा विद्यार्थियों और शिक्षक समाज को मिलेगी। सम्पादक द्वारा प्रतिध्वनि के माध्यम से शिक्षकों को दिया सन्देश भी पठनीय लगा।
  —सरदार सिंह चारण
  व्याख्याता, डाइट, जालोर

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प

आत्मचिन्तन का दिवस है - शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर प्रदेश के कोने-कोने में शिक्षा का आलोक फैला रहे शिक्षक भाई-बहिनों का अभिनन्दन करते हुए मुझे आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

आज का दिन भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है। वे भारतीय दर्शन के महान अध्येता, उद्भट विद्वान, उत्कृष्ट चिन्तक एवं कुशल राजनयिक थे। मगर इन सबसे पहले वे स्वयं को शिक्षक मानते थे और अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपना जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाए जाने के लिए समर्पित किया। डॉ. राधाकृष्णन को सम्पूर्ण शिक्षा जगत की ओर से विनम्र नमन प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्वानुभूति हो रही है। हमें उनके जीवन व कर्म से प्रेरणा लेकर आदर्श शिक्षक बनने का प्रयास करना चाहिए।

शिक्षक दिवस शिक्षकों के लिए आत्मचिन्तन का दिन है। शिक्षक होना कोई कम गौरव की बात नहीं होती। आखिर व्यक्ति और व्यक्ति के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण का काम उन्हीं के हवाले होता है। शिक्षकों को अपनी इस विशिष्ट हैसियत को समझ कर अनुकरणीय कार्य करने चाहिए।

इस माह में विश्व साक्षरता दिवस एवं हिन्दी दिवस भी हम मनाएंगे। साक्षरता विकास की कुंजी है। अतः सम्पूर्ण साक्षरता का महती लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमें निष्ठापूर्वक कार्य करना है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। उसके विकास के लिए हमें संकल्पबद्ध प्रयास करना चाहिए।

पिछले महीने से राज्य पर इन्द्रदेव मेहरबान है। प्रायः सभी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा हुई है। सघन वृक्षारोपण कर हमें धरती माता की हरीतिमा में वृद्धि करनी है। इस काम को विद्यार्थियों, विशेषकर एन.एस.एस. स्वयंसेवक, एन.सी.सी. कैडेट तथा बालचरों से करवाने के लिए विद्यालय स्तर पर समुचित कार्य योजना बनाई जानी चाहिए। इसका नेतृत्व भी शिक्षक साथियों को ही करना है। याद रखिए, उगता हुआ वृक्ष विकसित राष्ट्र का प्रतीक होता है। हमें राष्ट्र की खुशहाली के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।

छात्र-छात्राओं के लिए खेलकूद प्रतियोगिताओं का आगाज भी हो चुका है। प्रभावी कक्षागत शिक्षण के समान्तर पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियों एवं खेलकूद का बालक के सर्वतोमुखी विकास की दृष्टि से अहम् स्थान है। अतः खेलकूद प्रतियोगिताओं का कुशलतापूर्वक आयोजन करने के लिए मण्डल व जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों से लेकर विद्यालय स्तर तक संकल्पपूर्वक कार्य किया जाना चाहिए।

एक बार पुनः शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. वीना प्रधान)

> "शिक्षक दिवस शिक्षकों के लिए आत्मचिन्तन का दिन है। शिक्षक होना कोई कम गौरव की बात नहीं होती। आखिर व्यक्ति और व्यक्ति के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण का काम उन्हीं के हवाले होता है। शिक्षकों को अपनी इस विशिष्ट हैसियत को समझ कर अनुकरणीय कार्य करने चाहिए।"

शिक्षक दिवस विशेष

ऋण सिद्धान्त एवं गुरु ऋण

□ डॉ. के. के. पाठक

डॉ. के.के. पाठक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अत्यन्त ऊर्जस्वी व गतिमान युवा अधिकारी हैं। आप उच्च कोटि के चिन्तक, लेखक एवं उद्भट विद्वान हैं जिनमें धर्म की विज्ञान यात्रा (दो भाग), प्रेम : एक वैज्ञानिक अध्ययन, नकारात्मक सोच : महानता का सूत्र, गाँधीगिरी का मैनेजमेंट, गाँधीवादी और मार्क्सवाद, भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ, मृत्युपथ : अमृत की तलाश आदि प्रमुख हैं। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में गाँधी जी के सहज ही में दर्शन होते हैं।

अपनी प्रशासनिक कार्य कुशलता के लिए विख्यात डॉ. पाठक माध्यमिक शिक्षा निदेशक एवं शिविरा पत्रिका के प्रधान संपादक रहे हैं।

वर्तमान में आप राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर में सचिव पद पर कार्यरत हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के आधार स्तम्भों की गणना प्रायः वर्ण, आश्रम तथा संस्कार के तीन आयामों में सिमट कर रह जाती है और कभी कभी पुरुषार्थ के आदर्श को भी व्यवस्था में ही परिगणित कर इनकी संख्या चार कर ली जाती है, किन्तु एक अवधारणा के रूप में तीन ऋणों (आर्ष, देव तथा पितृ ऋण) का सिद्धान्त न केवल महत्वपूर्ण रूप से विद्यमान रहा है, अपितु उक्त चारों से पर्याप्त सीमा तक अन्तर्सम्बद्ध भी रहा है।

प्रत्येक संस्कृति ने अपने अपने तरह से मानव को लौकिक पारलौकिक तत्वों का आभारी माना है और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु कुछ नैतिक व कर्मकाण्डीय विधान भी किए हैं। हमारे अनेक कर्तव्यों का नैतिक आधार यही होता है। हमारे धार्मिक कृत्य भी जब इसी प्रकार के कर्तव्यों द्वारा निर्धारित होते हैं, तब उनमें एक प्रकार की अन्तर्निहित बाध्यता आ जाती है। ऋणभार होने का निहितार्थ ही यह है कि व्यक्ति अन्ततः उससे उऋण होने का यत्न करें।

मानव ज्ञाताज्ञात, प्रत्यक्षा प्रत्यक्ष, घोषिताघोषित रूप को अपने जीवन में अनेक व्यक्तियों, घटनाओं, कर्मों पर आधारित तथा उनसे निर्धारित होता रहा है। ऐसे में तो वह समस्त विश्व अथवा ब्रह्माण्ड का ऋणी है। वेद तो मानवमात्र को ही ऋण कहते हैं–'ऋणं ह वै जायमानः।' ऐसे में जब मानव के ऋणों का चयन करना पड़े तो प्रश्न उठता है कि इस चयन के आधार क्या है और वह वर्गीकरण किस स्तर पर किया गया है।

अरस्तू ने मानव की परिभाषा 'विवेकशील प्राणी' के रूप में दी थी। यदि इसे स्वीकार करें, तो मनुष्य स्वतः इन दो वैशिष्ट्यों के लिए प्रत्यक्षतः तीन का ऋणी दिखने लगते हैं–

प्रथम–विवेकशील होने के लिए गुरु का

द्वितीय–प्राणी होने के लिए प्रकृति का

तृतीय–इस प्राणी के रूप में जन्म लेने के लिए माता–पिता का।

भारतीय संस्कृति के विचारकों ने जब कर्तव्य निर्वहन हेतु सामाजिक व नैतिक व्यवस्था का निर्माण किया होगा, तब उनके मन में सम्भवतः ऐसा ही कुछ तर्क विद्यमान रहा होगा। उन्होंने प्रथम को आर्ष ऋण, द्वितीय को देव ऋण तथा तृतीय को पितृ ऋण का नाम दिया। यह वेद से वेदोत्तर काल तक स्वीकृत सिद्धान्त है, समय के साथ जनमानस ने देव को हटा कर उसके स्थान पर माता को रख दिया तथा क्रम में प्रथम रखे जाने वाले आर्ष को गुरु रूप में अब अन्तिम स्थान दिया गया। सम्भवतः यह परिवर्तन तैत्तिरीय उपनिषद् के उस प्रसिद्ध उपदेश के कारण हुआ, जिसमें माता, पिता व आचार्य को देव कहा गया था।

यहाँ परम्परा परिवर्तन पर चर्चा करने की बजाय उसके प्रारम्भिक स्वरूप पर चर्चा अधिक उचित होगी। एक और रोचक तथ्य है–ऋण सिद्धान्त स्वयं में जितना विशिष्ट है, उससे अधिक विशिष्ट है–अनृण सिद्धान्त अर्थात् उन ऋणों से उऋण होने का सिद्धान्त। विशद विवरण से पूर्व इसे संक्षेप में निम्न सारणी में अवलोकित कर सकते हैं–

क्रम	ऋण	स्वरूप/कारण	अनृण की विधि
प्रथम	आर्ष	ज्ञान प्राप्ति	ज्ञानदान करना
द्वितीय	देव	जीवन प्राप्ति	यज्ञ–सम्पादन करना
तृतीय	पितृ	जन्म ग्रहण	संतान को जन्म देना

इसी वर्गीकरण में कुछ आपत्तिजनक भी प्रतीत हो सकता है, जैसे–

–आर्ष ऋण को गुरु ऋण ही क्यों मान लिया गया? क्या प्रत्येक ऋषि गुरु था या प्रत्येक गुरु ऋषि तुल्य है?

–जीवन के लिए देव ऋण मानने का क्या औचित्य है। क्या स्वयं प्रकृति का ही प्रत्यक्ष ऋण नहीं माना जा सकता?

–पितृ ऋण में मातृ ऋण की गणना क्यों नहीं है। यदि पितृ ऋण में ही वह समाहित है, तब भी क्या यह पुरुष–प्रभुत्ववादी मानसिकता का दुराग्रह नहीं है?

इन सन्देहों का निराकरण आगे यद्यपि विशद रूप में किया जाएगा, किन्तु यहां संक्षेप में यह कह देना उचित है कि भारतीय नीतिशास्त्र ऋषि और गुरु को, देव और प्रकृति को, पिता और माता को कम से कम इस मामले में प्रायः एकरूप मानता है और जहाँ कुछ अलगाव है भी, वहाँ दूसरे का निषेध न होकर समानान्तर रूप में स्वीकृति ही है।

अब हम प्रथम ऋण अर्थात् आर्ष ऋण को लेते है, जो जनसामान्य में गुरु ऋण के रूप में प्रसिद्ध है। 'आर्ष' शब्द ऋषि शब्द में ही 'अण्' प्रत्यय लग कर बनता है, अतः इसका अर्थ 'ऋषि ऋण' ही है। जिज्ञासा मानव की सहज प्रवृत्ति है और ज्ञान उसकी सर्वोच्च उपलब्धि। ज्ञान प्राप्ति आश्रम व्यवस्था के तीन चरणों-ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास का प्रमुख लक्ष्य होता था। इनमें ब्रह्मचर्य आश्रम में औपचारिक व आचार परक ज्ञान प्राप्त होता था, शेष दोनों में आत्मज्ञान पर बल था। चूंकि ऋषि ज्ञान के दोनों रूपों में सहायक होता था, इसलिए 'शिक्षक' और 'सिद्ध' के दो अलग-अलग आयामों को वह 'गुरु' रूप में एक साथ चरितार्थ करता था। ऋषि का एक गुण और था। वह व्यक्ति को यदि प्रत्यक्षतः शिक्षा नहीं देता, तो भी न केवल अपने चिन्तन मनन, यज्ञ उपदेशादि से समस्त मानवता की ज्ञान सम्पदा बढ़ाता, बल्कि राजपुत्रों को शिक्षा देकर तदनुरूप समाज को उपकृत करता। इस प्रकार ऋषि व्यष्टि स्तर पर जब कभी व्यक्ति को ऋणी न भी किया हुआ हो, तब भी समष्टि स्तर पर राज्य और समाज-दोनों को ऋणी कर चुका होता था।

आर्ष ऋण व्यवहार ज्ञान, आचार ज्ञान तथा आत्मज्ञान-इन तीनों रूपों में परिलक्षित होता तो रहा, किन्तु इसका सामान्य आशय ब्रह्मचर्य आश्रम में दिये जाने वाले प्रथम दो ज्ञानों से ही होता था। ब्रह्मचर्य आश्रम के विधानों का पूर्व अध्याय में विशद वर्णन किया जा चुका है। वस्तुतः यह आश्रम प्रकारान्तर से गुरुकुल ही होता, जिसमें शिक्षा देने का कार्य कोई ज्ञानी ऋषि ही करते। कई बार गुरुकुल में अनेक विषयों के अनेक गुरु भी होते। गुरुकुल का गुरु मात्र शिक्षक (शिक्षा देने वाला) न होकर आचार्य (आचार सिखाने वाला) भी होता था, इसी कारण उसे 'गुरु' (गौरवपूर्ण) कहा गया। छात्र (शिक्षार्थी) भी 'शिष्य' इसलिए कहा जाता था, क्योंकि वह शासन या अनुशासन के योग्य माना जाता था।

गुरु एवं शिष्य के मध्य के सम्बन्ध को एक विशिष्ट कोटि में रख कर देखा जाता था। पाणिनि ने कहा है कि छत्र की भाँति दोनों एक-दूसरे की रक्षा करते हैं। गुरु जब शिष्य का उपनयन संस्कार करता, तब वह 'द्विज' (दूसरे जन्म वाला) कहा जाता था और इस अवस्था में आचार्य उसका पिता तथा गायत्री उसकी माता मानी जाती थी। अथर्ववेद में उपनयन संस्कार को ही गुरु के गर्भ से शिष्य के जन्म का रूप कहा गया है।

गुरु की महिमा से तो ग्रन्थ भरे पड़े हैं। ऋग्वैदिक काल में उसे माता पिता के समकक्ष माना गया था, जो उत्तरवैदिक काल में उनसे बढ़ कर हो गया। क्रमशः यह पद देव और ईश्वरत्व प्राप्त करते हुए उससे भी ऊपर स्थापित हो गया।

अनेक विचारकों के अवतार गुरुत्व के शिखर मण्डन का काल वस्तुतः उसके पतन का भी काल है। गुरु आत्मश्लाघा में आत्मस्तुति करने लगे और स्वयं विवेकांध रह कर अंध शिष्यों की शृंखला तैयार करने लगे। ज्ञान के बढ़ते स्रोतों, साधनों और आयामों में पुरातन गुरु एक वेतनजीवी साधारण शिक्षक बन कर रह गया और संतत्व के नाम पर प्रायः अज्ञानी पाखण्डियों ने गुरुत्व का बीड़ा उठा लिया। न शिक्षक गौरवपूर्ण रहा, न यह सन्त। एक शिक्षक जिस चरित्र और सम्बन्ध के आधार पर गुरु बनता है वह तो न जाने कब से खोता जा रहा था।

वस्तुतः गुरु शब्द स्वयं में अनेकार्थक होकर अपनी गरिमा खो बैठा। कालान्तर में जब शैक्षिक गुरुओं के स्थान पर धार्मिक गुरु महत्वपूर्ण होने लगे, तब आत्मज्ञान की आड़ में अज्ञान तथा अध्यात्म की आड़ में पाखण्ड का भी मार्ग प्रशस्त हो गया। इस परम्परा में सन्त तो गिने-चुने होते, महन्त अनगिनत हो जाते। शिष्य भी ज्ञान या शिक्षा लेने की बजाय मात्र गुरुमंत्र लेकर 'चेला' के चोले में ढलने को अभिशप्त हो गया। समस्या यह है कि जब हम किसी को 'शिक्षक' या 'आचार्य' कहते हैं, तब तो उनकी कुछ वस्तुनिष्ठ योग्यता भी निर्धारित करते हैं, किन्तु 'गुरु' कहते ही ऐसी किसी योग्यता का वस्तुनिष्ठ रूप ही नहीं रह जाता और हर कोई सरलतया इसका दावेदार बन जाता है।

परन्तु यहाँ हम अतीत के गुरुओं की बात कर रहे हैं। वे ऋषि थे, परन्तु उनमें भी यदा-कदा वही पतन या पूर्वाग्रह दिख जाता है। हारिद्रुमत गौतम ने अज्ञातकुल गोत्र सत्यकाम को शिष्य बनाया, तो गाय चराने के लिए। परशुराम ने सूत पुत्र कर्ण को शिक्षा दी, तो अनजाने में और ज्ञात होते ही विद्या का एक भाग छीन लिया। द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अँगूठा लेकर गुरुओं को सदा के लिए कलंकित कर दिया। वशिष्ठ ने रघुवंश को ऐसी दीक्षा दी कि राम के रामराज्य पर पुरातनपंथी राज्य का तमगा लग गया। ऋषि प्रायः आर्ष ऋण की गौरवगाथा गाते हुए राज कन्याओं से विवाह के लिए लालायित रहते। रैक्व ऋषि ने ज्ञानश्रुति राजा को ब्रह्मज्ञान देना तब स्वीकार किया, जब उन्होंने अपनी कन्या उनसे विवाह दी। अगस्त्य ने भी इसी प्रकार राजपुत्री लोपामुद्रा को प्राप्त किया। वृद्ध च्यवन ऋषि के साथ सैनिक पुत्रों की छेड़खानी को राजपुत्री सुकन्या के कन्यादान से पूरा करना पड़ा। ऋष्यशृंग ऋषि ने दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ तब कराना स्वीकार किया, जब उन्होंने अपनी भतीजी शान्ता उन्हें प्रदान कर दी। वरतन्तु ने कौत्स से चौदह करोड़ स्वर्णमुद्राएँ गुरु दक्षिण में माँग लीं और इसका प्रभाव यह हुआ कि कौत्स-'निरर्थकाः वै वेदाः' का क्रान्तिकारी उद्घोष करने वाले प्रथम व्यक्ति बने। आरुणि ने स्वयं वर्षा जल रोकने हेतु स्वयं खेत की मेड़ पर लेटा रह कर गुरुभक्ति की गाथा लिखी, किन्तु उनका ही पुत्र श्वेतकेतु गुरुकुल से उद्दण्ड होकर लौटा। विदेह जनक से याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मज्ञान के नाम पर सदैव लोभ और लाभ का सम्बन्ध रखा।

इन विवादित दृष्टान्तों के बावजूद हमें आर्ष ऋण की महत्ता स्वीकार करनी पड़ेगी। वस्तुतः ज्ञान स्वयं में इतना महान् है कि वह जिस स्रोत से आता दिखता है, वह स्रोत ही महान् दिखने लगता है। इतिहास में गुरुसेवा और गुरुज्ञान का अनुपात देखने का शायद प्रयास नहीं किया गया, अन्यथा समिधा (ईंधन) लाने, भिक्षा जुटाने, गो-चारण करने, अन्यान्य सेवा सुश्रुषा करने में शिष्य का इतना वक्त जाया हो जाता होगा कि एक वेद के अध्ययन में ही नौ साल लग जाते थे और शायद ही कोई व्यक्ति पूर्ण ब्रह्मचर्य आश्रम अवधि में चतुर्वेदी होकर लौटता था। अधिकांश तो

'ज्ञाता' की बजाय 'अध्येता' और 'पाठक' (मात्र पठन करने वाला) ही बन कर रह जाते होंगे।

लेकिन जैसे ही हम आर्ष ऋण से उऋण होने की विधि पर आते हैं, एक सुखद विस्मय होता है। तब न तो गुरुदीक्षा के बदले गुरु दक्षिणा देने की बात की जाती है, न ही ज्ञानदान के बदले कन्यादान की। इससे मुक्ति के लिए व्यक्ति से मात्र यह अपेक्षा की जाती है कि वह भी ज्ञान बाँट दे। कहीं कहीं स्वयं अध्ययन को ही पर्याप्त मान लिया गया, अर्थात् किसी ने पढ़ाया और आपने पढ़ लिया–बस आपके व्यक्तित्व निर्माण में ही वह सन्तुष्ट हो गया। कुछ एक स्थलों पर ब्रह्मज्ञान अथवा ब्रह्मचर्य को भी आर्ष ऋण का उऋणकर्ता मान लिया गया है।

यहीं आकर ऋण व्यवस्था की विशालता परिलक्षित होती है। बिना पारितोषिक के गुरु को अनुतोष मिल जाने का विधान शायद वैदिक परम्परा ही कर सकती थी। उस काल के यज्ञवक्ता याज्ञवल्क्य भले ही ब्रह्मज्ञानी होने के बावजूद 'आत्मनस्तु कामाय सर्वः प्रियं भवतु' का उद्घोष करते रहे हों, किन्तु उन्हें भी मानना पड़ा था कि शिष्य के तुष्ट हुए बिना गुरु द्वारा कुछ लिया जाना अनुचित है। गुरु एवं विप्र की बात को बिना विचारे शुभ मानने का समर्थन करने वाले तुलसीदास जैसे लोग भी कह उठते हैं–

हरई सिस्य धन सोक न हरई।
सो गुरु घोर नरक महुँ परई।।

सच कहें, तो गुरुद्रोह का महापाप मानने वाली भारतीय परम्परा अपरिहार्य परिस्थितियों में उन्हें भी निवन्त्रित करने का विकल्प प्रदान करती है। संस्कृति के आधार माने जाने वाले दो उपजीव्य ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। रामायण में कहा गया है कि गुरु भी यदि कर्तव्याकर्तव्य से अनभिज्ञ, संलिप्त तथा पथ भ्रष्ट हो जाएँ, तो उन्हें शासित करना न्यायोचित है। महाभारत इसकी अनेक स्थलों पर पुष्टि करता है। समयानुसार तो वह गुरुहत्या तक को क्षात्र धर्म स्वीकार करता है। शास्त्र साक्षी हैं कि दो भिन्न पक्षों की टकराहट में गुरु शिष्य भी भिड़ते रहे हैं, जिनकी आहट भीष्म–परशुराम या अर्जुन–द्रोणाचार्य के युद्ध में स्पष्ट दिखाई देती है।

गुरु और शिष्य एक ही परम्परा के दो आयाम हैं। गुरु अज्ञान तिमिरांध के लिए ज्ञानांजन भी रहा है, तो विवेकांध शिष्यों को अंधकूप में डालने वाला अंध मार्गदर्शक भी। आज जब हम शिक्षकों की बजाय सन्तों को गुरु मानने लगे हैं, तब उक्त दोनों ध्रुवों की सम्भावनाएँ बढ़ चुकी है। गुरु का गुरुत्व अधिकांशतः विभक्त या विलुप्त हो चुका है और यह उसकी असफलता नहीं है। दत्तात्रेय से जब उनके गुरु के विषय में पूछा गया, तब उन्होंने जो चौबीस गुरु बताए थे, वे पंचतत्व, पशु–पक्षी, कीट पतंगादि ही थे अर्थात् समस्त प्रकृति ही उनके लिए गुरु बन गई थी। ऐसा व्यक्ति वस्तुतः स्वयं ही गुरु बन जाता है, जहाँ स्वतः ही बुद्ध का आत्म दीपोभव का उद्घोष चरितार्थ होने लगता है। सम्भवतः इसी कारण उपनिषद भी जब 'आचार्य देवो भव' कहते हैं, तब यह कहना नहीं भूलते कि जो उनका सुचरित्र हो, वही उपासना योग्य है, अन्य नहीं।

–सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

इस माह का गीत

शिक्षक

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

संकल्पों के व्रत के आगे क्या काम कोई रुकता है,
शिक्षक चाहे तो मैया संसार बदल सकता है।

विश्वामित्र से गुरु जिन्होंने ऐसा अद्भुत पाठ पढ़ाया,
राम लखन ने आगे बढ़कर गुरुजन का सच्चा मान बढ़ाया,
गुरु वशिष्ठ, गुरु द्रोणाचार्य, गुरुजन की परम्परा भारी,
गुरु का गुरुजन जब भी जागा दुनिया की हर विपदा हारी,
उस समाज का हर क्षण उज्ज्वल, शिक्षक जहां जगता है,
शिक्षक चाहे तो मैया संसार बदल सकता है।

शिक्षक में शिक्षा की ज्योति अविरल जलती है दिन–रात,
ज्योतिपुंज आलोकित कर अवगुण सब कर दें यहीं समाप्त,
शिक्षक का सम्मान असल में है सम्मान सभी का,
शिक्षक के तप पर टिके सभी, अज्ञान–अँधेरा मिटा कभी का,
संकल्पव्रत का वह व्रती जो पीछे कभी नहीं हटता है,
शिक्षक चाहे तो मैया संसार बदल सकता है।

विज्ञान–प्रगति की नूतन बातें हर दिन हम सुनते हैं,
और प्रगति मिल गई अजूबी की बातें गुनते हैं,
शिक्षक ही तो है वो प्राणी जो इनकी जड़ में बैठा है,
जहाँ श्रद्धा की हैं आँखें, बस उसे उन्होंने ही देखा है,
लाख मुसीबत भी जो आए शिक्षक कभी नहीं झुकता है,
शिक्षक चाहे तो मैया संसार बदल सकता है।

('जीवन अभी शेष' कृति से साभार)

शिक्षक दिवस

महान शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

❑ शिवनाम सिंह

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दार्शनिक, महान विचारक, राजनीतिज्ञ एवं उच्च कोटि के शिक्षाविद् थे। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का जन्म 5 सितम्बर 1888 को मद्रास से 65 कि.मी. दूर तिरुतल्ली (चित्तूर) नामक गांव में हुआ था। उनके पूर्वज पहले सर्वपल्ली गांव में रहते थे। कुल की परम्परा के अनुसार ही इनके नाम के आगे भी सर्वपल्ली लिखा जाता है। इनके माता पिता बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। पूजापाठ में विश्वास रखते थे। बचपन से ही डॉ. राधाकृष्णन् कुशाग्र बुद्धि के थे। पढ़ाई में प्रत्येक कक्षा में अव्वल आते थे। 1904 में इन्टरमिडियेट प्रथम श्रेणी से पास कर क्रिश्चियन कॉलेज मद्रास में बीए में दाखिला लिया। डॉ. राधाकृष्णन् के तेज मस्तिष्क के कारण प्राध्यापक को उनसे बड़ी आशाएं थी। कॉलेज में उन्होंने दर्शन पढ़ा और इसी बीच उपनिषद् तथा भागवत गीता का भी अध्ययन किया। इसी समय उनके मन में हिन्दू धर्म के प्रति प्यार गहरा गया। उन्होंने सीखा कि हिन्दू धर्म की मूल कुंजी है सहनशीलता। उन्होंने पूर्व तथा पश्चिम के धर्म दर्शन पर गहरा अध्ययन किया। वे एम.ए. दर्शनशास्त्र में मेरिट में पास हुए।

दर्शन में दक्षता

डॉ. राधाकृष्णन् में दर्शन की दक्षता ऐसी उभरती थी जैसे किसी झरने से शब्द फूट रहा हो। एम.ए. दर्शन शास्त्र में करने के पश्चात् 1909 में प्रेसीडेन्सी कॉलेज मद्रास में दर्शन शास्त्र के व्याख्याता बन गये। कुछ वर्षों पश्चात मैसूर विश्वविद्यालय में अध्यापन करवाते रहे। 1921 से 1931 तक आप कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र पढ़ाते रहे। कलकत्ता में स्वामी विवेकानन्द के विचारों तथा भाषणों से बहुत प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त टैगोर, अरविन्द, गोखले, तिलक, रामतीर्थ तथा महात्मा गांधी के धार्मिक ग्रन्थों ने इनको बहुत प्रभावित किया। आपने वेदान्त का अध्ययन भी किया। 1937 में आप आन्ध्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त हुए। इस बीच आप ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राच्य दर्शन के अध्यापक के रूप में सेवा देते रहे और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुए। 1939 से 1948 तक आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। 1946 से 1950 तक राष्ट्र संगठन की यूनेस्को समिति में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता रहे। 1953 से 1963 तक आप दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1948 में भारत सरकार ने आपको विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष बनाया। डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षा के सुधार हेतु प्राथमिक शिक्षा से विश्वविद्यालय स्तर तक सुधार हेतु अनेक महत्वपूर्ण बिन्दु रिपोर्ट में प्रस्तुत किये।

1949 से 1952 तक डॉ. राधाकृष्णन् रूस में भारतीय राजदूत की हैसियत से नियुक्त रहे। डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश-विदेश में उनके दिये गये भाषणों पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें मशहूर हैं 'हार्ट ऑफ हिन्दुस्तान', 'दी हिन्दी व्यू आफ लाइफ', 'भारतीय संस्कृति और धर्म', ईस्ट एण्ड वेस्ट इन रिलिजन, रिकवरी ऑफ फेथ, भगवतगीता, संस्कृत धर्म और समाज उनकी बहुचर्चित पुस्तक हैं।

डॉ. राधाकृष्णन् का देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से 1954 में नवाजा गया। इतने बड़े सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी वे मूलतः शिक्षक ही बने रहे और अपने जन्म दिन को शिक्षक दिवस के रूप में देश के शिक्षकों को समर्पित कर दिया।

डॉ. राधाकृष्णन् का व्यक्तित्व महान दार्शनिक के रूप में था। उनको मानववादी दार्शनिक, चिंतक माना जाता है। वे भारतीय संस्कृति के उपासक थे। सच्चे अर्थों में वे अच्छे शिक्षक और शिक्षाविद् थे। शिक्षक होने पर उनको गर्व था।

1952 से 1962 तक वे भारत के उपराष्ट्रपति नियुक्त हुए तत्पश्चात 3 मई 1962 को उन्हें भारत वर्ष का द्वितीय राष्ट्रपति बनाया गया। डॉ. राधाकृष्णन समस्त विश्व को शिक्षालय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का उपयोग सम्भव है। शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन् का मूल्यवान योगदान रहा है। वे एक जाने-माने विद्वान शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनीतिज्ञ, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे। वे अपने जीवन में उच्च पद पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। डॉ. राधाकृष्णन ने आत्मभूति को ही धर्म माना। वे कहा करते थे कि हम विद्यालयों को आध्यात्मिक शिक्षा से वंचित कर दें तो हम अपनी ऐतिहासिक विचारधारा से वंचित हो जायेंगे। हमारा काम केवल शिक्षा देना ही नहीं है बल्कि शक्ति और ओज को छात्रों तक पहुंचाना है। हमें तो मानव हृदय को परिष्कृत और सुसंस्कारित करना है। छात्रों के मस्तिष्क में मूल्यों का बीजारोपण एवं विकास किया जाना है। नैतिक और चारित्रिक मूल्यों की शिक्षा प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक होनी चाहिए। इन मूल्यों का शिक्षण करना ही पर्याप्त नहीं होगा इसके लिए विद्यालय के वातावरण को इस प्रकार बनाना होगा कि विद्यार्थियों में मूल्यों का संचरण होकर जीवन की गहराई में उतर सके।

डॉ. राधाकृष्णन् अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्यवस्था को आनन्ददायी अभिव्यक्ति और हँसाने और गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया करते थे। दर्शन जैसे गम्भीर विषय को सरल और रोचक बना दिया करते थे। डॉ. राधाकृष्णन् ने सत्य की खोज का मार्ग बतलाया। उनके अनुसार शिक्षा जीवकोपार्जन का केवल साधन मात्र नहीं, वह विचारों का भण्डार है। डॉ. राधाकृष्णन् को भारतीय और पाश्चात्य दर्शन पर व्याख्यान हेतु अमेरिका, इंग्लैण्ड, चीन, रूस तथा अन्य देशों

में समय-समय पर आमन्त्रित किया जाता था। सत्य, साधना, निष्ठा, ओजस, शक्ति, तेज, आराधना के प्रतीक डॉ. राधाकृष्णन् सच्चे भारतीय थे जो भारतीयता की रक्षा के लिए हिन्दू धर्म आवश्यक मानते थे। डॉ. राधाकृष्णन् कहा करते थे जो व्यक्ति सच्चे अर्थों में सुसंस्कृत व्यक्ति है उसके सामने एक ही उद्देश्य होता है वह मनोयोगपूर्वक अपने उद्देश्य के प्रति निष्ठावान होता है।

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। किसी भी राष्ट्र का स्तर उसकी जनता से आका जाता है, जनता का स्तर वहां की शिक्षा प्रणाली और शिक्षक के स्तर को नहीं सुधार सकती है। शिक्षकीय सम्पर्क के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में तेजी से बदल रहे मूल्यों के बीच बुद्धिजीवी शिक्षक ऐसा प्रार्थी जो माता-पिता और आश्रितों का भरण-पोषण करते हुए संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली की कड़ी स्थिति रखे हुए है। वह एक समझदार व्यक्ति है इसलिए सहनशील और धैर्यवान भी है।

शिक्षक आज समाज और राष्ट्र के कठिनतम उत्तरदायित्व को वहन कर रहा है। इसके बदले उसको क्या मिल रहा है। समाज की अवहेलना, प्रशासन वर्ग का तिरस्कार, अमीर वर्ग का अनादर, राजनीतिज्ञों का कोपभाजन। शिक्षक ने ही कलक्टर, पुलिस अधीक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, वकील, व्यापारी सभी के मस्तिष्क में नये-नये संस्कार डालकर सद्गुणों का संचार किया है। जो उनके भावी व्यक्तित्व की सुदृढ़ इमारत को खड़ा कर सके। इसे दुर्भाग्य कहें कि अनेक पदों पर पहुंच कर आज महान इंसान शिक्षा की अवहेलना और तिरस्कार करता है शिक्षक व्यक्ति को विनयशील बनाती है। विनयशीलता का गुण डॉ. राधाकृष्णन् के व्यक्तित्व का पर्याय कहा जा सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक दिवस पर समाज के व्यक्ति मिलकर सामाजिक रूप से शिक्षकों का सम्मान करें, उनकी सेवाओं का आभार व्यक्त कर कबीर के दोहे अनुसार-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

कबीरदासजी द्वारा रचित दोहे को चरितार्थ कर हम भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्मदिन से यह प्रेरणा लेकर शिक्षकों का सम्मान करें एवं राष्ट्र को नई दिशा एवं गति प्रदान करें।

114, अमरसिहपुरा, बीकानेर-334001

दोषी कौन

❒ वृद्धिचन्द गोठवाल

अर्द्ध विश्राम का समय। शारीरिक शिक्षक विद्यालय प्रांगण में घूमते हुए शौचालय के पीछे चले गये। देखते हैं कि कक्षा 12 के तीन-चार छात्र ताश खेल रहे थे एवं पैसों का लेन-देन भी कर रहे थे। बात समझ में आई कि ये जुआ खेल रहे थे। उन्होंने छात्रों को पकड़ कर कक्षाध्यापक जी को सौंप दिया।

कक्षाध्यापक ने छात्रों के थप्पड़ मारे और पूछा-बताओ ताश कौन लाया? सही-सही बताओ, नहीं तो विद्यालय से निकलवा दूँगा। साथ ही उन्हें पीटते हुए प्रधानाचार्य जी के पास ले गए।

प्रधानाचार्य जी ने छात्रों से पूछा-बोलो, तुमने यह खोटा काम कहाँ से और कब से सीखा? एक छात्र सुबकते हुए कक्षा अध्यापक की तरफ उँगली करते हुए बोला-''गुरुजी तो कैंटीन वाले कमरे में रोज खेलते हैं।'' इस वाक्य ने घटनाक्रम को तुरन्त की बदल दिया। प्रधानाचार्य ने छात्रों को जाने का संकेत करते हुए उनके कक्षाध्यापक की ओर देखा। कक्षाध्यापक कुछ कह नहीं पाए। उनका मस्तक अपने-आप ही झुक गया। समझना होगा आदर्श कहाँ है? और दोषी कौन?

-गौतम आश्रम के पास, कपासन
मो. 9414732090

डॉ. राधाकृष्णन् की हाजिर जवाबी

❒ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

पत्रकार को सीख

डॉ. राधाकृष्णन् के व्यक्तित्व में जहां गंभीरता थी, वहाँ उनका स्वभाव विनोदप्रिय था।

एक बार की बात है, वे इंग्लैण्ड की यात्रा पर थे। विदेशों की विकासशील योजनाओं को वे अक्सर अपनी डायरी में नोट कर लिया करते थे।

एक दिन लन्दन में एक समारोह के दौरान एक पत्रकार ने उनसे पश्चिमी देशों की वैज्ञानिक प्रगति की प्रशंसा की और भारत के पिछड़ेपन की बुराई की। इस पर डॉ. राधाकृष्णन् बोले, 'मैं तो यही समझता हूँ कि आप लोगों ने पक्षियों की तरह आकाश में उड़ना सीख लिया है। मछलियों की तरह पानी में तैरना भी जान लिया है, किन्तु मनुष्य की तरह धरती पर रहना आप लोगों को अभी नहीं आया। भारत अभी प्रगति में पीछे हो पर वहाँ मानवीय मूल्य अभी भी जीवित हैं। सत्य और अहिंसा के बल पर ही गाँधीजी ने भारत को आजाद कराया। भारत एक आध्यात्मिक देश है, विदेशों की तरह केवल भौतिक नहीं।'

यह सुन कर पत्रकार झेंप गया।

नहले पर दहला

एक बार डॉ. राधाकृष्णन् से एक अंग्रेज ने पूछा-'हम गोरे लोग ईश्वर की खूबसूरत सन्तान हैं।' इस पर डॉ. राधाकृष्णन् ने नहले पर दहला मारते हुए कहा-'हाँ, आपका कहना सही है। एक बार भगवान को रोटी बनाने की इच्छा हुई। पहली रोटी कम सिकी। उससे अंग्रेज पैदा हुए। दूसरी अधिक सिकी। उसमें नीग्रो उत्पन्न हुए। तीसरी न अधिक सिकी, न कम। उससे भारतीय पैदा हुए।' यह सुन कर वह अंग्रेज शर्मिन्दा हो गया और वहाँ उपस्थित लोग हँस पड़े।

राजनीतिज्ञ की योग्यता

एक बार किसी ने डॉ. राधाकृष्णन् से पूछा-'राजनेता बनने के लिए आवश्यक योग्यता क्या है?'

उनका उत्तर था-'कल, अगले महीने और अगले साल क्या होने वाला है, यह भविष्यवाणी करने की सामर्थ्य और बाद में यह समझाने कि वैसा क्यों नहीं हुआ।'

-15, पंचवटी, उदयपुर-313004
मो. 9352103162

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

शिक्षक दिवस : आत्मावलोकन दिवस

❒ गोपाल प्रसाद मुद्गल

कुछ दिन पहले की घटना है। एक महानगर में छह बच्चों ने आत्महत्या कर ली। दो बच्चों ने तेल डालकर आग लगा ली। बात इतनी सी थी कि दसवीं कक्षा में असफल हो गए। समाचार दुखद है। पीड़ाप्रद है। निराशाजनक है। समय से पहले कलियां मुरझा गई। एक दुखद अंत। भयावह अन्त। सुकुमार देहों को धरा पर खेलने का मौका नहीं मिला। अचानक अंत हो गया। क्या यही है शिक्षा की सौगात? क्या यही है शिक्षा का वरदान? क्या यही है शिक्षा का सन्देश? क्या यही है शिक्षा की देन?

आइए, एक परिदृश्य सफलता पाने वालों का भी देख लें। उस घर में चूल्हा भी नहीं जला, बेटे को सत्तर प्रतिशत अंक जो मिले हैं। एक घर में लड़की का मानसिक संतुलन ही बिगड़ गया, उसे साठ प्रतिशत अंक जो मिले हैं। उसे अस्सी प्रतिशत की आशा थी। उसे इस बात की आशंका है कि साइंस नहीं मिल सकेगी।

इनसे भी बढ़कर उन लोगों की जमात है जो डिग्रियाँ लिए जूतियाँ चटकाते फिर रहे हैं। मक्खियों की तरह यत्र-तत्र भिनभिना रहे हैं। रोजगार-दफ्तरों के चक्कर काट रहे हैं। निराश होकर कुछ बुलैट थाम रहे हैं। यह सब आज की शिक्षा की देन है।

आज की शिक्षा के सन्दर्भ में आचार्य रजनीश ने अपनी पुस्तक 'शिक्षा में विद्रोह' में डंके की चोट खुलासा किया है-आज बच्चों को प्रारंभ से ही महत्वाकांक्षा की घुट्टी पिलाई जाती है। पड़ौसी से आगे निकलना है। कैसे भी हो आगे निकलना है। लाशों पर भी पैर रखकर आगे बढ़ना है। चारों ओर प्रतियोगिता है। होड़ है। इसने ही नफरत, वैमनस्य, ईर्ष्या, जलन आदि दुर्भावनाओं का शिकार बनाया है। जहाँ तनाव ही तनाव हो, वहाँ चैन कहाँ? जहां प्रारम्भ से ही बच्चों को चिन्ता की भट्टी में झोंक दिया जाए, वहां भूख-प्यास-नींद का हराम होना स्वाभाविक है। वहां पर सुख शांति की कल्पना करना व्यर्थ है। वहां बच्चों के सर्वांगीण विकास की कल्पना करना बेमानी है। भौतिक जगत के सभी साधन हैं सभी उपलब्धियां हैं फिर भी संतोष नहीं है। उलझन है। कसमसाहट है। टकराहट है क्योंकि महत्वाकांक्षा के कारण जीवन में कड़ुवाहट है। हर पल कड़वाहट ही कड़वाहट। ऐसे महत्वाकांक्षी लोगों को अठारहवीं सदी में ही गुरु मंच दिया था एलेबजेन्डर पोप ने-

"Happy is the man who has a few acres of parental lands.
- A few sheep for wool and milk.
- A few trees for shade
- A well for cool water
- What a life if full of care we have no time to stand and stare."

कुछ लोग शिक्षा को अर्थशास्त्र तक सीमित कर देते हैं। शिक्षा को भी संसाधन मान लिया है। शिक्षा मंत्रालय को 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' कहा गया है। इसमें विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को अपनी आय विकसित करने पर जोर दिया है। शिक्षाविद्-साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने अपने लेख 'शिक्षा के सन्मुख चुनौतियां' में कहा गया है कि अर्थशास्त्र के पास किसी मानवीय क्रियाशीलता के औचित्य को परखने की कसौटी आर्थिक प्रासंगिकता है। जिस काम से लाभ हो वही प्रासंगिक है। अन्य सब कुछ अनार्थिक होना अब तो बड़ी अयोग्यता है। इसलिए यदि शिक्षा भी धीरे-धीरे इस आर्थिक कसौटी के प्रभाव के अन्तर्गत चली जाए तो इसे स्वाभाविक ही नहीं वांछनीय कहा जाना चाहिए। इस दृष्टि से यह शिक्षा के सम्मुख एक बड़ी चुनौती है। अर्थशास्त्री कीन्ज ने भी इसकी पुष्टि की है।

मेरा स्पष्ट मत है कि शिक्षा को संसाधन मानना या अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थ तक मनुष्य को सीमित करना सही समाधान नहीं है। शिक्षा को येन-केन प्रकारेण अर्थ कमाने का साधन बनाना भी उचित नहीं है। शिक्षा कभी भी अनैतिकता की ओर नहीं ले जाती। शिक्षाविद एवं सृजनशील साहित्यकार रमेश थानवी का कहना है, 'शिक्षा अपने आप में ही एक सम्पूर्ण समग्र सार्वलौकिक-सार्वजनिक और सनातन प्रक्रिया है।' शिक्षा कभी भी व्यक्ति को आततायी-क्रूर-आक्रामक-हिंसक-विनाशक नहीं बना सकती। वह तो व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है। उसके सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करती है वह व्यक्ति को रचती है। रचना भी ऐसे करती है जैसे गेंहू का एक दाना, खाद-माटी-पानी-हवा और सूरज का प्रकाश पाकर प्रस्फुटित होता है। पौधा बनकर हजार नए दाने पैदा करता है। हर दाने में वही सामर्थ्य भरी पड़ी कि वे फिर हजारों हजार पौधों को जन्म दें तथा लोगों का भरण पोषण करें। अत: शिक्षा की रचना प्रक्रिया किसी कारखाने की उत्पादन प्रक्रिया नहीं है बल्कि एक अत्यन्त नैसर्गिक और समग्र प्रक्रिया है।

उपर्युक्त तथ्य के आधार पर यह स्पष्ट है कि जो शिक्षा मनुष्य का निर्माण नहीं कर सके, जो मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सके वह शिक्षा ही नहीं है। श्री थानवी ने कहा है, 'हम चेतन हैं। हमारी अनंत इच्छाएं हैं, हम प्राणवान हैं, जीवन्त हैं, स्वतंत्र हैं, उन्मुक्त हैं, हर पल अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। जो सुख सुविधा हमें मिली है उनसे सन्तुष्ट रहकर सम्पन्न और सम्पूर्ण बन सकते हैं। हमारी उपलब्धियों के समक्ष जो चुनौतियां हैं उनका तर्क संगत मुकाबला कर सकते हैं।'

यहाँ मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि पाश्चात्य शिक्षा के अन्धानुकरण से भारतीय शिक्षा आहत हुई है। अब शिक्षा सीमित दायरे में सिकुड़ी दिख पड़ती है। अब शिक्षा आचरण, धारणा और व्यवहार के अभाव में मूल्यनिष्ठ नहीं रही। मूल्यों से सम्पन्न होकर ही मनुष्य बड़ा होता है। मनुष्य का कद लम्बाई-चौड़ाई से नहीं गुणों से बढ़ता है।

हमारे यहाँ अंग्रेजों ने सन् 1857 में लंदन विश्वविद्यालय के आधार पर बम्बई, मद्रास और कलकत्ता में विश्वविद्यालय स्थापित किए। इनकी स्थापना के पीछे एक कूट योजना थी। इसमें वे सफल भी हुए। हम वास्तव में रंग रूप में ही भारतीय रह गए। चिन्तन और व्यवहार में पाश्चात्य के परम भक्त बन गए। वही शिक्षा मामूली हेर-फेर के साथ अभी तक अपनी जड़े जमाए हुए हैं।

हमें आज भी आकाश और धरती के बीच की शिक्षा दी जाती है। हमें दैहिक ज्ञान अधिक मिल रहा है आत्मिक नहीं। मन-बुद्धि और संस्कार का ज्ञान नहीं। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? सृष्टि से मेरा क्या सम्बन्ध है? इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं। इन पर बिना विचार किए अपने गन्तव्य का कैसे ज्ञान होगा?

आइये, तनिक अतीत में झांक कर देखें। हम जगतगुरु थे। हमारे यहाँ दोनों प्रकार की शिक्षा थी-परा और अपरा। परा विद्या का मतलब है परमात्मा विद्या, अध्यात्म विद्या और अपरा का मतलब है लौकिक विषयों की विद्या। देश का आदर्श शिक्षक कहता था-'मान्य स्माकं, सुचरितानि। तानि त्वयो पास्यानि नो इतराणि।।'

अर्थात् हमारा जो सुचरित है, केवल उस सुचरित का ही अनुकरण करना जो सुचरित से भिन्न है, उसका अनुसरण मत करना। अतीत का शिक्षक आकाशधर्मी होता था। जो हर शिष्य को खुलकर फैलने को आकाश देता था। उसकी क्षमता को पहचान कर विकसित होने का सुअवसर देता था। अब तो शिलाधर्मी शिक्षक अधिक है। जैसे हरी घास पर कोई शिला धर दे तो कुछ दिन बाद शिला के नीचे की घास पीली नजर आएगी। ऐसे ही शिलाधर्मी शिक्षक से छात्रों का चहुंमुखी विकास असंभव है। शिलाधर्मी शिक्षक हाथ में डंडा लिए आज भी दिखाई देते हैं। कानून के भय ने जरूर रोक लगा दी है किन्तु उनकी डाट-फटकार बच्चों को खुलने का मौका नहीं देती। शिलाधर्मी शिक्षक ज्ञान के अभाव में रीते हैं। अद्यतन ज्ञान के लिए नवीनतम साहित्य का अध्ययन करना जरूरी है किन्तु आलस्य और प्रमाद ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा है अत: शिक्षक दिवस पर शिक्षक वर्ग को आत्मावलोकन करना अत्यन्त वांछनीय है।

गुरु के समान अतीत के छात्र भी निष्ठावान होते थे, 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्' अर्थात् श्रद्धावान को ज्ञान प्राप्त होता है। गीता की पूरी उक्ति और भी कहती है, 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम तत्पर: संयतेन्द्रिय:।' श्रद्धावान होने के साथ ही ज्ञान प्राप्त करने के लिए तत्पर है, जुटा है इन्द्रियों को संयत कर रखा है। शिष्यों के लिए याज्ञवल्कीय शिक्षा का अद्भुत श्लोक है-

सुश्रुषा, श्रवणं, चैव ग्रहणं, धारणं तथा
ऊहापोहार्थ विज्ञानं, तत्वज्ञान च धी गुणा:।।

अर्थात् छात्र की बुद्धिवर्द्धन हेतु एक प्रक्रिया है,गुरु की सेवा, श्रवण करना (ध्यानपूर्वक), ज्ञान ग्रहण करना, जीवन में धारण करना यानी व्यवहार में लाना, संशय निवारण के लिए गुरु से विचार-विमर्श करना तथा आध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करना आवश्यक है। आशय यही है कि शिष्य उपर्युक्त प्रक्रिया से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यह आदर्श आप्त श्लोक आज भी प्रासंगिक है किन्तु आवश्यकता है गुरु के प्रति श्रद्धा की।

शिक्षक दिवस के अवसर पर अभिभावक, शिक्षक और शिक्षार्थी तीनों घटकों को आज के परिप्रेक्ष्य में मिलकर बदलाव लाना है। यह असंभव नहीं है। युग धर्म को पहचानना है। अपने अतीत को याद करना है और संचेतनशील बनकर अपना-अपना लक्ष्य भेदन करना है। यह संभव है, मेरी मान्यता है-

मस्त खिलाड़ी जीवन में
शहमात नहीं देखा करता है।
घड़ी महूरत कौन गिने
दिन रात नहीं देखा करता है।
जिसके दिल में आग लगी,
या लाग लगी मंजिल पाने की,
ऐसा चलने वाला रुककर
वाट नहीं देखा करता है।

-पांडेय मौहल्ला, डीग-भरतपुर-321203
मो. 9414973412

जज्बे को सलाम

□ महेन्द्र सिंह

इंसान यदि किसी को चुनौती एवं संकल्प के रूप में लेकर उस पर प्रतिबन्धता एवं समपर्ण पूर्व कार्य करें तो सफलता मिलना सुनिश्चित रहता है। जहां उद्देश्य में पवित्रता होती है, उस उद्देश्य को सफल बनाने में परमात्मा भी सहायता करते है। बस आपको तो मनोयोग पूर्वक संलग्न रहना होता है। जज्बा होना चाहिए, कामयाबी देना 'उसका' काम है। इस सिद्धान्त को साकार किया है मध्यप्रदेश के एक गुरुजी ने।

नीमच क्षेत्र में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जीरन के शारीरिक शिक्षक श्री बाबूलाल जैन 20 वर्षों से राजकीय सेवा में है। दरअसल वे सेना में जाना चाहते थे, राष्ट्र भक्ति का जज्बा हृदय में हिलोरे जो ले रहा था मगर किस्मत ने साथ नहीं दिया और अन्ततः वे शिक्षा विभाग में आ गये। संकल्प लिया कि चाहे जो हो युवाओं को सेना में भर्ती लायक वे बनायेंगे। ग्यारह हजार आबादी वाला कस्बा जीरन और उसमें भी बड़े स्कूल का ग्राउण्ड जैसे सेना में भर्ती हेतु तैयारी का ट्रेनिंग स्थल हो गया। बाकायदा कार्यक्रम बनाकर युवाओं का रजिस्ट्रेशन और फिर दौड़, पीटी, परेड़, लांग जम्प, हाई जम्प, भारौतोलन, कसरत आदि का प्रशिक्षण ऐसा लगता है जैसे किसी सैनिक स्कूल का परिसर हो। वही प्रशिक्षक और वही परामर्शक भर्ती कार्यक्रमों पर निगरानी रखकर युवाओं को आवेदन करवाना, तैयारी करवाना, कोच के रूप में साथ रहना, उत्साहवर्धन, वांछित सुविधाएं उपलब्ध करवाना आदि।

जीरन कस्बे ने अब तक 144 युवकों को जवान के रूप में राष्ट्र को दिया है। पिछले 18 वर्षों में इसका श्रेय जाता है श्री बाबूलाल जैन को, जिनके जज्बे को सलाम किया जाना चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि महु में होने वाली आर्मी भर्ती में हर बार जीरन के युवाओं का चयन होता है। इसका कारण है कि गुरुजी के प्रयासों से यहां के युवकों की फिटनेस अन्य उम्मीदवारों की तुलना में ज्यादा होती है। यहां के 100 युवा सेना में, 25 जीआरपीएफ में, 4 बीएसएफ में, 5 एसएएफ में तथा 10 मध्यप्रदेश पुलिस में सेवाएं दे रहे हैं। ऐसे जज्बे वाहक शिक्षक को शिक्षक दिवस पर नमन एवं उत्तरोत्तर आगे बढ़ने की शुभकामनाएं।

-से.नि. शारीरिक शिक्षक
हनुमानगढ़ जंक्शन

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस

साक्षरता शिक्षा का स्वाभिमान

❒ साँवलाराम नामा

संयुक्त राष्ट्र संघ के संगठन यूनेस्को द्वारा प्रतिवर्ष आठ सितम्बर को ''अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इसका अन्तर्निहित उद्देश्य यह है कि संसार के अशिक्षित वर्ग में साक्षरता के प्रति उमंग, उत्साह, आशा, जागरूकता में वृद्धि होवे। यूनेस्को के अनुसार साक्षरता का आशय व्यक्तिगत आजादी विकास करने के परिपूर्ण अधिकाधिक अवसर और व्यक्ति का अपना शैक्षणिक स्तर में उन्नयन करना है। साक्षरता व्यक्ति के आर्थिक स्तर, पारस्परिक समन्वय, सामंजस्य और सद्भाव, सौहार्द्र की भावना राष्ट्रीय एकता और आपसी भाईचारा, समानता की विशुद्ध भावना के निरन्तर विकास में सहायक होती है। साक्षरता मात्र शिक्षा प्राप्ति का साधन ही नहीं है अपितु गरीबी, दारिद्रयता, अशिक्षा, उन्मूलन, सामाजिक और मानवीय मूल्यों से जुड़ी हुई है। साक्षरता का मुख्य उद्देश्य है-'सबके लिए मौलिक और प्राथमिक शिक्षा के अवसर की प्राप्ति।'

हमारे देश के मूल संविधान में शिक्षा 'राज्य सूची' का विषय था। तदनुसार शिक्षा को 'समवर्तीसूची' में सम्मिलित किया गया। जिसमें केन्द्र और राज्य दोनों में ही शिक्षा की व्यवस्था करने का संयुक्त उत्तरदायित्व निर्धारित हो गया है और 86 वे संशोधन अधिनियम 2002 के द्वारा शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा प्रदान कर दिया गया है, जिससे 6 से 14 वर्ष की आयु वाले सभी बालकों/बालिकाओं को शिक्षा का मूल अधिकार प्राप्त हो गया है। शिक्षा के लिए चलाए जा रहे साक्षरता अभियान के अन्तर्गत ग्रामीण अँचल के गाँव, तहसील व जिलों में जोर-शोर से उत्तरोत्तर कार्य किया जा रहा है और उम्मीद है कि इससे ढाँणियों, ग्रामीण अँचल के एक करोड़ से अधिक बच्चों को शिक्षा, साक्षरता आदि का काम और निरक्षरता दूर होगी। जिसमें दोनों सरकार, शिक्षा विभाग, शिक्षक, अभिभावक पूर्ण सहयोग देंगे।

एक अकेला थक जाएगा,
मिलकर शिक्षा, साक्षरता साकार करेंगे।

आज का युग ज्ञान-विज्ञान, कम्प्यूटर, रोबोट का है और ज्ञान को बौद्धिक सम्पदा के रूप में देखा जा रहा है। कहा है-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
-श्रीमदभागवत गीता 4/30

अर्थात-'इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।' ज्ञान, विद्या, शिक्षा सागर का कोई आर है न पार है। आद्य जगद्गुरू शंकराचार्य ने अपने शिष्यों को उदाहरण सहित समझाया था। आज भी और भी प्रासंगिक है।

ज्ञान को बौद्धिक सम्पदा के रूप में देखा जा रहा है। जिस देश के पास ज्ञान की जितनी अधिक पूंजी है वह देश उतना ही अधिक विकसित माना जाता है। अमेरिका और यूरोप के देशों का वर्चस्व शिक्षा और अनुसंधान में बना हुआ है।

विश्व के श्रेष्ठ 200 विश्वविद्यालयों में भारत के दो-तीन संस्थान ही इन विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों में स्थान पाते हैं। प्राचीन समय में हमारा देश विश्व ज्ञान का केन्द्र था। नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्व में ज्ञान के केन्द्र थे। महात्मा गांधी इस बात के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे कि देश का जनजीवन शीघ्रताशीघ्र शिक्षित हो जिससे सफलता अपने आप निकट आ जाए।

शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज की शिक्षा और विकास से जुड़ा हुआ है।

स्वामी विवेकानन्द ने ऐसी ही शिक्षा के लिए आह्वान करने हेतु कहा कि शिक्षा हमें तमाम बंधनों से मुक्त रखेगी, अंधविश्वासों, रूढ़ियों, कुरीतियों की बेड़ियों से छुटकारा दिलाएगी। महात्मा गांधी ने भी माना शिक्षा केवल बौद्धिक विकास का ही माध्यम नहीं वरन् वह मानवीय मूल्यों के साथ-साथ जनतांत्रिक समाज रचना और समाज का मुख्य साधन होना चाहिए।

शिक्षा सभ्य और विकसित समाज का मुख्य साधन होना चाहिए। शिक्षा सभ्य और विकसित समाज का निर्माण करती है। भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के संदर्भ में जो नीतिगत घोषणाएँ हैं, उनकी रोशनी में-'सरकार की नजर में बच्चों का हित सबसे ऊपर है, और सरकार बच्चों की पढ़ाई ही नहीं बल्कि खाना, कपड़ा और बीमार पड़ने पर इलाज का इंतजाम भी करेगी।' से भारत के ग्रामीण अँचलों के बच्चों के भविष्य के साथ-साथ भारत का आने वाला समय भी अत्यंत उज्ज्वल प्रतीत होता है।

राजस्थान में महिला साक्षरता की स्थिति को देखते हुए बालिका शिक्षा पर विशेष बल देना जरूरी है। इस हेतु राज्य सरकार ने करोड़ों रुपये के प्रारम्भिक कोष से बालिका शिक्षा को संबलता प्रदान करने एवं इसे प्रेरित, प्रोत्साहित करने के लिए बालिका शिक्षा फाउण्डेशन की स्थापना की। गांवों में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरस्वती योजना शुरू की गयी है। जिसमें गांव की पढ़ी-लिखी महिलाओं, किशोरियों द्वारा अपने आँगन में बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए सरस्वती शालाएं संचालित की जा रही है।

गांव-गांव और हर बस्ती में विद्यालय खुलें और अधिक से अधिक लोग साक्षरता से शिक्षा से लाभान्वित हों, इस संकल्प के साथ राजस्थान सरकार ने एक निर्णय लेकर कक्षा प्रथम से पंचम तक के विद्यालयों के लिए सरकार से मान्यता प्राप्त करने की अनिवार्यता समाप्त आंशिक अभावों के कारणों से।

राजस्थान में आखर की यात्रा गांव-गांव ढाणी-ढाणी से गुजर कर निश्चय ही यहाँ के लोगों को एक नई जीवन दृष्टि प्रदान की है। शिक्षा का ध्येय है, मनुष्य का सर्वांगीण विकास। शिक्षा ने केवल जड़ को चैतन्य बनाती है अपितु व्यक्ति के दिव्य, भव्य, नव्य अंशको भी उद्भासित करती है। शिक्षा एक ओर जहां सामाजिक-आर्थक और वैयक्तिक विकास का सतत प्रवाह है, वहीं यह मनुष्य के सम्मान से जीने और आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा भी देती है। शिक्षा का प्रथम सोपान संस्कार, शिक्षा है।

गांव-गांव, नगर-नगर जाग उठा,
साक्षरता शिक्षा का स्वाभिमान।
आओ इनका मान-सम्मान बढ़ाएं,
कहीं नहीं रहे अशिक्षा का नामोनिशान।।

-सदर बाजार रोड, निकट बडा चौहरा,
भीनमाल, जालौर-343029
मो. 09587848485

अब तो हम इन्सान उगाएँ

❑ डॉ. दाऊदयाल गुप्ता

जब खेतों में अन्न के स्थान पर आग उपजने लगा हो, परिवेश में प्राण-वायु के अभाव में जहर घुलने लगा हो तथा चारों ओर पोषण की जगह शोषण का बोलबाला हो तो समझ लेना चाहिये कि परार्थ भावना ने खुदकुशी कर ली है। आज भौतिक सुख-सुविधाओं के नाम पर विज्ञान का पल्ला पकड़कर हम नित्य नई उड़ान भर रहे हैं किन्तु मानवता औंधे मुँह पड़ी सिसक रही है। बदहाली का आलम यह है-

'आजादी से आज दिवस तक
अब हमको अहसास हुआ है,
संवेदना गुम हो गई कहीं पर
मानवता का ह्रास हुआ है।'

स्वतंत्र भारत के सूत्रधार पूज्य बापू ने हमें शिक्षा की यह परिभाषा दी कि 'By education I mean an alround development of man's body, mind and spirit.' इस परिप्रेक्ष्य में दिल, दिमाग तथा देह तीनों के समन्वित विकास की अपेक्षा की गई थी। परन्तु संतुलन बिगड़ गया। दिमाग तो दौड़ा, देह भी किन्ही अंशों में उपयुक्त बन पड़ी पर दिल रोग ग्रस्त हो गया। उस पर स्वार्थ की परत दर परत चढ़ने लगी। हद तो तब पार कर गई जब जन-जन की धड़कन से जुड़ा कवि यह कहकर कराह उठा-

'अब तो कोई ऐसा मजहब चला जाय
जिसमें हर इंसा को इंसा बनाया जाय।'

-दुष्यंत कुमार

हमने येन-केन-प्रकारेण अर्थोपार्जन में तो महारत हासिल की किन्तु इस अंधीदौड़ में हम हृदयहीनता, निरंकुशता तथा संवेदनशून्यता का वरण कर बैठे। मानवी देह प्राप्त कर ही कोई मानव बन जाता हो ऐसा कदापि संभव नहीं है। न तो हम सत्यता से प्यार पनपा पाये, न ही परमात्मा के प्रति अनुरक्ति जगा पाये और न इन्सान बनकर इन्सानियत को अपना पाये। खेद जाहिर करते हुए कवि को यह कहना पड़ा-

'क्या करेगा प्यार वह ईमान को,
क्या करेगा प्यार वह भगवान को,
जन्म लेकर गोद में इन्सान की
कर न पाया प्यार जो इन्सान को।'

आत्माभिमान को भूलकर हमें पूँछ हिलाना ही याद रहा। अधिकांश व्यक्तियों का आचार-विचार यह प्रमाणित कर पाया-

'जिस तरह चाहो बजा लो, इस सभा में
आदमी मैं हूँ नहीं, बस झुनझुना हूँ।'

एक लंबे अन्तराल तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़े रहकर मुक्त तो हुआ पर तदनुसार आत्म परिष्क्रमण करने के स्थान पर बाह्य प्रदर्शन में संलग्न हो गया। मानव ने राम को जाना पर उसका कहा न माना। कुरान ने जो बतलाया उसे दोहराया पर कर्म के नाम पर नकार दिया। महात्मा ईसा को अतिशय सम्मान दिया पर आचरण की दृष्टि से टस से मस न हुआ। हम अहिंसा की बोली न बोल सके। प्रेम का संचरण न हो सका। हाँ, हिंसा की प्रतियोगिता में अपार रुचि प्रदर्शित की-

'मैंने उसको जब-जब देखा लोहा देखा,
लोहे जैसा तपते देखा गलते देखा ढलते देखा,
मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा।'

निश्चय ही यह विडम्बनापूर्ण स्थिति है जो स्वदेश के स्वप्न दृष्टाओं को सोचने के लिये मजबूर करती है तथा जिसकी ओर पूज्य बापू ने पूर्व में इंगित किया था। उनका कहना था कि हमने अपने विचारों को अमलीजामा पहनाने के लिये 'आचरण' को केन्द्र में नहीं रखा।

एक पुरानी कहावत है-जैसा बोओगे, वैसा काटोगे। इस दृष्टि से सहज प्रश्न उठते हैं कि हमने क्या बोया कि अपेक्षित फल मिला ही नहीं। यह भी संभव है कि हमने वह बोया ही नहीं जो आवश्यक था। या फिर बोया था, उगा भी। परन्तु खरपतवार समझकर उसे उखाड़ फेका। वह रहने दिया जो इतना महत्त्वपूर्ण न था। निःसंदेह हमने बस्ते को हर दिन भारी बनाकर संतुष्टि प्राप्त की। समझा कि अपने आप संस्कार पैदा हो जाएँगे। किन्तु, 'हम जन्म भर पुस्तकों का अध्ययन करते रहें और इसके फलस्वरूप बड़े बौद्धिक भी हो जाएं पर अंत में देखेंगे कि आध्यात्मिक दृष्टि से हम कुछ भी विकसित नहीं हुए।' स्वामी विवेकानन्द की मान्यता है कि हमें आत्मा के विकास की आवश्यकता है। जिस आत्मा से ऐसी शक्ति मिलती है वही हमारा गुरु और आचार्य है।

महान अर्थशास्त्री एवं भविष्य दृष्टा चाणक्य ने किसी राष्ट्र के उत्थान हेतु 'धन बल' की महत्ता को स्वीकार किया है। परन्तु उनका मानना है-'केवल धन बल द्वारा पूर्णतः संरक्षित होने की कल्पना नहीं करनी चाहिए। धन बल से आत्मबल कहीं अधिक उपयोगी है।' यह आत्मबल हमें सुशिक्षा अर्थात् संस्कारित शिक्षा से प्राप्त होगा जो सद्गुरु के सहयोग बिना असंभव है।

गोस्वामी तुलसीदास ने मनुष्य की प्रवृत्तियों को सुधारने पर बल दिया है जो मूलतः पाश्विक हैं तथा जिन्हें सद्गुरु ही सुधारने की सामर्थ्य रखता है-

'पारस के परसन से कंचन भई तलवार।
तुलसी तीनों न गए मार, धार, आकार।'

ज्ञान-विज्ञान रूपी पारस से हम लोहे को कंचन बना सकते हैं परन्तु जब तक उस वस्तु की मूल प्रवृत्ति को नहीं सुधारा जायेगा वह कंचन बनकर भी हिंसक धर्म का पालन करती रहेगी। आगे लिखते हैं-

'ज्ञान हथौड़ा हाथ से सदगुरु मिला सुनार।
तुलसी तीनों मिट गये मार, धार, आकार।'

महान विचारक 'एडम्स' ने सत्य कहा है-

'The teacher is a maker of man.'

यदि हमारी शिक्षा-दीक्षा निष्फल प्रमाणित हो रही है तो इसके लिये या तो स्वयं शिक्षा की संरचना दोषी है या फिर उससे जुड़े हुए माता-पिता व शिक्षक। एक विचारवान शिक्षक के उद्गार ये हैं-

'यदि हम बड़ों में अच्छे संस्कार होंगे तो वे बच्चों को सहज ही मिलेंगे। गुलाब में यदि सुगन्ध होगी तो सहज ही लोगों की नाक में घुस जायेगी। बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिए माता को भक्त पिता को योगी तथा गुरु को ज्ञानी होना चहिए।'

हम प्रायः यह अनुभव करते हैं कि शिक्षा में सुधारों का सिलसिला जारी है तथा हम नित्य नवीन प्रयोग कर रहे हैं। यथा स्थिति को

परिवर्तित करने हेतु प्रयत्नोन्मुख होना दोषपूर्ण नहीं है। परन्तु, प्रयत्न किये बिना निष्कर्ष पर पहुँचना तथा यथास्थिति से समझौता कर सन्तुष्ट हो जाना बड़ा ही खतरनाक है। अंग्रेजी विचारक 'थोरो' लिखते है–'क्या तुमने कभी ऐसे आदमी का नाम सुना है जिसने जन्म भर प्रयत्न किया हो और किसी हद तक भी सफल न हुआ हो।' पर हमारी शिक्षा की स्थिति उड़ीसा में प्रतिष्ठित उस रथ के मानिन्द है जिसे जगन्नाथ के रथ के नाम से जाना जाता है तथा असंख्य लोग उसे रस्सों के सहारे महान कोलाहल के बीच खींचते हैं पर रथ है जो मुश्किल से आगे खिसकता है। हमारी मान्यता है कि –

'हम सुधरेंगे जग सुधरेगा,
नारा यही बुलन्द रहेगा।
टस से मस न होते बन्दे,
फिर कैसे यह देश बनेगा।'

और तो और, आज तो कोई परस्पर विचार करने के लिये भी तैयार नहीं है। पता नहीं हम किन महत्वपूर्ण बातों में उलझे रहते हैं कि अपने उत्तरदायित्व के प्रति तनिक भी विचारने का अवकाश हमारे पास नहीं है। महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन की पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त हुई है–'हम भले ही एक–दूसरे को प्यार व पसन्द न करें परन्तु एक–दूसरे से बात तो करें, एक–दूसरे को समझने की कोशिश तो करें। हमें दूसरों के स्थान पर खुद को रखकर सीखना होगा और यह अनुभव करना होगा कि उनके मन में क्या आता है।'

परस्पर संवाद से रोग का निदान होगा। उपयुक्त निदान हो जायेगा तो प्रभावी उपचार हो पायेगा तथा हम रोगमुक्त हो सकेंगे। हमें विंस्टन चर्चिल के इन शब्दों पर ध्यानस्थ होना होगा– 'सफलता अंतिम नहीं होती। विफलता निवृति नहीं होती। साहस से निरन्तर आगे बढ़ते रहने का ही महत्व है।' किसी कवि ने सटीक कहा है–

'जब छूना चाहो आकाश
मत सोचो कौन हो तुम
इच्छा जो भी होगी दिल में
हो जाएगी वह पूरी।'

शिक्षा को सार्थक बनाने, उसमें संवेदन का समावेश कराने तथा हमारी महान संस्कृति द्वारा प्रदत्त जीवन–मूल्यों का ताना–बाना बुनने का काम इतना दुरूह नहीं है जितना हम समझ बैठे हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे पहाड़। वह इतना ऊँचा नहीं जितना लोग बताते हैं। यों प्रयत्नशील व्यक्ति से महान कोई नहीं।

एक बात और। हमें अपनी संस्कृति के प्रति सशंकित नहीं अपितु गर्वित होना है। हमारी महान संस्कृति ने धार्मिक संकीर्णता को सदैव त्याज्य माना है। विश्व बंधुत्व को प्रश्रय दिया तथा अतिथियों एवं शरणागत की रक्षा करना व उन्हें आदर देना बताया है। ऐसी संस्कृति का नाम लेते ही शायद हमें सोचने को विवश कर देता है कि हम अपने धर्मनिरपेक्षता के मूलसिद्धान्तों से भटक तो नहीं गये। हमारी संस्कृति बार–बार यही सिखाती है–

'न हिन्दू ही बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा।'

तो हमें इसमें विभटनकारी तत्वों के प्रति सजग रहना होगा। हम शिक्षक हैं तथा बालक हमारे इष्ट भगवान। हमारे लिये हमारा कर्म ही धर्म है तथा प्रभु की सच्ची आराधना है–

'घर से बहुत दूर है मस्जिद
चलो यूँ करें कि
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाये।'

शिक्षा का निष्प्रभावी रहना शिक्षकों के समक्ष चुनौती है जिसे न तो नकारा जा सकता है और न ही टाला जा सकता है। प्रथमतः शिक्षक दिवस, हमारे लिये संकल्प दिवस है। हमारे सच्चे श्रद्धासुमन आज के महान दिवस के निमित्त यही हो सकते हैं कि हम शिक्षक संकमी बनें दुष्कृत्यों से दूर सफल जीवन जीने की कला सिखाएँ

जिसके लिए महान दार्शनिक अरस्तू ने कहा–

'Those who educate children welfare more to be honoured than eventhier parents, for these only gave them like those the art of living well.'

स्मरण रहे विज्ञान की शिक्षा के साथ–साथ मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना का महती कार्य शिक्षकों द्वारा ही संपादित होना है। महान शिक्षक गिजुभाई ने बाल–मन का जो चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में किया है, वह मननीय एवं करणीय है–'बालक एक सम्पूर्ण मनुष्य है। बालक में बुद्धि है, भावना है, समझ है। बालक में भाव और अभाव है। रुचि और अरुचि है। हम बालक की इच्छाओं को समझें। बालक नन्हा और निर्दोष है। हम अपने अहंकार के लिये बालक का तिरस्कार न करें। बालक की दृष्टि प्रश्नात्मक है। बालक का हृदय उद्गारात्मक है। बालक के व्याकरण में प्रश्न और उद्गार हैं लेकिन पूर्ण–विराम कहीं नहीं है। बालक का मतलब है–मूर्तिमंत गति, अल्पविराम भी नहीं।'

निष्कर्षतः डॉ. संपूर्णानन्द के शब्दों में इन्सानों की खेती करने का, देश को चरित्रवान एवं बुद्धिमान नागरिक देने का काम समय रहते किया जा सकता है। यह मानते हुए कि 'शिक्षक योगी नहीं होता पर उसका भाव यही होना चाहिये जो किसी योगी का अपने शिष्य के प्रति होता है। अनेक शरीरों में भ्रमते हुए आज शिक्षक ने नर देही पाई है तथा शिष्य भी नर देह धारण कर छात्र रूप में आया है। यदि मैं (शिक्षक) इसको ठीक मार्ग पर ला सका तथा इसके चरित्र के यथोचित विकास में बल लगा सका तो समाज का भला होगा।' अतः इन्सानों को बीजारोपित करना है ताकि शिक्षक गर्व से कह सकें कि हमने हैवानों को नहीं इन्सानों को तराशा है तथा देश–हित में अनुकरणीय एवं जीवन्त बनाया है। हाँ, जड़ स्थिति को गतिवान बनाना हमारा ध्येय है और रहेगा।

वरिष्ठ कवि दुष्यंत कुमार की मनोव्यथा हमें कुछ कर गुजरने के लिए आह्वान कर रही है–

पीर पर्वत हो गई है
अब पिघलनी चाहिये।
इस हिमालय से कोई
गंगा निकलनी चाहिये।।

–दही वाली गली, ब्यानिवान मौहल्ला, भरतपुर
मो. 9461462739

सवाल शिक्षकों एवं विद्यालयों की साख का

❒ रामनरेश सोनी

इस सृष्टि में जितने भी प्रकार के प्राणी हैं, मनुष्य को उन सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। हमारे ऋषियों ने भी मनुष्य की श्रेष्ठता को रेखांकित करते हुए कहा है कि 'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित।' सोचने की बात है कि इस विशाल प्रकृति और इसके विशाल उपादानों में, विशालकाय जीव-जन्तुओं और गहन वनों, गुफाओं, नदियों, पर्वतों और वृक्षों की विशाल माया के समक्ष मनुष्य नितांत बौना होते हुए भी इन सबों से श्रेष्ठता के विशेषण से विभूषित किया गया है। ऐसा क्यों?

कहना न होगा कि मनुष्य की श्रेष्ठता के पीछे उसकी बौद्धिक चेतना कारणभूत रही है। अन्य जीव-जंतुओं और प्राणियों में मनुष्य के जैसी देखने, जानने, सोचने-समझने और अतीत के अनुभवों द्वारा भविष्य के बारे में निर्णय लेने की क्षमता नहीं है। निश्चय ही हमारे इस सौर-मंडल के ग्रहों में मनुष्य विधाता की एक श्रेष्ठ और सर्वांगपूर्ण रचना है।

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक की मनुष्य की विकास गाथा इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य में अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करके आगे बढ़ने की तथा अपनी संतति के लिए सुख के साधन मुहैया करने की अद्भुत क्षमता है। यह विषय जहाँ अत्यंत रोचक है, वहीं हैरानी का भी है कि पृथ्वी पर विचरण करने वाले विशालकाय, भारी-भरकम और हिंस्र प्राणियों के साम्राज्य में, जहां 'जीवो जीवस्य भोजनम्' का सिद्धांत प्रचलन में था, प्राकृतिक आपदाओं और हिंसक जीवों की चपेट में आने का खतरा प्रतिक्षण मंडराता रहता था, मनुष्य ने आदिम अवस्था से लेकर सभ्यता के इस मोड़ तक की यात्रा किस तरह की होगी। अस्तु, हम आज के जीवन, आज की मानवीय व्यथाओं और समाधान के विविध स्वरूपों पर दृष्टिपात करें क्योंकि हजारों वर्षों की संघर्षपूर्ण विकास यात्रा के बावजूद आज का मनुष्य अब भी सुखी नहीं बन पाया है।

अधिकांश लोग इसलिए सुखी नहीं, क्योंकि उनके पास जीवन जीने की आधारभूत सुविधाएँ नहीं हैं। हम जानते हैं कि रोटी, कपड़ा, मकान और चिकित्सा मनुष्य की मूलभूत जरूरतें हैं। इनके अभाव में सुखी न रह पाना समझ में आता है, लेकिन जब ये तमाम चीजें मनुष्य के पास मौजूद हो और वह दुःखी होने की बातें कहे तो जाहिर है वह दुःख भौतिक नहीं, मानसिक है। वहां दुःखी होने का बहाना और स्वांग है। यह इंसानी नहीं, पाश्विक वृत्ति है। सामान्यतया पशुओं में ही स्वार्थपरता और आत्मकेंद्रित वृत्ति होती है। वही दूसरों का हक छीनकर अपना पेट भरते हैं।

मनुष्य को मनुष्य बने रहने, पाश्विक वृत्ति से बचने तथा सबके साथ हिल-मिल कर जीवन जीने की प्रेरणा देती है शिक्षा। इसीलिए शिक्षा को मनुष्य की मूलभूत जरूरतों में शामिल किया जाता है। शिक्षा की एक बड़ी ताकत यह है कि इससे व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक विकास होता है और आदमी को संतोषपूर्वक सुखी जीवन जीने की आधारभूत दृष्टि सुलभ होती है। शिक्षा याने विकास, शिक्षा याने परिवर्तन, परिष्कार रूपांतरण, शिक्षा याने अंतर्दृष्टि। शिक्षा स्वयं में एक बहुत बड़ी शक्ति है। भले ही हमारे समाज में शासन की सत्ता, धन की सत्ता, धर्म की सत्ता अथवा कानून एवं दण्ड की सत्ता का कभी बोलबाला रहा हो, पर शिक्षा की सत्ता के समक्ष बड़े-बड़े शासकों ने सिर झुकाया है। नानक, दादू, रैदास, कबीर, फरीद, राबिया जैसों में और था भी क्या! शिक्षा ने उन्हें जो अंतर्दृष्टिऔर विवेक दिया था उसके सामने सबों को श्रद्धावनत होना पड़ा। यह थी ज्ञान की शक्ति।

समाज में ज्ञान की ताकत विकसित करने का बहुत बड़ा दायित्व है हमारे विचारकों, शिक्षाविदों और हर पढ़े-लिखे व्यक्ति का, जिनमें अध्यापक और शिक्षा अधिकारी भी शामिल हैं। शिक्षा में यदि ताकत न होती तो बच्चों की शिक्षा में उन तत्वों का समावेश न किया जाता, जिनसे शासकों को मदद मिलती है। आज भी संसार में न जाने कितने-कितने समुदाय हैं, जो अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी शिक्षाएं देते हैं, ताकि उनके मतों का प्रचार हो। उनकी संख्या बढ़े और उनके अनुयायियों की अलग से पहचान बने।

असली शिक्षा वह है जो प्रत्येक बालक और प्रत्येक व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं और मौलिकताओं को निखार कर उसे उत्तम मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक गुणों से युक्त करती है तथा जीवन व जगत को देखने की सकारात्मक दृष्टि देती है। बापू का कहना था कि 'शिक्षा का सबसे बड़ा मकसद बालक में स्वविवेक जगाना है।' स्वविवेक भाषणों से नहीं, स्व-कर्त्तव्यबोध से आता है। स्वविवेक और स्वकर्त्तव्य से विद्यालयों में रहते हुए, वहां की विविध शैक्षिक प्रवृत्तियों में भाग लेकर विद्यार्थी जीवनोपयोगी अनुभवों से समृद्ध होते हैं। इससे उन्हें अंतर्दृष्टि मिलती है, उदात्त मानवीय गुणों का अवदान मिलता है और अध्ययन-अवलोकन-सम्पर्क-संसर्ग की निरंतरता से उत्कृष्टता का नया आलोक मिलता है।

शिक्षा की प्रयोजनीयता को लेकर देश के महान चिंतकों के विचारों में अद्भुत साम्य देखने में आता है। विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा का उद्देश्य 'मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति' करना तथा 'मनुष्य और समाज का निर्माण करना' है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार 'शिक्षा जीवनदायिनी होती है, विमुक्तकारी होती है, आत्मिक जड़ता को तोड़ती है और करुणा का विस्तार करती है। अगर वह ऐसा नहीं करती तो वह शिक्षा नहीं है, चाहे और कुछ भी क्यों न हो।' इसी क्रम में पंडित जवाहरलाल नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचार जान लेना उचित होगा। उन्होंने कहा था कि 'शिक्षा से मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास होता है, वह मनुष्य की कलात्मक व सौंदर्यपरक आवश्यकता की पूर्ति करती है, दृष्टि को परिष्कृत करना और सोच को गहराई देना उसका काम है। वह सत्य की खोज में सहयात्री है। शिक्षा यदि वह सही शिक्षा है, तो इन लक्ष्यों की ओर बढ़ेगी। हमें उसके माध्यम से श्रेष्ठ संस्कार, तर्क-शक्ति, वैज्ञानिक दृष्टि, साहसिकता का रोमांच और

परिवर्तन की क्षमता मिलेगी।'

देखा, व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की कितनी महत्ता है और व्यक्ति के माध्यम से समाज व राष्ट्र की भौतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, आत्मिक उन्नति में इसकी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रश्न उठता है, और उठना भी चाहिए कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा इन मनीषियों, चिंतकों की दृष्टि के अनुरूप व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के विकास में अपनी कारगर भूमिका निभा रही है? उत्तर में अनेक स्वर आएंगे- कुछ समर्थन करेंगे, कुछ असंतोष प्रकट करेंगे, तो कुछ मिली-जुली-सी प्रतिक्रिया देंगे। प्रो. वी.वी. जॉन ने अपने एक लेख में एक स्थल पर लिखा था कि 'शिक्षा का जो ढर्रा देश में चल रहा है, उसमें सच पूछो तो शिक्षा की आत्मा नहीं, उसका कंकाल भर है। एक खूबसूरत कल की तलाश का भाव तो है, लेकिन भटकाव इतना है कि उससे हमारा आज भी चौपट हो रहा है।'

भारतीय शिक्षा के स्वरूप का आकलन करने तथा युगानुरूप उसमें बदलाव लाने के उद्देश्य से समय-समय पर जो आयोग एवं समितियां गठित होती रही हैं, उनका स्वर भी प्रो. वी.वी. जॉन की संगति में रहा है। समग्रतः यह सोचने की आवश्यकता है कि मानवीय अस्मिता और राष्ट्रीय विकास के लिए हमारे राष्ट्रनायकों, महान चिंतकों, दार्शनिकों व शिक्षाविदों द्वारा व्यक्त किये गए विचार क्रियान्वित क्यों नहीं होते? फर्क कहां रह जाता है, और क्यों रह जाता है?

शिक्षा-प्रशासन से जुड़े अधिकारियों, संस्था-प्रधानों एवं अध्यापक समुदाय को इस दिशा में गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा के जिस स्वरूप की कल्पना महात्मा गांधी और गुरुदेव टैगोर ने की थी, बल्कि जिस ढंग से उन महापुरुषों ने टालस्टॉय आश्रम और शांति निकेतन में क्रियान्वित कर दिखाया था, क्या वे अनुभव हमें संवेदित और प्रेरित नहीं करते? टैगोर के अनुसार 'शिक्षा का महान उद्देश्य जानकारी एकत्रित करना नहीं अपितु सम्पूर्ण प्रकृति एवं मनुष्य को जानना और स्वयं को अभिव्यक्त करना है.... एक व्यक्ति पुस्तकीय ज्ञान में ख्याति अर्जित कर ले, तब भी उसकी शिक्षा अधूरी रहेगी, यदि उसने अपने हाथों को सुयोग्य और सुचारु रीति से उपयोग में लाना नहीं सीखा हो।'

मैं सोचता हूँ कि विश्वास के संकट से अधिक गंभीर शायद और कोई संकट नहीं होता। जब अभिभावकों का अध्यापकों पर, अध्यापकों का छात्रों पर, छात्रों का समाज पर और समाज का शिक्षा-प्रणाली पर से विश्वास उठ जाए तो फिर परिवर्तन और प्रभाव जैसी बातें बेमानी सी हो जाती हैं। हमारा पहला लक्ष्य यह होना चाहिए कि शिक्षा प्रणाली में समाज का विश्वास बना रहे। जब देश को अपनी न्याय-प्रणाली पर विश्वास है तो ऐसा विश्वास शिक्षा के प्रति क्यों नहीं हो सकता?

शिक्षा पर दोष मढे जाते हैं कि यह बालक को अपने भावी जीवन के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं करती, बेरोजगारी बढ़ाती है, और शिक्षित नवयुवकों की निठल्ली फौज बेकार भटकती है। विद्यालयों से निकलने वाले बालक आलसी और फैशनपरस्त हो जाते हैं। उनको परिश्रम का छोटा से छोटा काम करने में भी शर्म महसूस होती है। शिक्षा आरामतलब बनाती है और अधिकांश नवयुवक नौकरी करना पसंद करते हैं। ऐसे भी कहा जाता है कि आज की शिक्षा विद्यार्थियों को जोखिम के काम करने और अपने बलबूते पर अपना कार्य-व्यापार शुरू करने का हौंसला नहीं देती। अभिभावकों को शिकायत है कि वे तामछाम, चकाचौंध, बढ़िया शिक्षा के विज्ञापनी नारों और भावी जीवन के काल्पनिक इन्द्रजाल के शिकार हो गए। विद्यार्थियों की स्थिति यह है कि कागजी डिग्रियां धारण करके वे स्वयं इतने कागजी बन गए हैं कि श्रम की बात सोचते ही कांप उठते हैं। शिक्षाशास्त्री और शिक्षाविद अध्यापकों को कटघरे में खड़ा करने को उतारू हो रहे हैं। उनका कहना है कि आज का शिक्षक वह नहीं दे सकता, जिसकी उससे अपेक्षा है। यही कारण है कि शिक्षा प्रणाली वांछित फल नहीं दे पाती। अध्यापकों का कहना है कि न तो नीति बनाते समय और न क्रियान्विति के समय उससे सलाह ली जाती। उनके सामने तो बने-बनाये नियम हैं, कायदे हैं, आचार संहिताएं हैं, और बंधे-बंधाये कालांशों में छात्र-छात्राओं की बेकाबू भीड़ होती है, ऐसे में वे क्या करें?

ये प्रश्न उठते रहे हैं और उठते रहेंगे। मेरी मान्यता है कि शिक्षा के काम में संलग्न लोगों को पारस्परिक दोषारोपण से बचते हुए एक ही दिशा में सोचना चाहिए कि वे अपने विवेक, श्रम और साधना से विद्यालय को विद्यालय कैसे बनाये रख सकते हैं। विद्यालय एक सजीव संस्था है, जहां बच्चों का चरित्र निर्माण होता है। यदि विद्यालय वास्तव में विद्यालय है-एक ऐसा स्थान जहाँ शिक्षक विद्यार्थियों में रुचि जाग्रत करके उसे सजीव संस्था बना दे, तो जाहिर है बच्चा वहां जाएगा, उससे लगाव महसूस करेगा, वहां की सृजनात्मक प्रवृत्तियों में रुचि लेगा, कुछ न कुछ ग्रहण करता रहेगा और जब वहां से निकल कर जाएगा तो वह श्रेष्ठ जीवन मूल्य और स्वस्थ्य मस्तिष्क लेकर निकलेगा। विद्यालय को विद्यालय बनाने का आग्रह करने के पीछे मेरा प्रयोजन यही है कि शिक्षक अपने दायित्व को समझते हुए बच्चों को ऐसा वातावरण दें कि जिससे विद्यालय बच्चों के लिए ही नहीं अभिभावकों और पूरे समाज के लिए प्रेरणा का केंद्र बन जाए।

कहा जाता है कि मंदिर की प्रतिष्ठा पुजारी की सघन व उत्कट आस्था पर निर्भर करती है। विद्यालयों के प्रति आस्था पैदा करने का काम शिक्षकों का है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक और विद्यार्थी के बीच स्वस्थ एवं रचनात्मक संबंध हो। फिर शिक्षक के पास होती है नयी-नयी प्रवृत्तियों और नवाचारों की अथाह सम्पदा, जिनसे वह विद्यार्थियों में न सिर्फ आकर्षण पैदा करता है, वरन् रोचक विधियों से शिक्षण-प्रक्रिया को जीता है। इस संबंध से राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षक को अपनी कल्पना शीलता और लचीली शिक्षण विधियों से काम करने की पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान की है। यदि शिक्षक स्वयं अपने शिक्षण-कार्य को गतिशील प्रक्रिया के रूप में ले तो निश्चय ही विद्यालय का वातावरण रुचिकर बनेगा और छात्रों को विद्यालयी-गतिविधियों में आनंद आने लगेगा।

शिक्षण को साधना के स्तर पर लेने की जब आज कमी नजर आ रही है तो जाहिर है शिक्षण की गुणवत्ता तो बाधित होगी ही, विद्यालय की साख पर भी असर पड़ेगा। विद्यालयों और शिक्षकों की साख इसी बात पर निर्भर है कि वे बालकों से आकर्षण बनाये रखें और बालकों को स्वयं यह महसूस हो कि वे घर जैसे ही ऐसे स्थान पर है जहां उनके विकास की चिंता करने वाले घर जैसे ही समर्पित लोग मौजूद है।

-पुरानी जेल सदर के सामने, बीकानेर-334001

शिक्षक

शिक्षक दिवस : शिविरा परिचर्चा

मिट्टी की तासीर, बीज की ताक़त और मौसम के रुख से वाक़िफ़ होता है

❑ प्रस्तुति : प्रकाश पंड्या

किसी तीर्थ यात्रा अथवा कि शिवाएत की मानिंद मुझे आज भी स्मृति में है वो बालपन जब तीसरी कक्षा में पढ़ते हुए मैंने पिताजी के साथ मौसम की पहली ही बारिश के बाद शांत के मुकुन्दी के आवास पर यह परामर्श लेने गए थे कि किस खेत में क्या बीज बपन किया जाए ?

लौटते समय राह में पिताजी से कौतूहलवश मैंने द्वारा पूछे प्रश्न के उत्तर में पिताजी ने जो कहा वो भी जेहन में किसी ऋचा की तरह अंकित है। मैंने पिताजी से पूछा था-"पिताजी क्या बीज चाहिए वह पूछने मुकुन्दी के पास आने का रहस्य बताइये ना ?

पिताजी का कालजयी जवाब था-"बेटा, एक 'शिक्षक' मिट्टी की तासीर,बीज की ताकत और मौसम के रुख से भली प्रकार वाकिफ होता है।"

शिक्षक इस सामर्थ्य का धनी तो आज भी है। हो सकता है इस ईश्वरीय ताकत को संरक्षित रख पाने वालों की संख्या कम अवश्य हुई हो, परन्तु हां, यह तो सच है कि मिट्टी, बीज और मौसम के विशुद्धात्मक सुमधुरम शिक्षकों के गंगा तट पर कुम्भ के जैसे ही दृश्य आबाद हैं।

शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों के संकल्प की पहचान करने के लिए शिविरा ने राज्य के विभिन्न भागों के शिक्षक महानुभावों से बातचीत की। आइये, शिक्षक दिवस के अवसर पर जानते हैं राज्य के प्रतिनिधि शिक्षक-शिक्षिकाओं से अपने सपने-अपने संकल्प उन्हीं की जुबानी-

1 रजनी शेखावत

प्रधानाध्यापिका/
चीफ रिसोर्स पर्सन
डिस्ट्रिक्ट सेन्टर फॉर इंग्लिश,
जोधपुर

मैं संकल्प लेती हूं कि-

बदलते परिवेश में अंग्रेजी की महत्ता बढ़ गई है। हमारे छात्रों को अंग्रेजी भाषा के अर्जन में काफी परेशानी होती है। अखिल भारतीय स्तर पर चयनित होकर जब अमरीकी विद्यालयों का मैंने दौरा किया तो गुणात्मक अंग्रेजी शिक्षण के कई आयाम देखे। नही गुणात्मकता हम अपने शिक्षकों को प्रशिक्षण व कार्यशालाओं द्वारा पहुंचाएंगे ताकि वे छात्रों में विदेशी भाषार्जन को आसान एवं आनन्ददायक बनाएं। हम अपने विद्यालयों में ऐसे छात्र तैयार करें जो न केवल अंग्रेजी भाषा के बारे में जानते हों बल्कि अपनी वास्तविक जिन्दगी में भाषा का प्रयोग करना भी जानें। जैसे वर्तमान का हम निर्माण करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा।

2 जयेश जैन

व्याख्याता हिन्दी
रा.उ.मा.विद्यालय
खान्दु कॉलोनी, बांसवाड़ा

मैं संकल्प लेता हूं कि-

अपने स्वभाव को ही संस्कार रूप देकर भावी पीढ़ी को नित नई दिशा में अग्रसित करने का प्रयास करूँगा। शिक्षा के प्रति प्रचलित व्यावसायिक नजरिये को व्यावहारिक बनाने का समाज हित में प्रयास करूँगा । व्यक्तित्व विकास से लेकर राष्ट्र विकास की दिशा में बढ़ने व बढ़ाने का प्रतिपल प्रयास करूँगा। शिक्षार्थी की पहचान व प्रतिष्ठा मुझसे नहीं बल्कि शिक्षार्थी से मेरी पहचान व प्रतिष्ठा बढ़े उस दिशा में सार्थक प्रयास करूँगा। अनुशासन, मर्यादा, परिश्रम, आदर्श, लगन, ईमानदारी जैसे शिक्षा जगत के उच्च मानवीय मूल्यों को शिक्षार्थी के साथ स्वयं के जीवन में स्थापित करने का प्रयास करूँगा।

शिक्षार्थी अपने जीवन में कभी अपनी कमजोरी का प्रदर्शन न करें उनमें ऐसी सकारात्मक सोच व क्षमता भरने का प्रयास करूँगा साथ ही उनके भविष्य में ही अपना भविष्य देखूंगा। मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ कि उसने मुझे शिक्षक के रूप में समाज की निर्णायक भूमिका निभाने का आशीष प्रदान किया।

मेरी मंजिल मेरे करीब है,
इसका मुझे 'अहसास' है।
गुमान नहीं मुझे इरादों पे अपने
ये मेरी 'सोच' और 'हौंसलो' का विश्वास है।

3 गोविन्द नारायण शर्मा

प्रधानाचार्य
रा. अन्य उ. मा. विद्यालय
आदर्श नगर, अजमेर

मैं संकल्प लेता हूं कि-

समाज में साधारणतया उपेक्षित समझे जाने वाले निःशक्तजनों दृष्टिबाधित के प्रति मान सम्मान आत्मीयता के भाव संवेदनशीलता, सहिष्णुता मानवोचित गौरव मदद करने की अन्तःस्थल से ईश्वर प्रेरित प्रेरणा कर्तव्य समझ कर सेवा का पुनीत कार्य करूं एवं मानव मन में यह दृढ़ मान्यता पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रतिष्ठित कर सकूं की दृष्टि बाधित मानव में एक सामान्य मानव से अधिक प्रतिभा, कुशाग्रता, प्रवीणता और सहृदयतायुक्त कार्य के प्रति निष्ठा, लगन एवं समर्पण भाव होता हैं । तभी तो वह चक्षुविहीन होकर भी इहलौकिक एवं पारलौकिक आत्मा एवं परमात्मा के गूढ़तम रहस्यों को अन्तःज्ञान के बल पर खोज पाये हैं जैसे की भक्तशिरोमणि सूरदास जी ने वैसा कृष्ण की मनोहारी बाल लीलाओं का नवनाभिराम

चित्रण अपने पदों में किया है ऐसा अन्यान्य कवियों की रचनाओं में दृष्टिगोचर नहीं होता। मैं कृत संकल्पित हूं कि मानव समाज के इन अभिन्न अंगों जिनमें अनुभूतिपरक क्षमताओं अकूत भण्डार है, को हेय दृष्टि से देखने के अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाकर मानव मात्र के लिए प्रेय समझा जावे, ऐसा करने एवं करवाने का मैं संकल्प अभिव्यक्त करता हूँ।

सूर सूर तुलसी ससि, उडगन केशव दास...

4 जसवंसिंह सिनसिनवार

प्राध्यापक भूगोल
रा.उ.मा.वि. सरसैना
तहसील वैर, जिला-भरतपुर

मैं संकल्प लेता हूं कि-

मेरे विद्यालय में अध्ययनरत प्रत्येक छात्र-छात्रा व्यसन मुक्त विशेष कर गुटखा सेवन न करे, इस हेतु मैं विशेष प्रयास करूंगा। सत्र पर्यंत प्रार्थना सभा में नैतिक विषय वस्तु तथा सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि विषयक गतिविधियों का नियमित संचालन करूंगा ताकि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके और प्रतियोगी परीक्षा के लिए वे स्वयं को तैयार कर सकें। प्रत्येक रविवार के अवकाश का दिन पौधरोपण और पेड़-पौधों की सुरक्षा में विद्यार्थियों का सहयोग लेकर उपयोग में लाऊंगा। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी के जन्म दिन पर विद्यालय परिसर और गांव की सरकार अधिकार क्षेत्र की खाली जमीन पर पौधे लगवाऊंगा तथा उसकी संपूर्ण सुरक्षा का जिम्मा छात्र-छात्राओं के सहयोग से स्वयं उठाऊंगा।

5 कय्यूम खान

वरिष्ठ अध्यापक
रा.बा.मा.वि. अकलेरा
जिला-झालावाड़

मैं संकल्प लेता हूं कि-

वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकि विधा का है। मैं मेरे विषय में विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को ई-लेसन में निपुण बनाकर उनमें इस विधा के प्रति गहरी रुचि और गहन रुझान पैदा करूंगा।

क्रियेटिव टीचर ऑफ राजस्थान के पवित्र उद्देश्य और छात्र हित की भावना को प्रदेश स्तर पर स्थापित करते हुए मुझ में निहित तकनीकि कौशल तथा कंप्यूटर ज्ञान सहित ई-कंटेंट से पूरे राज्य के विद्यार्थियों को लाभान्वित करने के लिए निरंतर और नियमित प्रयत्नशील रहूंगा।

6 रोहिताश्व शुक्ल

अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
मम्मड़खेड़ा, जिला गंगानगर

मैं संकल्प लेता हूं कि-

मैं महात्मा गांधी के सपने को साकार करने हेतु विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ-साथ हस्तशिल्प में दक्ष बनाऊंगा ताकि वे शिक्षित बेरोजगार के स्थान पर परिवार व समाज को आर्थिक सम्बल दे सकें। विद्यालय का वातावरण अभिरुचिपूर्ण, आनन्ददायक व उच्च प्रौद्योगिकीयुक्त बनाकर उसे विश्वस्तरीय श्रेणी का बनाऊंगा। शैक्षिक उन्नयन हेतु गठित व कृतसंकल्पित सीटीओआर जैसे साझा मंचों को और सुदृढ करूंगा ताकि शिक्षक व विद्यार्थी अपने श्रम, समय व धन की बचत कर उनका सदुपयोग अपने व समाज के उत्थान में कर सकें।

7 श्वेता श्रुवला

अध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि. गोपालपुरा देवरी
जिला-बरपुर

मैं संकल्प लेती हूं कि-

प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को रुचिकर शिक्षण के लिए टीएलएम मद में उपलब्ध शिक्षण सहायक सामग्री का अध्यापन के दौरान नियमित उपयोग करूंगी। मिड डे मिल योजना अंतर्गत छात्र-छात्राओं को दिए जाने वाले दोपहर के भोजन की गुणवत्ता की परख भोजन बनने से पूर्व, निर्माण के दौरान और भोजन बनने के बाद छात्र-छात्राओं के भोजन करने से पूर्व नियमित रूप से करूंगी।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम अंतर्गत अभावग्रस्त तथा दुर्बल परिवारों की बस्ती में जाकर इस अधिनियम का अधिकाधिक लाभ पहुंचाने के लिए अभिभावकों से संपर्क कर उनके पुत्र-पुत्रियों को निकटवर्ती विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रेरित करूंगी तथा नामांकन के बाद उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा सुनिश्चित होने तक ठहराव सुनिश्चित करने में समन्वयक की सक्रिय भूमिका निभाऊंगी।

8 मनमोहन दाधीच

सहायक परियोजना समन्वयक
सर्व शिक्षा अभियान
सवाईमाधोपुर

मैं संकल्प लेता हूँ कि-

समस्त बालक-बालिकाओं को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने हेतु निरन्तर प्रयास करता रहूँगा। समस्त बालिकाओं को नवीन तकनीक से शिक्षण कार्य करवाने हेतु सदैव तत्पर रहूँगा।

समस्त अध्यापकों को नवाचार करने हेतु तथा प्रभावशाली शिक्षण हेतु सदैव प्रेरित करता रहूँगा। समस्त बालक-बालिकाओं को गुणवत्तायुक्त शिक्षण प्रदान करने हेतु नवाचार करता रहूँगा। समस्त संस्था प्रधानों को उत्कृष्ट विद्यालय प्रबन्धन हेतु नवीन तकनीक उपलब्ध करवाने का प्रयास करता रहूँगा। आई.सी.टी. योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु सतत् प्रयत्न करता रहूँगा। परिवीक्षण, अवलोकन एवं फीडबैक के माध्यम से योजना के सफल क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग करता रहूँगा।

9 ओम प्रकाश फगेड़िया

प्रभारी डी.सी.टी.सी. एवं
प्राध्यापक, भौतिक विज्ञान
रा.बागला उ.मा.वि., चूरू

मैं संकल्प लेता हूँ कि-

भौतिक विज्ञान विषय अध्यापन के अतिरिक्त विभाग द्वारा मुझे चूरू जिला कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र के जिला प्रभारी के रूप में दी गई महती जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा से निर्वहन करते हुए मैं चूरू जिले में संचालित कम्प्यूटर साक्षर ग्राम योजना को मूर्त रूप देते हुए पूरे प्रदेश के आई.सी.टी. जनित विद्यालयों में डिजिटल सहेली तथा डिजिटल युवा कोर्स के साथ-साथ आर.एस-सीआईटी पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन से राज्य के विद्यार्थियों को लाभान्वित करूंगा।

राज्य सरकार एवं निदेशालय के उद्देश्यों

की पूर्ति में प्रेरक और सहायक की भूमिका निभाते हुए राज्य के मॉडल केन्द्र डी.सी.टी.सी. चूरू को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान स्थापित करने में समर्पित भाव से कार्य करूंगा।

10 डी. कविता

प्राध्यापक-अंग्रेजी
रा.बा.उ.मा.वि. निम्बाहेड़ा
जिला-चित्तौड़गढ़

मैं संकल्प लेती हूँ कि-

आई.सी.टी., सी.टी.ओ.आर. और लैंगवेज लैब के माध्यम से प्रदेश के विद्यालयों में शिक्षण की नवीनतम विधा से अधिकतम शिक्षक और विद्यार्थी लाभान्वित हों। विद्यार्थी, शिक्षक और कार्यालयी कार्य में तकनीकी सहायता एवं मार्गदर्शन के पवित्र उद्देश्य की बुनियाद पर गठित सी.टी.ओ.आर. के सहयोग से प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में ई-कन्टेन्ट से युक्त कक्षा तथा पेपर लैस कार्यालय की संकल्पना को साकार करूंगी।

11 मो. फारूक चौहान

व्याख्याता,
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल
बीकानेर

मैं संकल्प लेता हूँ कि-

बस अब सेवानिवृत्त होने को ही हूँ। राजकीय नियम-कायदों के अनुसार औपचारिक सेवानिवृत्ति हो जाएगी मगर मैं कर्मनिवृत्त न होकर स्वयं को और अधिक सेवा प्रवृत्त बना दूँगा। सेवानिवृत्ति कर्म-निवृत्ति नहीं है बल्कि यह तो और अधिक कर्म करने की प्रेरणा देने वाली होनी चाहिए। अब मेरे लिए राजकीय औपचारिकताओं का बंधनपाश नहीं होगा। समय व सामर्थ्य का नियोजन अपने ढंग से कर सकूंगा। अतः अभिभावकों से सम्पर्क कर अधिक से अधिक बालक-बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित करवाने, नामांकितों का ठहराव सुनिश्चित करने के लिए मैं प्रयास करूँगा। विज्ञान के चमत्कार एवं अन्धविश्वासों से मुक्त समाज की रचना के लिए सदैव प्रयत्नरत रहूँगा। मेरा जीवन शिक्षा को समर्पित रहे तथा मैं अपने विद्यार्थियों के हित में कुछ कर सकूं, बस यही अभिलाषा है। मेरा तो संकल्प है ही। साथ ही अल्लामियां से प्रार्थना है कि मुझे यह सब कर सकने की क्षमता व योग्यता प्रदान करे।

12 भगवानाराम डेडू

सेवानिवृत्त शिक्षक
नोखा मण्डी, बीकानेर

मैं संकल्प लेता हूँ कि-

शिक्षक के रूप में राजसेवा का एक बड़ा अध्याय पूर्ण कर सेवानिवृत हुए एक लम्बा अर्सा हो गया है। सेवानिवृत्ति के इन वर्षों में शायद ही कोई क्षण आया हो जब मैं, मेरे में बैठे शिक्षक को भूला हूँ। मैं शिक्षक हूँ, मैं शिक्षामय हूँ, शिक्षा ही मेरा सब कुछ है। शिक्षा और शिक्षक से ही मेरा वजूद है। यह भाव स्थाई रूप से मेरे भीतर में घर किया हुआ है। शिक्षा से ही मेरा आदर और स्थान (Regard and dignity) है। शिक्षा से ही यह सब कुछ है जिसे मेरा कहा जाता है (मैं नहीं कहता)। मैं शिक्षक हूँ और मुझे अपने शिक्षकपन पर नाज है। जिसने हमें अस्तित्व, पहचान और मान-सम्मान (Honour and Resources) दिया हो, उससे दुराव का सोचना पाप है। मेरा तो मानना है कि यह असम्भव भी है। शिक्षक यदि स्वतंत्र शिक्षक न होकर किसी व्यवस्था (राजकीय/गैर राजकीय) का अंग है तो उस व्यवस्था से उसकी सेवानिवृत्ति हो सकती है। शिक्षक रूप से नहीं, कभी नहीं। हमने शुरु से ही यह सुना है- Once a teacher is always a teacher मेरा तो मानना है कि शिक्षक मर कर भी अमर रहता है। कारण उसका शरीर भले ही नहीं रहता है मगर शिक्षाएँ तो रहती है। यह है शिक्षा, शिक्षण व शिक्षक ही ताकत जिस पर हमें प्राउड होना चाहिए।

शिक्षक व्यवसाय अद्वितीय व बेनजीर है। किसी भी अन्य व्यवसाय से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह सबसे ज्यादा सम्माननीय व्यवसाय है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब राष्ट्रपति पद का टेन्योर पूर्ण कर राष्ट्रपति भवन से विदा हो रहे थे, तब उनसे यह पूछा गया कि वे अब क्या करेंगे और उन्हें क्या कह कर सम्बोधित किया जाना चाहिए। ध्यान दें, उन्होंने क्या कहा। उन्होंने कहा कि वे अब शिक्षण कार्य करेंगे तथा उन्हें प्रोफेसर (यानी शिक्षक) कलाम कह कर पुकारा जाए। कितने मान की बात है शिक्षकों के लिए। राष्ट्रपति न कहलाकर शिक्षक कहलाना पसन्द करते हैं। इसे राष्ट्रपति से शिक्षक बनना कह सकते हैं।

आज के शिक्षकों की योग्यता व क्षमता का तो कहना ही क्या। बड़े अद्भुत हैं वे। हमारी पीढ़ी के शिक्षकों की तुलना में उनकी बुद्धि, कौशल एवं शैक्षणिक-प्रशैक्षणिक योग्यताएं निसंदेह अधिक है। वे अच्छा काम कर रहे हैं। उन्हें और अच्छा काम करना है। मेरी शिक्षक दिवस पर उनसे प्रार्थना है कि अग्रलिखित दस प्रतिज्ञाओं को वे प्रतिदिन दोहराएं। देखिए आपमें बल सचरण होता है या नहीं।

1. मैं शिक्षक हूँ और मुझे शिक्षक होने पर गर्व है।
2. मैं शिक्षकीय गरिमा की रक्षा करने के लिए हर समय उद्यत रहूँगा।
3. मैं समय की पाबन्दी और अनुशासन की सदैव पालना करूंगा।
4. विद्यार्थी मेरे बच्चों के समान है। उनकी खुशहाली के लिए मैं कोई कसर नहीं रखूंगा।
5. विद्यालय मेरे लिए मन्दिर और विद्यार्थी देवतुल्य है। अतः शिक्षण मेरे लिए देव पूजा होगी।
6. मैं निरंत अध्ययन कर अपने ज्ञानधन में वृद्धि करूंगा तथा उसे अपने विद्यार्थियों में स्नेहपूर्वक बाटूँगा।
7. मैं विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास के लिए खेलकूद, सांस्कृतिक एवं राष्ट्र एवं समाजोपयोगी कार्यक्रमों के प्रभावी आयोजन में भागीदार बनूंगा।
8. मैं समाज के साथ मधुर सम्बन्ध रखूंगा जिसका लाभ शिक्षक बिरादरी, विद्यालय और विभाग को मिलेगा।
9. मैं पर्यावरण संवर्द्धन के लिए सघन वृक्षारोपण कर उनकी रक्षा करूंगा।
10. मैं वन्य जीवों, खग-मृग, समस्त प्राणी मात्र की रक्षा करने के लिए सदैव तैयार रहूंगा।

-कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, बांसवाड़ा
मो. 9414101857

हिन्दी दिवस-संकल्प दिवस

हिन्दी-देश की धड़कन : आवाज है, आगाज है

❒ रामगोपाल राही

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसका महत्व कम आंकना इसकी छवि धूमिल करना है। सही मायने में राष्ट्रभाषा हिन्दी से हम सबको अपनत्व होना चाहिए। हम अपने आपसे पूछें-राष्ट्र भाषा का महत्व कम आंकना, इसे समृद्ध न करना, क्या हमें हमारी अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठावान होना दर्शाता है? प्रत्युत्तर में आप कुछ भी कहें, पर राष्ट्रीय भावना जज्बा एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान आप में है, ऐसे में निश्चित ही प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र व राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति निष्ठावान होना ही चाहिए।

वस्तुत: हिन्दी वह भाषा है, जिसे संतों का आशीर्वाद मिला, जनता का समर्थन और प्यार मिला, पर शासन के ढंग-प्रणाली में हिन्दी से विमुखता ही बनी रही। यह कथन है हिन्दी के क्रांतिकारी एवं राष्ट्रभक्त साहित्यकार पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी का। आज भारत के अतिरिक्त विश्व के अनेकानेक देशों में वहां के शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन किसी न किसी स्तर तक हो रहा है, यह हमारे लिए गर्व की बात है। जब भारत स्वतंत्र हुआ था तो विभिन्न देशों के लोगों की यह लालसा थी कि इतने बड़े देश से जुड़ने के लिए हिन्दी भाषा माध्यम बनेगी, उनकी इस धारणा को भी बहुत बड़ी ठोस पहुंची है। हिन्दी आज भी परायी भाषा के प्रचलन के चलते अपने ही देश में वर्चस्वहीन सी नजर आती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उदासीनता की पराकाष्ठा आए दिन देखने को मिलती है। देश में आने वाले विदेशी शासक, शासनाध्यक्ष का स्वागत अंग्रेजी भाषा में बोल के किया जाता है। आगन्तुक अपने राष्ट्र की भाषा बोलते हैं और हमारे लोग खिसियाकर उनसे अंग्रेजी में बात करते हैं। लगता है। हमारी भाषायी पहचान लुप्त व गुम हो गयी। अपने ही देश में अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के तिरस्कार को कौन नहीं देखता, कौन नहीं जानता? राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश के राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभालते ही यह अनुभव किया था, यदि हिन्दी को जनता की भाषा बना दिया जाए तो राष्ट्रीय आंदोलन को बल मिलेगा। उन्होंने 1919 के प्रथम सत्याग्रह में अपना व्याख्यान और सत्याग्रह सम्बन्धी नीति की घोषणा हिन्दी में ही की, फलत: उनकी इस घोषणा मात्र से ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को काफी समर्थन और बल मिला। राजर्षि टंडन जी ने तो हिन्दी के प्रश्न को ही स्वराज का प्रश्न बना दिया था। साथ ही यह भी माना जाता है कि अंग्रेज शासकों ने भी हिन्दी के महत्व को स्वीकार कर फारसी की तुलना में हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर ही अधिक बल दिया था। परन्तु देश में आज हिन्दी की स्थिति विपरीत नजर आती है, अस्मिता व सांस्कृतिक एकता को जगाने वाली जननी जन्मभूमि की भाषा हिन्दी-अंग्रेजी की बढ़ती भीड़ में गुम सी है,फलत: हिन्दी राष्ट्र भाषा होते हुए भी राष्ट्र भाषा नजर नहीं आती।

याद करें सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन 2003 में कहा गया था हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने के लिए दृढ़ता पूर्वक प्रयास करना होगा। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सूरीनाम के राष्ट्रपति रोनाल्डो रोनाल्ड वेनेशियन ने बोलते हुए कहा था हिन्दी हमारे माई-बाप की भाषा है। उनके वंशज हम हिन्दी की हर बात से प्यार करते हैं। आज हिन्दी के वर्चस्व की सारी बातें राजनीतिक प्रपंचों से अपने अस्तित्व में आ ही नहीं पा रही। इससे पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीते जी कहा था, 'यदि हम अंग्रेजी के आदि नहीं हो गए होते, तो यह समझने में देर नहीं लगती कि अंग्रेजी को अपनाने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कटकर दूर होगई है। हम अपने ही लोगों से अलग हो गए हैं। हमारा आत्मिक व सामाजिक विकास रुक गया है। जो विरासत हमें बाप-दादा से मिली उसके आधार पर नव निर्माण करने के बदले हमने उस विरासत को भूलना सीखा। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनियां के इतिहास में नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक का विषय है। आज की सबसे प्रथम और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़ें तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी को निष्ठा से अपनावे।'

विडम्बना हमने हिन्दी को राष्ट्र भाषा का पद तो दिया, पर व्यवहारिकता से हम राष्ट्र भाषा हिन्दी का सम्मान कर नहीं पा रहे। हमें हमारे देश को जिन्होंने वर्षों तक गुलाम बनाए रखा, उन्हीं की भाषा को तरजीह दे रहे हैं। लगता है देश की पहचान व राष्ट्र के स्वाभिमान का हम अपने ही हाथों से गला घोंट रहे हैं। हिन्दी देश की धड़कन, हिन्दी जन-जन की आवाज, हृदय की वाणी हिन्दी के प्रति राष्ट्रपिता की राष्ट्रीय भावना को भी हमने भुला दिया है।

हिन्दी संदर्भों में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था, 'हमारे देश की अपनी भाषाओं के द्वार की मध्यम मणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।' आज भारत भारती की जगह अधकचरी अंग्रेजी-मम्मी, मॉम, डैडी, डैड, पेरेन्टस, मेमोरेबल, स्टूडेन्ट्स, सिलेक्शन आदि कई शब्दों की विदेशी भाषा मन-मानस में बैठती नजर आती है। हिन्दी की जगह यही लिखी गई तो अनर्थ ही अनर्थ है। यह अपने राष्ट्र की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति कुटिलता है। बात संभलने और संभालने की है, कर्तव्य व जिम्मेदारियों की है, समझने-समझाने की है। वस्तुत: हमारे रोज के कामों में व्यवहारों में शासन के ढंग प्रणाली में प्रशासन में तथा व्यक्तिगत व्यवहारों में हिन्दी ही हो। राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा देश के प्रति निष्ठा होती है। सोचा जाना चाहिए-विदेशी अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रचलन के चलते हिन्दी अपने ही देश में लुप्त प्रजाति की भाषा न बन जाए। राष्ट्र भाषा राष्ट्र एकता की मजबूत कड़ी होती है, इस बात को प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू ने अच्छी तरह समझा और समझाया था। उन्होंने एक नहीं कई बार कहा, हिन्दुस्तान में हिन्दी सामान्य भाषा और अन्तर्प्रान्तीय भाषा है तथा राष्ट्रीय कार्यों के लिए जरूरी है। यह वह भाषा है जो भारत को इकट्ठा करके एकता के सूत्र में बांधे रखेगी। इसके विपरीत आज हिन्दी के प्रति उदासीनता

स्पष्ट देखी जा सकती है। देखा जा सकता है विद्यालयों में भी अंग्रेजी को प्रथम कालांश में पढ़ाया जाता है, हिन्दी को अंतिम कालांश में, यह वस्तुतः हिन्दी के प्रति बेरुखी व उदासीनता का ही आलम है। अंग्रेजी हमारे लिए, इस देश के लोगों के लिए एक दुष्कर विषय है, तभी तो सबसे ज्यादा विद्यार्थी अँग्रेजी में फेल होते हैं, उनकी सोच, आंतरिक प्रतिभा कुंठित हो जाती है। डॉ. लूथर (जर्मनी) हिन्दी के महत्व को समझते हैं और कहते हैं-हिन्दी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता। एक हम हिन्द देश के हिन्दी भाषी, हिन्दी के महत्व को नकारते हैं और अपनी दिनचर्या में, बोलचाल में, व्यवहार में परायी विदेशी भाषा अंग्रेजी को अपनाते हैं। यह वस्तुतः अपनी हिन्दी के प्रति अपनों द्वारा क्रूर मजाक जैसा है। आज हिन्दी दबी दबी जैसी लगती है। विडम्बना कहें या कुछ और, आज गाँधी जैसा महापुरुष दिखाई नहीं देता, जो हिन्दी संदर्भों में हमारा सही मार्गदर्शन कर सके। सच है, होता है कभी कभी चमन में दीदावर पैदा ऐसे ही कभी मशहूर शायर डॉ. इकबाल ने कहा था, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। हिन्दी के प्रति उदासीनता देख लगने लगा है हमारी हस्ती मिटने लगी है।'

हिन्दी संदर्भों में बात हिन्दी पुरोधा भारतेन्दु जी की, वस्तुतः वह भविष्य दृष्टा रचनाकार थे। उन्होंने बिल्कुल सटीक लिखा था। निज भाषा उन्नति अहं सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल। सही मायने में समाज व राष्ट्र की उन्नति राष्ट्र भाषा के उत्थान व उन्नति पर ही देखी जा सकती है। हम इस बात को और भी अच्छी तरह समझने की कोशिश करते हैं। संसार के या यों कह दें संयुक्त राष्ट्र संघ के 193 सदस्य देशों में से अधिकांश देशों की अपनी-अपनी राष्ट्र भाषा है वह उसी को बोलते हैं। उनके सारे कामकाज, शासन व प्रशासन के काम तथा व्यवहार में भी अपनी ही भाषा काम में लेते हैं। वे बाहर भी जाते हैं तो भी अपने राष्ट्र की भाषा को ही प्राथमिकता देते हैं। बाहर विदेशी कामों में तो इनके साथ दुभाषिए तक होते हैं। सभी जानते हैं फ्रांस, इटली, जर्मनी, चीन, आस्ट्रिया, डेनमार्क, यूनान, नार्वे, हंगरी, हालैण्ड, रूस तथा इन जैसे और भी कई देश अपनी मूल भाषा राष्ट्र भाषा के साथ उन्नति विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है। कला, संस्कृति प्रशासन सब में उनकी अपनी भाषा होती है। स्पष्ट है अपनी भाषा के द्वारा ही अच्छा व बेहतर विकास संभव है। यह सब राष्ट्र इस बात को नकारते देखे जा सकते हैं कि कम्पलीटमेन अंग्रेजी ही बना सकती है। इधर हम गुलामी की बू दासता की बदबू अंग्रेजी को खुशबू समझने की निरन्तर भूल करते जा रहे हैं। हमारे कुछ लोगों की विकृत मानसिकता है कि अंग्रेजियत नहीं झलके तो जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा। आज नई पीढ़ी के आदर्शों में गाँधी, विवेकानंद, सरोजनी नायडू, श्रीनिवास, रामानुजम, मदर टेरेसा जैसे लोग नहीं रहे। आज की पीढ़ी के आदर्श तो अंग्रेजी संगीत धुनों की फूहड़ धुनों की नकल व अध नंगे पहनावे विदेशी लोग हो गए। पिछलग्गू नकलची लोग अपने देश व हिन्दी के महत्व को जाने तो कैसे? हमें समझना चाहिए हमारे समाज व देश का विकास उस तरह संभव नहीं हो सकता जिस तरह पश्चिम का विकास होता है। हमारा विकास तो राष्ट्र भाषा हिन्दी से लगाव के साथ ही होगा, देश की भाषायी नैसर्गिक सोच के साथ होगा। हमें आज देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी की विपरीत स्थिति से जूझना ही होगा।

हम समझें हिन्दी दिवस वस्तुतः अपनी भाषा का संकल्प दिवस है। इसके विपरीत प्रति वर्ष हिन्दी दिवस पर औपचारिकता का निर्वाह मात्र होता है। यह पर्याप्त नहीं, हमें यथार्थपरक ढंग से एकजुट हो सवाद के माध्यम से जन-जन में भाषायी चेतना जागृत करनी होगी तो बात बनेगी। हिन्दी दिवस दिखावटी न बने, इसके लिए हिन्दी में सोचना, हिन्दी में बोलना, हिन्दी में व्यक्तिगत कार्यों को करना, राजकाज में अनिवार्यतः हिन्दी लागू करना और जीवन में हिन्दी को आत्मसातकर आज के दिन (हिन्दी दिवस) पर संकल्प लेना होगा। अंधे हो अंग्रेजी का पल्लू पकड़ने की आदत छोड़नी होगी। अंधानुकरण देश हित में नहीं। राष्ट्र में राष्ट्रभाषा हर प्रश्न का जवाब होती है। हमें एक बार फैसला तो करना ही होगा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी देश की आत्मा है। इसका सम्मान-आत्मा का सम्मान है। वस्तुतः हिन्दी देश की धड़कन है, आवाज है, हृदय की वाणी है व आगाज है।

-मोहल्ला गणेशपुरा वार्ड 4/5,
लाखेरी-323615 (बूंदी)
मो. 8239604477

कविता

हिन्दी हिन्दोस्तां की पहचान

जो है हिन्द देश की महिमा
भारत माँ के भाल की बिन्दी,
अभिव्यक्तन, लेखन, भाषण
सबका माध्यम है बस हिन्दी।

कोटि-कोटि जन को प्यारी
जो है सम्प्रेषण का आधार,
हिन्दी सहज, सर्वव्यापक
अरु सब भाषाओं का सार।

हिन्दी न्यारी, प्यारी, लाड दुलारी
हिन्दी हिन्दोस्तां की पहचान,
हिन्दी अमर, अक्षत और अटल
हिन्दी है हमारी आन-बान

हिन्दी है सहज, सरल इतनी
जितना माँ गंगा का पानी,
सब भाषाओं की सिरेपूज
ना इसका है कोई सानी।

हिन्दी भाषा हो लेखन की,
वाचन की अरु समझावन की,
हिन्दी जन-जन को प्रिय अति
हिन्दी हो भाषा शासन की।

-'जीवन अभी शेष है' से साभार

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2013

1. सत्र 2013-14 में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति के क्रम में।
2. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत सत्र 2013-14 में निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में।
3. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना कर्मचारी/अध्यापकों के कल्याणार्थ
4. शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2013 के अवसर पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ
5. अध्यापकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रित
6. पंचायती राज के शिक्षकों पर वित्त विभाग के आदेश की पालना के संबंध में
7. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण व अमुखीकरण शिविरों के आयोजन हेतु निर्देश

1. सत्र 2013-14 में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति के क्रम में।

● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर ● क्रमांक : शैप्रौवि/अज/विद्यालय प्रसारण/2013-14/767-1129 दिनांक : 15.7.2013 ● विषय : सत्र 2013-14 में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति के क्रम में।

महोदय, लेख है कि राज्य में 'विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम' का संचालन आकाशवाणी के माध्यम से कई वर्षों से इस विभाग द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का सत्र 2013-14 का वार्षिक पंचांग संलग्न कर आपको भिजवाया जा रहा है। कृपया सभी संस्था प्रधानों को निम्नलिखित निर्देशों के साथ सूचित करें तथा आप स्वयं भी इस कार्यक्रम की निरीक्षण के समय मॉनिटरिंग करें।

- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का वार्षिक पंचांग संलग्न है, जिसके अनुसार सभी विद्यालयों में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम सुनवाने की व्यवस्था हो।
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम वार्षिक पंचांग अनुसार विद्यालयी कार्य दिवसों में दोपहर 2.40 P.M. से 3.00 P.M. तक प्रसारित किया जाता है।
- कार्यक्रम को रिकॉर्ड कर भी विद्यार्थियों को सुविधा अनुसार सुनाया जा सकता है।
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के प्रभारी शिक्षक द्वारा अभिलेख संधारण किया जाय।
- प्रत्येक संस्था प्रधान द्वारा नियमानुसार राजकीय बजट/छात्र निधि/विद्यालय विकास समिति कोष अथवा किसी भामाशाह के माध्यम से टू-इन-वन/रेडियो की व्यवस्था की जाय।
- सत्रारम्भ वाकपीठ संगोष्ठियों में भी विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की जानकारी आवश्यक रूप से दी जाये।
- अधिकारियों द्वारा विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का परिवीक्षण भी अनिवार्यतः किया जाय।
- आप द्वारा विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की स्थिति प्रपत्र-1 में अंकित कर निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर को **30 सितम्बर 2013** तक अनिवार्यतः प्रेषित की जाय।
- प्रत्येक संस्था प्रधान द्वारा रेडियो पाठों की समीक्षा कर प्रतिक्रिया प्रपत्र-2 में अंकित कर निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर को प्रत्येक माह की 6 तारीख तक अनिवार्यतः प्रेषित की जाय।
- समस्त प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान इस कार्यक्रम को भी अपने मासिक निरीक्षण में अनिवार्यतः शामिल कर निरीक्षण प्रतिवेदन प्रति माह इस विभाग को भिजवावें साथ ही इस कार्यक्रम की जानकारी अपनी संस्था में आने वाले सभी संभागियों को देवें तथा निर्देशित करे कि वे अपने विद्यालय में इस कार्यक्रम को अनिवार्यतः सुनवावें।
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का मासिक पंचांग प्रतिमाह शिविरा पत्रिका में भी माह अनुसार प्रकाशित किया जाता है।

निदेशक ● शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान ● अजमेर।

प्रपत्र-1

जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक/माध्यमिक-प्रथम एवं द्वितीय) के लिए

जिले में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की स्थिति

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	उपकरणों की संख्या (चालू स्थिति में)		उपकरणों की संख्या (खराब स्थिति में)		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का संचालन (हाँ/नहीं)
		टू-इन-वन	रेडियो	टू-इन-वन	रेडियो	
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर जिला शिक्षा अधिकारी
(प्रारंभिक/माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय)
मय सील

प्रपत्र–2

(संस्था प्रधान के लिए)

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की समीक्षा

पत्रांक : ..... दिनांक : .....

नाम विद्यालय : ..... माह का नाम : .....

ब्लाक : ..... प्रभारी का नाम : .....

जिला : ..... पद : .....

क्र. सं.	प्रसारण तिथि	कक्षा	विषय	पाठ/वार्ता का शीर्षक	लाभान्वित संख्या		प्रतिक्रिया
					विद्यार्थी	शिक्षक	
1	2	3	4	5	6	7	8
				योग			

नोटः– प्रत्येक संस्था प्रधान यह सूचना निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर को प्रत्येक माह की 5 तारीख तक अनिवार्यतः प्रेषित करें।

हस्ताक्षर प्रभारी शिक्षक हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय सील

2. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत सत्र 2013–14 में निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में।

● राजस्थान सरकार ● स्कूल शिक्षा (ग्रुप–5) विभाग ● क्रमांकः प. 9(1) शि–5/10 पार्ट दिनांक 29.7.2013 ● विषय : निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत सत्र 2013–14 में निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि राज्य में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत असुविधाग्रस्त एवं कमजोर वर्ग के बालकों के निजी विद्यालयों में सत्र 2013–14 में प्रवेश के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम चलाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रवेश की अंतिम तिथि 16 जुलाई, 2013 थी। इस कार्य की मॉनिटरिंग, सत्यापन एवं फीस के पुनर्भरण के सम्बन्ध में सभी सम्बन्धित पक्षों के लिए निम्न दिशा निर्देश प्रसारित किये जाते हैं–

- प्रवेश की अंतिम तिथि से पूर्व किये गये प्रवेश एवं विभाग द्वारा पर्व निर्धारित प्रक्रिया के आधार पर किए गए प्रवेश ही मान्य होंगे।
- सत्र 2012–13 की भांति प्रवेशित बालकों का सत्यापन कार्य कराया जाएगा। सत्यापन में सही पाये जाने पर ही फीस के पुनर्भरण की कार्यवाही सम्पन्न होगी।
- शिक्षा विभाग द्वारा कार्य को व्यवस्थित रूप से सम्पन्न करने के लिए सॉफ्टवेयर निर्मित किया जा चुका है, जिसमें 29 जुलाई 2013 से डाटा एन्ट्री का कार्य सम्बन्धित विद्यालयों द्वारा किया जाएगा। यह डाटा एन्ट्री सत्र 2012–13 के प्रवेशित एवं आगामी कक्षा में क्रमोन्नत छात्र तथा सत्र 2013–14 में नवप्रवेशित छात्रों की होगी। डाटा एन्ट्री की अन्तिम तिथि 8 अगस्त, 2013 होगी।
- जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) एवं जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) अपने–अपने अधीन विद्यालयों में तत्काल सत्यापन कार्य करायेंगे तथा इस कार्य के लिए अपने कार्यालय में एक प्रभावी मॉनिटरिंग सेल का गठन करेंगे। इस मॉनिटरिंग सेल द्वारा ऑन लाईन डाटा एन्ट्री किये गये छात्रों/विद्यालयों की सूचियाँ नियमित रूप से डाउनलोड की जाएगी तथा सत्यापन दल गठित कर अविलम्ब सत्यापन कार्य कराया जाएगा।
- सत्यापन कार्य के लिए सम्बन्धित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) सत्यापन दलों का गठन करेंगे। सत्यापन दलों का गठन करते समय यह ध्यान रखेंगे कि प्रत्येक दल को आठ से दस विद्यालय सत्यापन के लिए आवंटित किये जाएं। सत्यापन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व इन दलों का आमुखीकरण सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी 15 अगस्त 2013 से पूर्व अनिवार्य रूप से करवायेंगे। निदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा बीकानेर सत्यापन प्रक्रिया के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश समय से पूर्व प्रसारित करेंगे।
- सत्यापन दल सत्यापन के समय सत्र 2013–14 के नव प्रवेशित छात्र एवं सत्र 2012–13 के प्रवेशित छात्र को वर्तमान में आगामी कक्षा में अध्ययनरत हैं, के सत्यापन का कार्य करेगा। दल द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि सत्र 2012–13 में प्रवेशित छात्रों की द्वितीय किस्त के भुगतान में बालक के ड्राप आउट होने के कारण यदि कोई अधिक राशि का भुगतान विद्यालय को हुआ है तो उस राशि के समायोजन के संदर्भ में भी अपने प्रतिवेदन में भी अपनी टिप्पणी अंकित करेगा।
- जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों में सत्यापन कार्य सम्बन्धित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से सम्पन्न करायेंगे एवं सत्यापन दल द्वारा सत्यापन प्रतिवेदन भी सम्बन्धित ब्लॉक कार्यालय में प्रस्तुत करने होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) अपने अधीन विद्यालयों में अपने स्तर पर सत्यापन दल का गठन कर सत्यापन कार्य करायेंगे तथा सत्यापन प्रतिवेदन भी उन्हीं के कार्यालय में जमा करायेंगे। ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) सत्यापन प्रतिवेदनों के आधार पर यदि आवश्यक हो तो डाटा एन्ट्री में आवश्यक संशोधन करेंगे।
- सत्यापन दल अपने प्रतिवेदन की एक प्रति सम्बन्धित विद्यालय को भी उपलब्ध करायेंगे जिसके आधार पर यह विद्यालय पुनर्भरण हेतु प्रस्ताव ऑन लाईन फीड करेंगे तथा इसकी हार्ड प्रति संस्था प्रधान के हस्ताक्षर सहित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) कार्यालय में जमा करायेंगे।
- सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सत्यापन का कार्य अनिवार्य रूप से **15 सितम्बर 2013** तक सम्पन्न हो जाए।
- डाटा एन्ट्री के आधार पर निदेशालय प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर द्वारा बजट आवंटन की कार्यवाही राज्य नियमों में निर्धारित तिथियों के अनुसार सम्पन्न की जाएगी।

उक्त निर्देश सभी सम्बन्धित को तत्काल प्रसारित करवायें। ● प्रमुख शासन सिचव ● स्कूल शिक्षा विभाग ● राजस्थान सरकार, जयपुर

3. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना कर्मचारी/अध्यापकों के कल्याणार्थ

● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कर्मचारी/अध्यापकों के कल्याणार्थ योजना ● हितकारी निधि :- हितकारी निधि कल्याणकारी योजना राज्य सरकार के आदेश क्रमांक एफ. 23/63/शिक्षा-ग्रुप-2/74 दिनांक 8.8.1975 केन्द्र द्वारा शुरू की गई जो कर्मचारियों के हितार्थ कार्य कर रही है। इस योजना का उद्देश्य यह है कि कल्याणकारी निधि का शिक्षा विभाग के सभी कर्मचारियों के लिये, जिसमें सभी श्रेणियों के अधिकारी, अध्यापक-लिपिक वर्गीय कर्मचारी एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को निम्नांकित परिस्थितियों में सहायता दी जा सके-अपने कर्तव्यों को पूरा करने में अशक्त एवं असमर्थ होने पर सहायता।

1. सेवा में रहते हुए मृत्यु के पश्चात् आश्रितों को सहायता।
2. व्यावसायिक शिक्षा पर आर्थिक सहायता।
3. गंभीर बीमारी पर आर्थिक सहायता।

इस निधि में शिक्षा विभाग के सभी कर्मचारी अधिकारी, अध्यापक आदि राज्य सरकार द्वारा निर्धारित दर से अंशदान देंगे जिससे जरूरतमंद कर्मचारियों को सहायता दी जाती है।

कर्मचारी के निधन पर 7000 रु. एवं दुर्घटना में निधन हो जाने पर 10,000 रु. की सहायता दी जाती है। गंभीर प्रकृति की बीमारी पर 5000 रु. एवं व्यावसायिक शिक्षा पर 1500 रु. से 2500 रु. तक की सहायता दी जाती है।

कल्याणकारी योजना एक उपयोगी योजना है। इसे गंभीरतापूर्वक लेना है। जिससे शिक्षा विभाग के कार्मिकों को इसका लाभ मिल सके ऐसी व्यवस्था प्रभावी हो उप निदेशक (मंडल) जि.शि.अ. बीईओ प्रधानाचार्य प्रधानाध्यापक आदि को भी इस ओर ध्यान देना है एवं दिलचस्पी लेनी है। इस निधि में राशि की बढ़ोतरी होने पर ही सहायता राशि में बढ़ोतरी संभव है। यह अपील की जाती है कि हितकारी निधि में वार्षिक अंशदान राशि भिजवाते हुए अपना सहयोग प्रदान करें। वार्षिक अंशदान राशि का बैंक ड्राफ्ट निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर के नाम से बनवाकर भिजवाएं तथा इस योजना का विद्यालयों, कार्यालयों में प्रचार-प्रसार करावें। ● सचिव, हितकारी निधि ● माध्यमिक शिक्षा, राज., बीकानेर।

4. शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2013 के अवसर पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ

● राष्ट्रीय शिक्षा कल्याण प्रतिष्ठान ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● (शिक्षक दिवस 05 सितम्बर, 2013) ● क्रमांक : शिविरा-मा/राशिकप्र/31582/2013-14 दिनांक 04.07.2013 ● विषय : 1. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2013 के अवसर पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ करना। 2. संलग्न विवरणानुसार लक्ष्य की प्राप्ति हेतु धन संग्रह करवाना। 3. प्राप्त धन राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव-कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को भिजवाना।

महोदय/महोदया, माननीय डॉ. सर्व पल्ली राधाकृष्णन, भूतपूर्व राष्ट्रपति की जन्म तिथि 05 सितम्बर 2013 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने, समस्त शिक्षक समुदाय के प्रति समुचित आदर एवं सम्मान व्यक्त करने तथा शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह करने के लिए देश के समस्त नगरों, ग्रामों खण्डों, पंचायत समितियों एवं उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों (राजकीय/अराजकीय) के स्तर पर शिक्षक दिवस को उल्लास एवं शालीनता से पूर्व की भांति मनाया जावे।

1. **झंडियों का जिलेवार लक्ष्य के अनुसार धनराशि का संग्रह :** शिक्षक वर्ग के कल्याणार्थ विभिन्न योजनाओं का राष्ट्रीय स्तर पर संचालन करने हेतु झंडियों की बिक्री से धन राशि एकत्रित की जानी होती है। तद्विषयक शिक्षकों के कल्याणार्थ 36.00 लाख रुपये की धन राशि संग्रह किए जाने का जिलेवार संलग्न विवरणानुसार लक्ष्य निर्धारित किया गया है। शिक्षक कल्याण कोष में धन-संग्रह पूर्व मनोयोग एवं सम्पूर्ण प्रयास से एक अभियान के रूप में शिक्षक दिवस 05 सितम्बर से झंडियों की बिक्री का शुभारंभ कर 30.09.2013 तक शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह किया जाना है। तत्पश्चात् एकत्रित धन राशि सचिव, कोषाध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर को एकत्रित धन राशि का बैंक ड्राफ्ट भिजवाना प्रारम्भ कर दिया जावे।
2. **धन संग्रह हेतु शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक वर्ग व अन्यों का सहयोग :** लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा जगत के समस्त वर्ग के अधिकारी, व्याख्याता, अध्यापक, कर्मचारी एवं पंचायत समितियों के अधीन कार्यरत विद्यालयों के शिक्षकों (राजकीय/अराजकीय) छात्र/छात्रा से इस कार्य को सम्पन्न कराने, दानस्वरूप धन एकत्रित एवं अपना सम्पूर्ण योगदान करने हेतु निवेदन किया जावे ताकि धन संग्रह अधिकाधिक हो सके एवं लक्ष्य की प्राप्ति संभव होकर शिक्षकों के कल्याणार्थ अनेक अन्य योजनाएं प्रारम्भ हो सके।
3. **धन संग्रह हेतु अन्य सुप्रसिद्ध, संस्थाओं एवं दान-दाताओं का सहयोग :** 1. योजना की सफलता के लिए स्थानीय निकाय, चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, जर्नलिस्ट एसोसिएशन, शिक्षक संघों, पत्रकार बन्धुओं एवं संघों, अन्य विशिष्ट जन-समुदाय एवं व्यक्तियों से शिक्षकों के कल्याणार्थ धन-संग्रह के लिए सहयोग प्राप्ति हेतु बैठकों का आयोजन कर निवेदन किया जावे ताकि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके एवं इन्हें इस अवसर की उपादेयता तथा कार्यक्रमों की जानकारी हो सके। 2. स्वेच्छा से चन्दा एवं दानदाताओं से दान स्वरूप धन-संग्रह हेतु औद्योगिक प्रतिष्ठानों/उद्योगपतियों की कार्यक्रमों की जानकारी सहित उदारता से दान का सहयोग करने हेतु व्यक्तिशः एवं इनके संगठनों से निवेदन करना। दान की कोई सीमा नहीं है। ऐसे दानदाताओं का नाम एवं पता एवं राशि के उल्लेख सहित अलग से पत्र प्रेषित करें ताकि धन्यवाद का पत्र प्रेषित किया जा सके।
4. **योजना की सफलता हेतु कार्यक्रमों का आयोजन :** धन संग्रह हेतु इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाना आवश्यक है ताकि समाज में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की जानकारी परिलक्षित हो सके। ऐसे कार्यक्रमों

में किसी भी सम्माननीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों को आमंत्रित किया जा सकता है।

5. **धन संग्रह हेतु प्रचार, प्रसार, सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन** : जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) अपने जिले में एवं संस्था प्रधान उच्च माध्यमिक/माध्यमिक /उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों में उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी निम्नानुसार आयोजित करें–
   1. प्रेस को तथा अन्य विशिष्ट स्थानों पर वर्णनात्मक पोस्टरों, सिनेमा स्लाइडों, दूरदर्शन, टेलिविजन, अखिल भारतीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करवाना।
   2. केन्द्र सरकार से प्राप्त पोस्टर्स का वितरण। पोस्टर को दृष्टिगत एवं उचित स्थान पर लगाया जावे।
   3. सिनेमा मालिकों/प्रदर्शकों से 05 सितम्बर को एक शो की आय राष्ट्रीय कल्याण प्रतिष्ठान के लिए दान करने का अनुरोध करना।
   4. राजकीय/अराजकीय शिक्षण संस्थाओं सहित विभिन्न संगठन, शिक्षकों द्वारा उत्कृष्ठ एवं सराहनीय कार्य करने वालों को सम्मानित करने जैसे विशेष समारोह आयोजित किए जा सकते हैं। जिसमें शिक्षकों को भावी पीढ़ी के निर्माण के रूप में प्रकाश डालने उनके जीवनवृत्त, योगदानों तथा दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं संगोष्ठियों आदि के आयोजन किए जावें।
   5. सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, संगोष्ठियाँ, खेल-कूद प्रतियोगिताएं, मैत्रीपूर्ण क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, खो-खो आदि कार्यक्रमों का आयोजन।
   6. सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षा संघों, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षक दिवस से एक या दो दिन पूर्व विशेष मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करवाकर कोष के लिए धन संग्रह करवाना।

6. **शिक्षकों के कल्याणार्थ एवं प्रतिष्ठान के लिए धन-संग्रह हेतु उत्तरदायित्व** : समस्त उप निदेशक, (माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा), समस्त जिलों के शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा, राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में झंडियों का वितरण करवाकर शिक्षकों के कल्याणार्थ शिक्षक दिवस दिनांक 05.09.2013 को झंडियों की बिक्री कर शुभारंभ कर धन-संग्रह करवाना। धन संग्रह किए जाने एवं शिक्षक दिवस 5 सितम्बर के समस्त कार्यक्रमों को शालीनता एवं पूर्ण उत्साह से सम्पन्न कराये जाने तथा प्रतिष्ठान के लिए अपना सम्पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने की कार्यवाही करना।

7. **झंडियों का मूल्य, वितरण व्यवस्था एवं लक्ष्य अनुसार धन संग्रह :**
   1. झंडियों की बिक्री मूल्य 2/- (दो रुपये) निर्धारित की गई है।
   2. राज्य में जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा जयपुर द्वितीय द्वारा सीधे ही जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) को झंडियों का वितरण किया जावेगा।
   3. जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अपने अधीनस्थ राजकीय/अराजकीय उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में झंडियों का वितरण करेंगे तथा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार मार्गदर्शन एवं धन-संग्रह करवायेंगे। झंडियों के विक्रय से विद्यालयों द्वारा संग्रहित धनराशि संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा एकत्रित की जावेगी तथा उस धनराशि का एक ही ड्राफ्ट निदेशालय में भिजवावें। ध्यान रखें कि विद्यालय स्तर से सीधे ही निदेशालय को ड्राफ्ट नहीं भिजवावें।
   4. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा) अपने अधीनस्थ ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/प्रा./उप्रा. (राजकीय/अराजकीय) विद्यालयों से धन-संग्रह हेतु मार्गदर्शन देंगे तथा धन संग्रह करवायेंगे एवं झंडियों के विक्रय से एकत्रित राशि का इकजाई बैंक ड्राफ्ट निदेशालय को भेजें।

8. **झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि कहां से और किसको कैसे भेजी जावे** : कृपया झंडियों की बिक्री एवं अन्य आयोजनीय कार्यक्रमों से प्राप्त धन राशि का बैंक ड्राफ्ट राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर (NATIONAL FOUNDATION FOR TEACHERS WELFARE FUND SEC.EDU.RAJ., BIKANER) के नाम से बनाकर प्रेषित करें। अतः हम समस्त का उत्तरदायित्व है कि 5 सितम्बर शिक्षक दिवस को पूर्व शालीनता एवं उत्साह पूर्वक मनावें एवं इस कल्याणकारी योजना में अधिक से अधिक झंडियों की बिक्री कर (राजकीय/अराजकीय संस्थाओं से) धनराशि जुटाने हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

नोटः 1. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा जो झंडियों में विक्रय हेतु वितरण की जाती हैं उस विक्रय से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट विद्यालयों द्वारा सीधे ही निदेशालय भेजे जाते थे के क्रम में निर्देशित किया जाता है कि अब उक्त एकत्रित धन राशि निदेशालय को विद्यालयों द्वारा सीधे न भेजी जाकर जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर संग्रहित कर जिले का एक ही बैंक ड्राफ्ट बनाकर निदेशालय को प्रेषित किया जावे।

2. बैंक ड्राफ्ट भिजवाने हेतु पता-सचिव कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

भवदीय ● उप निदेशक (प्रशासन) ● राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, बीकानेर
राजस्थान राज्य के लिए धन संग्रह हेतु जिलेवार लक्ष्य
माध्यमिक शिक्षा हेतु

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा)	आवंटित झंडियां	आवंटित राशि (लक्ष्य निर्धारित)
1. चूरू मण्डल		
बीकानेर	35,000	70,000/-
चूरू	30,000	60,000/-
श्री गंगानगर	35,000	70,000/-

हनुमानगढ़	30,000	60,000/-
झुंझुनूं	45,000	90,000/-
योग	**1,75,000**	**3,50,000/-**
2. जयपुर मण्डल		
जयपुर (प्रथम)	37,500	75,000/-
जयपुर (द्वितीय)	37,500	75,000/-
अलवर (प्रथम)	27,500	55,000/-
अलवर (द्वितीय)	27,500	55,000/-
सीकर (प्रथम)	27,500	55,000/-
सीकर (द्वितीय)	27,500	55,000/-
दौसा	25,000	50,000/-
योग	**2,10,000**	**4,20,000/-**
3. उदयपुर मण्डल		
उदयपुर (प्रथम)	25,000	50,000/-
उदयपुर (द्वितीय)	25,000	50,000/-
चित्तौड़गढ़	15,000	30,000/-
बांसवाड़ा	20,000	40,000/-
डूंगरपुर	15,000	30,000/-
राजसमन्द	15,000	30,000/-
प्रतापगढ़	12,500	25,000/-
योग	**1,27,500**	**2,55,000/-**
4. भरतपुर मण्डल		
भरतपुर (प्रथम)	22,500	45,000/-
भरतपुर (द्वितीय)	22,500	45,000/-
सवाईमाधोपुर	22,500	45,000/-
करौली	22,500	45,000/-
धौलपुर	15,000	30,000/-
योग	**1,05,000**	**2,10,000/-**
5. जोधपुर मण्डल		
जोधपुर	55,000	1,10,000/-
पाली	30,000	60,000/-
बाडमेर	17,500	35,000/-
जालौर	17,500	35,000/-
सिरोही	17,500	35,000/-
जैसलमेर	7,500	15,000/-
योग	**1,45,000**	**2,90,000/-**
6. कोटा मण्डल		
कोटा	50,000	1,00,000/-
बूंदी	15,000	30,000/-
झालावाड़	15,000	30,000/-
बारां	15,000	30,000/-
योग	**95,000**	**1,90,000/-**
7. अजमेर मण्डल		
अजमेर (प्रथम)	27,500	55,000/-
अजमेर (द्वितीय)	27,500	55,000/-
नागौर (प्रथम)	20,000	40,000/-
नागौर (द्वितीय)	20,000	40,000/-
भीलवाड़ा (प्रथम)	17,500	35,000/-
भीलवाड़ा (द्वितीय)	15,000	30,000/-
टौंक	15,000	30,000/-
योग	**1,42,500**	**2,85,000/-**

उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

प्रारंभिक शिक्षा हेतु

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा)	आवंटित झंडियां	आवंटित राशि (लक्ष्य निर्धारित)
1. चूरू मण्डल		
बीकानेर	30,000	60,000/-
चूरू	30,000	60,000/-
श्री गंगानगर	35,000	70,000/-
हनुमानगढ़	25,000	50,000/-
झुंझुनूं	40,000	80,000/-
योग	**1,60,000**	**3,20,000/-**
2. जयपुर मण्डल		
जयपुर	70,000	1,40,000/-
अलवर	35,000	70,000/-
सीकर	35,500	70,000/-
दौसा	20,000	40,000/-
योग	**1,60,000**	**3,20,000/-**
3. उदयपुर मण्डल		
उदयपुर	30,000	60,000/-
चित्तौड़गढ़	17,500	35,000/-
बांसवाड़ा	10,000	20,000/-
डूंगरपुर	10,000	20,000/-
राजसमन्द	10,000	20,000/-
प्रतापगढ़	10,500	20,000/-
योग	**87,500**	**1,75,000/-**
4. भरतपुर मण्डल		
भरतपुर	30,000	60,000/-
सवाईमाधोपुर	15,000	30,000/-
करौली	15,000	30,000/-

धौलपुर	10,000	20,000/-
योग	**70,000**	**1,40,000/-**
5. जोधपुर मण्डल		
जोधपुर	40,000	80,000/-
पाली	35,000	70,000/-
बाडमेर	15,000	30,000/-
जालौर	15,000	30,000/-
सिरोही	15,000	30,000/-
जैसलमेर	5,000	10,000/-
योग	**1,25,000**	**2,50,000/-**
6. कोटा मण्डल		
कोटा	50,000	1,00,000/-
बूंदी	10,000	20,000/-
झालावाड़	10,000	20,000/-
बारां	10,000	20,000/-
योग	**80,000**	**1,60,000/-**
7. अजमेर मण्डल		
अजमेर	45,000	90,000/-
नागौर	30,000	60,000/-
भीलवाड़ा	25,000	50,000/-
टोंक	17,500	35,000/-
योग	**1,17,500**	**2,35,000/-**

उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

5. अध्यापकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रित

● राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/राशिकप्र/31590/2011-2012 दिनांक 29.7.2013 ● विषय : राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार द्वारा वर्ष 2011-12 हेतु राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रण। अन्तिम तिथि दिनांक 15.09.2013 ● भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान की योजनान्तर्गत व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत शिक्षा विभाग के अधीनस्थ राजकीय/ अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थना पत्र दिनांक 15.09.2013 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के पदनाम से आवश्यक रूप से प्राप्त हो जाने चाहिए ताकि जांचोपरांत प्रार्थना पत्र राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार नई दिल्ली को निर्धारित अंतिम तिथि से पूर्व भेजे जा सके। तत्पश्चात् प्राप्त प्रार्थना पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा और न ही कोई सूचना दी जायेगी। अतः तद्विषयक अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं करें। विशेष ध्यातव्य :- प्रार्थी द्वारा प्रार्थना पत्र भरते समय एवं सम्बन्धित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किये जायें-

1. यह योजना मात्र राजस्थान राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के बच्चे जो व्यावसायिक शिक्षा- इंजीनियरिंग, मेडिसिन एवं मैनेजमेंट, पाठ्यक्रम डिग्री/डिप्लोमा में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है:-

(अ) 4 वर्षीय अवधि का (8 सेमेस्टर) इन्जीनियरिंग पाठ्यक्रम निम्नांकित शाखाओं में : सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेलीकम्युनिकेशन, कम्प्यूटर विज्ञान, ऑटोमोबाईल एवं कैमिकल इंजीनियरिंग, आरकीट्रेक्चर, टेक्सटाईल, माईनिंग, रबर टेक्नोलॉजी, नेवल आरकीट्रेक्चर, पेट्रोलियम इंजीनियरिंग, फार्मेसी, प्रिन्टिंग, कैमिकल टेक्नोलॉजी, मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग, इन्स्ट्रूमेन्टेशन एवं कन्ट्रोल एवं एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग।

(ब) उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स (3 वर्ष से कम नहीं)

(स) मेडिकल कोर्स-ऐलापैथी, होमियोपैथी एवं आयुर्वेदिक, पशु चिकित्सा विज्ञान (वेटरीनेरी साईंस)

(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम बी-फार्म की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात् मैनेजमेन्ट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

3. प्रार्थना-पत्र की सभी प्रविष्टियाँ स्वयं अध्यापक/संस्था प्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 13 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटोस्टेट प्रतियाँ स्वीकार्य नहीं होगी। सम्पूर्ण भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा। यदि भुगतान की रसीद क्षेत्रीय भाषा में हो तो मूल रसीद के साथ उसका अंग्रेजी/ हिन्दी अनुवाद की प्रति राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित करवा कर संलग्न करें।
5. सत्र 2011-12 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें। यदि प्रमाण-पत्र क्षेत्रीय भाषा में हो तो मूल प्रमाण पत्र के साथ उसका हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद की प्रति राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित करवाकर संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एकमुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता राशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। अध्यापक के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र

2011-12 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।

8. अनुत्तीर्ण हो जाने वाले छात्र सहायता हेतु पात्र नहीं होंगे। इन्टर्नशिप अवधि के दौरान कोई सहायता देय नहीं होगी।
9. यह सहायता राशि केवल उत्तीर्ण छात्रों को ही देय होगी। ऐसे मामलों में जहां परिणाम घोषित नहीं हुआ है, सहायता देय नहीं है।
10. छात्र/छात्रा की उत्तीर्ण अंकतालिका की फोटो प्रति साथ में संलग्न करें।
11. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
12. सहायता राशि पूर्व के वर्षों में जिन्हें स्वीकृत नहीं हुई है, प्राथमिकता के आधार पर प्रथमतः उन्हीं को सहायता देय होगी।
13. भारत सरकार द्वारा प्रार्थना पत्र के आधार पर पात्रता की जांचोपरान्त राशि की स्वीकृति जारी की जावेगी। भारत सरकार से सहायता राशि प्राप्त होने पर ही देय होगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।
14. वित्तीय सहायता की राशि भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा ही स्वीकृत की जाती है। भारत सरकार द्वारा यदि राशि स्वीकृति नहीं की जाती है तो संस्था सहायता राशि हेतु जिम्मेदार नहीं है, जैसे ही भारत सरकार से सहायता राशि प्राप्त होगी तत्काल भिजवा दी जायेगी।
15. अपूर्ण प्रार्थना पत्र शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जावेगी।

कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों (राजकीय/अराजकीय) में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक अध्यापकगण इसका लाभ उठा सकें।

कृपया प्रार्थना पत्रों को संस्था प्रधान की अनुशंसा सहित दिनांक 15.09.2013 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के पदनाम से भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि जांचोपरांत भारत सरकार द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि तक प्रार्थना पत्र भिजवायें जा सकें।

● भवदीय ● उप निदेशक (प्रशासन) राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

6. पंचायती राज के शिक्षकों पर वित्त विभाग के आदेश की पालना के संबंध में

● कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा विभाग, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/प्रारं/पेंशन स्थिरी/12744 दिनांक :-13-8-13 ● पंचायती राज के शिक्षकों पर वित्त विभाग के आदेश एफ. 16(2) एफ.डी. (रूल्स) 98 दिनांक 20.08.10 व 18.11.10 की पालना के संबंध में।

दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से इस कार्यालय के ध्यान में आया है कि कई शिक्षा अधिकारी कार्यालयों द्वारा पंचायती राज के शिक्षकों पर वित्त विभाग के आदेश संख्या एफ. 16(2) एफ.डी. (रूल्स) 98 दिनांक 20.08.10 व 18.11.10 लागू नहीं किए जा रहे हैं। इस संबंध में स्पष्ट किया जाता है कि वित्त विभाग के आदेश संख्या एफ. 16(2) एफ.डी. (रूल्स) 98 दिनांक 29.06.2009, वित्त विभाग के आदेश संख्या एफ. 16(2) एफ.डी. (रूल्स)/98 दिनांक 20.08.10 व स्पष्टीकरण दिनांक 18.11.10 पंचायत राज के शिक्षकों पर भी लागू है।

वित्तीय सलाहकार, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

7. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण व अमुखीकरण शिविरों के आयोजन हेतु निर्देश

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/प्रकाशन/सीसीआरटी/2013-14 दिनांक 22.08.13 ● परिपत्र

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, (सीसीआरटी) नई दिल्ली शिक्षा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जाग्रति लाने वाला एक महत्वपूर्ण केन्द्रीय संस्थान है जिसके तत्वावधान में सेवारत शिक्षकों के लिए शिक्षा और संस्कृति से सम्बन्धित प्रशिक्षण एवं अमुखीकरण शिविर समय-समय पर देश के विभिन्न भागों में लगाए जाते रहते है। इन शिविरों के प्रभावी व सफल आयोजन के लिए निम्न निर्देश प्रसारित किए जाते हैं-

1. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले प्रशिक्षण शिविरा कों विस्तृत कलेण्डर जारी किया जाता है। इसे जिला व मण्डल कार्यालयों में अवश्य संधारित किया जाए। वर्ष 2013-14 का कलेण्डर शिविरा पत्रिका के मई-जून 2013 अंक (पृष्ठ 28-31) में भी प्रकाशित किया गया है तथा यह वेबसाइट www.ccrtindia.gov.in पर भी उपलब्ध है।
2. प्रत्येक प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उपयुक्त योग्यताधारी एवं रुचिशील शिक्षकों का विवरण कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ में रखा जाए ताकि समय पर उन्हें नामित किया जा सके।
3. प्रशिक्षण हेतु नामित करते समय सम्बन्धित शिक्षकों की आयु, विषय, पद उनके पदस्थापन विद्यालय के स्तर जैसी आवश्यक समस्त शर्तों की पूर्णतः पालना की जाए। यदि अपात्र शिक्षकों को नामित किया जाता है तो यह सम्बन्धित अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।
4. प्रशिक्षण हेतु नामित किए जाने पर सम्बन्धित शिक्षकों को आवश्यक रूप से कार्यमुक्त किया जाए। कार्यमुक्त नहीं किए जाने पर सम्बन्धित संस्था प्रधान तथा प्रशिक्षण में नहीं जाने पर सम्बन्धित शिक्षकों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।
5. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली से सम्बन्धित समस्त कार्यों एवं प्रशिक्षणों का रिकार्ड तथा शिक्षकों का प्रोफाइल शैक्षिक प्रकोष्ठ में रखा जाए ताकि सूचनाएं चाहे जाने पर अविलम्ब प्रस्तुत की जा सके। निरीक्षण के समय इसका अवलोकन अधिकारी को करवाया जाए।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षण/अमुखीकरण शिविरों का प्रभावी एवं सफल आयोजन सुनिश्चित करने के लिए उपर्युक्त निर्देशों की कड़ाई से पालना की जावे।

(डॉ. वीना प्रधान)
निदेशक
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान
बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा/माध्य/प्रकाशन/सीसीआरटी/2013-14 दिनांक 22.08.13

दो मन्दिर

❒ द्वारकेश भारद्वाज

प्रथम मन्दिर

एक शिल्पी ने एक मन्दिर बनाया, उसने पूर्ण चतुराई और कुशलता से मेहराबों, स्तम्भों एवं तोरणों का निर्माण किया, सारा निर्माण उसकी पूर्ण अभिलाषा के अनुरूप हुआ और लोगों ने उसकी सुन्दरता को देखा तो कहा–

यह कभी नष्ट नहीं होगा,
ओ शिल्पी! तेरी कुशलता महान् है
तेरी प्रसिद्धि अमर है।

द्वितीय मन्दिर

एक शिक्षक ने एक मन्दिर बनाया
उसने पूर्ण सतर्कता व
कुशलता से निर्माण किया,
प्रत्येक स्तम्भ को पूर्ण धैर्य से निर्मित किया,
प्रत्येक प्रस्तर को पूर्ण सावधानी से रखा,
किसी ने भी उसके निरंतर
प्रयास को नहीं देखा,
(क्योंकि) शिक्षक द्वारा निर्मित यह मन्दिर
मानव नेत्रों द्वारा अदृश्य था।

शिल्पी द्वारा निर्मित मन्दिर धूल धूसरित हो गया। मेहराबें स्तम्भ व तोरण काल कालवित हो गये। लेकिन शिक्षक द्वारा निर्मित मन्दिर शताब्दियों तक अक्षुण्ण बना रहेगा क्योंकि वह सुन्दर व अदृश्य बालक की आत्मा थी।

–बी–68, हवेली ज्ञानद्वार,
सेठी कॉलोनी, जयपुर–302004

माह : सितम्बर, 2013

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
2.9.2013	सोमवार	उदयपुर	9	हिन्दी	3	उपभोक्तावाद की संस्कृति
3.9.2013	मंगलवार	बीकानेर	4	विज्ञान	3	क्या खाएँ और क्यों
4.9.2013	बुधवार	जयपुर	7	विज्ञान	1	पादपों में पोषण
5.9.2013	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		शिक्षक दिवस
6.9.2013	शुक्रवार	उदयपुर	8	संस्कृत	4	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्
7.9.2013	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व साक्षरता दिवस
9.9.2013	सोमवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	2	संघवाद
10.9.2013	मंगलवार	जोधपुर	6	हिन्दी	6	पार नजर के (कहानी)
11.9.2013	बुधवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	4	वन्य समाज एवं उपनिवेशवाद
12.9.2013	गुरुवार	बीकानेर	9	हिन्दी	2	ल्हासा की ओर
13.9.2013	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी
14.9.2013	शनिवार	हिन्दी दिवस (उत्सव), रामदेव जयन्ती/तेजादशमी (अवकाश–उत्सव)				
16.9.2013	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		रामदेव जयन्ती/तेजादशमी
17.9.2013	मंगलवार	उदयपुर	9	राजस्थान अध्ययन	5	राजस्थाना में लोक प्रशासन
18.9.2013	बुधवार	बीकानेर	8	हमारा राजस्थान (सामा. विज्ञान)	2	राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन एवं प्रमुख जननायक
19.9.2013	गुरुवार	जयपुर	6	सामाजिक विज्ञान	4	ग्लोब–पृथ्वी का प्रतिरूप
20.9.2013	शुक्रवार	जोधपुर	8	हिन्दी	6	अंतिम दौर–एक
21.9.2013	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		जाने किशोर मन की बातें
23.9.2013	सोमवार	बीकानेर	9	सामाजिक विज्ञान	4	जलवायु
24.9.2013	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस
25.9.2013	बुधवार	जोधपुर	7	सामाजिक विज्ञान	6	मानव जीवन और आजीविका–(1)
26.9.2013	गुरुवार	उदयपुर	8	हिन्दी	7	साथी हाथ बढ़ाना (गीत)
30.9.2013	सोमवार	बीकानेर	8	हिन्दी	4	युगों का दौर

प्रेरक प्रसंग

उच्च मनोभाव

□ यमुना सिंह एकानन्द

एक महात्मा जी पदयात्रा कर रहे थे। देखा दोपहर की कड़ी धूप में कुछ श्रमिक पत्थर तोड़ रहे थे। कड़ी धूप के कारण श्रमिक पसीने से तर-बतर थे। महात्माजी ने एक श्रमिक से पूछा-'क्या कर रहे हो?' वह बोला, 'देखते नहीं मैं अपना कर्म फोड़ रहा हूं।' महात्मा जी आगे बढ़े। दूसरे श्रमिक से वही प्रश्न किया तो वह बोला, 'मेरे बाल-बच्चे हैं उनके पालन-पोषण के लिए पत्थर तोड़ रहा हूँ।' महात्माजी और आगे बढ़े। तीसरे श्रमिक से भी वही प्रश्न किया तो वह बड़े विनम्र भाव से बोला, 'महात्मा जी मेरे जीवन में भगवान का मन्दिर बन रहा है। मैं इन पत्थरों को गढ़ रहा हूं, ये उसी मन्दिर में लगेंगे।' तीनों श्रमिकों का काम एक ही था पत्थर तोड़ना। धूप तीनों को एक समान ही लग रही थी, पारिश्रमिक भी तीनों का समान था किन्तु उच्च मनोभाव होने के कारण तीसरा श्रमिक सन्तुष्ट और आनन्दित है।

विद्या-मन्दिरों में देव रूपी विद्यार्थी आते हैं। हम शिक्षक बंधु तो इस मंदिर के पुजारी हैं। इन देव-पुत्रों का भला हो यही भाव लेकर अपने कर्तव्य को निष्ठा और ईमानदारी से करें क्योंकि राष्ट्र-निर्माण में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक रूपी ठोस जब गले में लटका लिए हैं तो उसे भाव से आनन्दित होकर बजाएं। इसी से हमारा, बच्चों का तथा देश का कल्याण होगा।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.मा.वि. रामपुरा सिनाना (बाड़मेर) 344021

पंचांग : माह सितम्बर, 2013

सितम्बर, 2013					
वार	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

● कार्य दिवस 24, रविवार 05, अवकाश 01, उत्सव 05 ● 2-10 सितम्बर-प्रथम एवं द्वितीय समूह (प्राथमिक एवं माध्यमिक) की जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (अधिकतम चार दिनस), केजीबीवी, मेवात बालिका आवासीय विद्यालयों की जिला स्तरीय प्रतियोगिता। 5 सितम्बर-शिक्षक दिवस (उत्सव), राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ। 6-7 सितम्बर-विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (विद्यालय स्तर) 7 सितम्बर-मीना मंच के अन्तर्गत कहानी का-''लेन न लेना न देना'' का सामूहिक वाचन व समूह चर्चा। 8 सितम्बर-विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव) 9-11 सितम्बर-बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अन्तर्गत ब्लॉक स्तर पर ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। 12-14 सितम्बर-प्राथमिक विद्यालय ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता साथ में निःशक्त विद्यार्थियों हेतु खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन (प्राथमिक) 13-17 सितम्बर-प्रथम समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन (प्राथमिक/माध्यमिक) 14 सितम्बर-हिन्दी दिवस (उत्सव), रामदेव जयन्ती/तेजादशमी (अवकाश-उत्सव) 16 सितम्बर-श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2013 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। 16-21 सितम्बर-विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (जिला स्तर) 19-20 सितम्बर-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर पूर्व तैयारी। 21 सितम्बर-किशोर जागृति दिवस (उत्सव), मीना मंच के अन्तर्गत प्रथम मोहल्ला बैठक का आयोजन करना। 21-26 सितम्बर-द्वितीय समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (प्राथमिक एवं माध्यमिक) 23-25 सितम्बर-बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अन्तर्गत ब्लॉक स्तरीय मीना सम्मेलन 24 सितम्बर-राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है) 27-28 सितम्बर-जिला स्तरीय शिक्षक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश) 30 सितम्बर-राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनवाकर प्रेषित करना एवं श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार 2013 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। इस तिथि तक निःशक्त विद्यार्थियों की वैयक्तिक शिक्षा योजना भिजवाना, निःशक्त विद्यार्थियों को उपकरणों का वितरण, फंक्शनल एसेसमेन्ट केम्पों का आयोजन, चिह्नित विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की सूची को अंतिम रूप देना एवं प्रेषण (प्राथमिक शिक्षा), विद्यालय में अध्ययनरत ऐसे बालक-बालिकाओं का चिह्नीकरण करना, जो अपने माता-पिता के साथ आजीविका हेतु पलायन करते हैं एवं उनके लिये माइग्रेंट्री छात्रावास के प्रस्ताव तैयार करना एवं उन्हें प्रारम्भ कराना। बूढ़ा इस प्रपत्र भरने की आधार तिथि। 30 सितम्बर से 02 अक्टूबर-प्राथमिक विद्यालय जिला स्तर खेलकूद प्रतियोगिता। 30 सितम्बर से 03 अक्टूबर-तृतीय समूह जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (माध्यमिक/प्राथमिक) नोटः- प्रा. शिक्षा-1. समस्त छात्रवृत्तियों के लिए यदि आवश्यक हो तो अतिरिक्त बजट की मांग एवं ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृत्ति योजना के नवीनीकरण के शेष प्रस्तावों को सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रेषित करना एवं भामाशाह योजना का त्रैमासिक प्रतिवेदन निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर को प्रेषित करना। 2. कम्प्यूटर, प्रधानाध्यापक (प्रावि) प्रशिक्षण। 3. 1 से 15 सितम्बर के मध्य कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के सम्वलन के लिए अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन करना। 4. केजीबीवी में अन्तर जिला पैनल निरीक्षण दिनांक 15 से 30 सितम्बर 5. रमसा द्वारा संचालित छात्रावास की छात्राओं की खेल गतिविधियां एवं प्रतियोगिता आयोजन। (रमसा)

हिन्दी हमारी पहचान है

❒ ललिता चाहर

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।

कोई भी भाषा महज शब्दकोश नहीं होती, वह तो सांस्कृतिक चेतना एवं यात्रा होती है। हिन्दी भाषा की सांस्कृतिक यात्रा भव्य, विलक्षण होने के साथ-साथ रोमांचक भी है। हिन्दी भाषा हजार वर्षों से भारतीय जनता के बीच लोकप्रिय रही है। सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी का प्रयोग दसवीं शताब्दी से ही सर्वभारतीय रूप लेने लगा था। पंजाब से लेकर बिहार तक तथा गुजरात से लेकर महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश आदि क्षेत्रों में सन्तों, योगियों, मुस्लिम सूफियों एवं दरबारी कवियों ने हिन्दी के अपभ्रंश, डिंगल, ब्रज, अवधी, मैथिली आदि रूपों में काव्य रचनाएँ कीं। हिन्दी अखिल भारतीय स्तर पर धर्म प्रचार, संगीत, मनोरंजन एवं जनसम्पर्क की भाषा बन चुकी थी। सोलहवीं शताब्दी आते-आते हिन्दी सन्तों, महात्माओं जैसे ज्ञानेश्वर, नामदेव, रामानन्द, गुरुनानक, गुरु गोविन्द सिंह, कबीर, जायसी, सूर, मीरा आदि के कारण जन भाषा का रूप ले चुकी थी। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इसके खड़ी बोली रूप का तेजी से विकास होने लगा। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, तिलक, महात्मा गांधी, सुब्रह्मण्यम भारती जैसे मनीषियों के प्रयास से हिन्दी अपने वर्तमान रूप में राष्ट्र भाषा का रूप लेने लगी। इस तरह चाहे प्राचीन सन्तों की वाणी हो, चाहे मुस्लिम सन्तों की धर्म प्रचार की भावना हो, चाहे बादशाहों के दरबारी कवियों की रचनाएं हो, हिन्दी देश की आत्मा को अभिव्यक्त करने में सफल हुई। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ही इसने अपने लिए आदर का भाव पैदा कर लिया था।

इसी कारण भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिला, पर साथ ही संविधान लागू होने के पन्द्रह वर्ष तक अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को भी प्राधिकृत किया गया तत्पश्चात् राजभाषा अधिनियम 1967 के द्वारा अंग्रेजी के प्रयोग को अनिश्चित काल तक जारी रखने का प्रावधान कर दिया गया। संविधान में जोड़ दिया गया कि जब तक एक भी राज्य चाहेगा, अंग्रेजी सहभाषा के रूप में बनी रहेगी। इसके दुष्परिणाम, स्वतंत्रता के 65 वर्ष उपरान्त भी हिन्दी पूर्णतः राजभाषा का दर्जा नहीं पा सकी है।

हिन्दी के विरोध में जितनी आवाजें आती रही है उसके मूल में प्रमुख कारण राजनीतिक है। भाषावार प्रान्तों के निर्माण को महत्व देकर हिन्दी का नुकसान किया गया। इससे प्रान्तीय भाषाओं के प्रति जो जागरुकता आयी मगर राष्ट्रीयता की भावना पीछे छूट गई। राष्ट्रीय भावना के स्थान पर प्रान्तीय भावनाओं को उभरने का अवसर मिला।

हिन्दी को उचित दर्जा न मिलने देने और भाषा के संघर्ष को तीव्रता देने में अंग्रेजी वातावरण में पले व शिक्षित अधिकारी वर्ग का बड़ा हाथ रहा। अपनी चौधराहट समाप्त होने के डर से इन लोगों ने हिन्दी को प्रोत्साहन नहीं दिया।

कुछ लोगों ने हिन्दी को अपूर्ण भाषा कहकर उसके यथोचित्त महत्व को कम करने की कोशिश की। इन लोगों का कहना है कि तकनीकी और विज्ञान की पुस्तकें और कानून के पौधे हिन्दी भाषा में नहीं है और जब तक हिन्दी इतनी समर्थ न हो जाए कि ये सभी ग्रन्थ हिन्दी में हो तब तक उसे राजभाषा का दर्जा नहीं मिलना चाहिए। इसके लिए हमें पारिभाषिक शब्दावली का शब्द भंडार बढ़ा कर हिन्दी भाषा को समृद्ध करना होगा। इस हेतु नये शब्द गढ़े जा सकते हैं व अन्य भाषाओं से भी शब्द ग्रहण किए जा सकते हैं। अन्य भाषाओं की उत्तम पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया जा सकता है।

स्वयं हिन्दी प्रदेश वालों ने कट्टरता का जामा पहन कर हिन्दी के विरोध में वातावरण बना लिया। भाषा का प्रश्न भावना का प्रश्न है और किसी पर भी भाषा लादी नहीं जानी चाहिए। यह कार्य भाईचारे से होना चाहिए। हिन्दी वालों को चाहिए कि वे अहिन्दी प्रान्तों की क्षेत्रीय भाषाएं भी पढ़ें। सभी भाषाओं का आदर करते हुए हम हिन्दी को बढ़ावा दे। विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं की छोटी पुस्तकें तैयार की जाए जिससे इच्छुक व्यक्ति एक दूसरे की भाषा सीख सके।

हिन्दी को समृद्धशाली व सम्पन्न बनाने के लिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम उदार दृष्टिकोण अपनाएं। हिन्दी के द्वार प्रान्तीय भाषाओं के लिए खोल दे। इसके लिए हमें व्याकरण के नियमों को सुगम बनाना होगा। तद्भव शब्दों का तत्सम शब्दों में परिवर्तन कर देने के कारण भाषा में जो कृत्रिमता आ गई है, उसे दूर करना होगा अन्यथा भाषा की जटिलता उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी।

सभी हिन्दी भाषी अपना पत्र-व्यवहार व राजकीय कार्य हिन्दी में करें व अधिकाधिक बातचीत हिन्दी में करें। इससे हिन्दी के लिए वातावरण तैयार होगा।

आज अंग्रेजी भाषी होना आधुनिकता का पर्याय माना जाने लगा है। हिन्दी को नकार कर अंग्रेजी को बढ़ावा देना ठीक ऐसा है कि हम माता-पिता का तिरस्कार करें व पड़ौसी को सम्मान दें। भाषा तो माँ की तरह लगनी चाहिए।

अंग्रेजी इस देश में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योजक भाषा के रूप में रहे न कि राष्ट्रभाषा के रूप में। हमारा विरोध अंग्रेजी की राजभाषा स्थिति से है मूलतः अंग्रेजी से नहीं है। विश्व की अन्य भाषाओं की तरह हम अंग्रेजी भाषा को भी सीखें, पर उसे सम्मान का प्रश्न न बनाए। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर दी जाए क्योंकि यदि अंग्रेजी भाषा अनिवार्य होगी तो लोगों का ध्यान हिन्दी की ओर अपेक्षाकृत कम होगा।

जननी व जन्मभूमि के साथ हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी सम्मान करें। **जननी हमें जन्म देती है, जन्मभूमि हमें जीवन देती है और भाषा हमें अपनी पहचान देती है। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की अस्मिता व गौरव की परिचायक होती है।** अपनी पहचान को बनाये रखने के लिए शासन, प्रशासन, राजनेता, उद्यमी तथा जनता सभी को तन-मन-धन से हिन्दी को उसका उचित स्थान देने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दी राष्ट्र के भविष्य की नींव है अतः राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ करना हमारा कर्त्तव्य है।

-व्याख्याता (हिन्दी)
राज.महारानी बा.उ.मा. वि., बीकानेर
मो. 9413725596

हमारे शिक्षण संस्थान

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर

❑ महेन्द्र पाण्डे

बीकानेर स्थित राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान शिक्षा की पुरानी और नयी आभा को समेटे हुए शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। राजस्थान की मरुभूमि नाम से प्रसिद्ध बीकानेर जिले का शिक्षा क्षेत्र में गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। राजस्थान में पृथक-पृथक रियासतों में अपनी-अपनी शिक्षा व्यवस्था थी। बीकानेर रियासत में शिक्षा व्यवस्था अजमेर के सम्पर्क के कारण आधुनिकता लिए हुए थी। बीकानेर में रियासत काल में अनिवार्य प्रारंम्भिक शिक्षा लागू थी। शिक्षक प्रशिक्षण को सर्वसुलभ बनाने के लिए बीकानेर वर्ष 1940 में इस संस्थान की स्थापना की गई। प्रारंम्भ में इसे शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय स्तर की मान्यता रही। इसे 1946 में शिक्षक प्रमाण पत्र परीक्षा सी.टी. स्तर मिला। शिक्षण प्रशिक्षण के अर्न्तगत 1956 में इसे बी.एड. स्तर की मान्यता देते हुए महाविद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। इस महाविद्यालय को 1970 से एम.एड.स्तर की मान्यता प्राप्त हुई, इस मान्यता से इसे राजस्थान में प्रथम स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 1974 में इसे ग्रीष्मकालीन सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण बी.एड. कार्य सौंपा गया तथा 1988 में राज्य में प्रथम राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान में स्तरोन्नत किया गया। राजकीय टी.टी. कालेज नाम से विख्यात इस संस्थान को राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान बनाने के वर्ष से इसमें एम.एड व बी.एड सेवापूर्व प्रशिक्षण के साथ ही सेवारत शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण शिविर आयोजन प्रारम्भ हुआ। संस्थान में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा स्वीकृत 170 बी.एड और 40 एम.एड प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिवर्ष सेवापूर्व प्रशिक्षण पूर्ण करवाया जाता है। संस्थान द्वारा माध्यमिक शिक्षा की कक्षा 9, 10, 11, 12, को पढ़ाने वाले वरिष्ठ अध्यापक व व्याख्याता तथा शारीरिक शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रयोगशाला सहायक और विद्यालय का शैक्षिक प्रशासन चलाने वाले प्रधानाचार्य तथा प्रधानाध्यापकों को शिविर आयोजित कर प्रशिक्षण दिया जाता है। शिविर की तिथि और संख्या निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा निर्धारित की जाती है। इन सेवारत प्रशिक्षण शिविरों में शैक्षिक नवाचार, विषय की गुणवत्ता व गुणात्मकता, विषय शिक्षण की सरल विधाएं, मनोविज्ञान, क्रियात्मक अनुसंधान आदि का ज्ञान संस्थान के शैक्षिक स्टाफ द्वारा करवाया जाता है। सेवाधीन शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य उत्तम शैक्षिक उपलब्धि, उत्तम बोर्ड परीक्षा परिणाम और कुशल शैक्षिक प्रशासन रखे गये हैं।

बीकानेर के इस संस्थान के प्राचार्य को नोडल अधिकारी के रूप में राज्य के अन्य उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों को निर्देशन देकर इनकी कार्यकुशलता एवं गतिविधियों के संचालन में भागीदार बनाना संस्थान की उच्च शैक्षिक गतिविधियों का एक और उदाहरण है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की गाइड लाईन के अनुसार राज्य में संचालित 2 आई.ए.एस.ई व 9 सी.टी.ई. में प्रतिवर्ष कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक करवाकर शिविरा पंचांग तथा विद्यालय से शिक्षकों की उपलब्धता के अनुरूप वर्ष भर के लिये सेवाधीन प्रशिक्षण शिविरों की योजना तैयार करवाई जा रही है।

संस्थान में जनवरी 2006 से जिला अंग्रेजी सन्दर्भ केन्द्र प्रारम्भ हुआ। अब ये अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान नाम से संचालित है। इसके द्वारा पूरे राज्य में अध्यापकों को अंग्रेजी शिक्षण के कौशल सिखाने का कार्य सम्पादित किया जा रहा है। संस्थान में अंग्रेजी सन्दर्भ केन्द्र की सफलता के बाद राज्य सरकार द्वारा अन्य 6 मण्डल में एक एक मण्डल अंग्रेजी सन्दर्भ केन्द्र प्रारम्भ किया है। जहां II ग्रेड शिक्षकों को अंग्रेजी शिक्षण विधाएं सिखाई जा रही हैं। संस्थान में संचालित अंग्रेजी संस्थान द्वारा हैदराबाद से राजस्थान के 125 शिक्षकों को एक वर्षीय अंग्रेजी भाषा शिक्षण प्रमाणपत्र कोर्स करवाया गया है।

संस्थान में उपलब्ध भौतिक और शैक्षिक सुविधाओं के आधार पर वर्द्धमान भगवान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा बी.एड व एम.ए. शिक्षा पत्राचार का अध्ययन केन्द्र संस्थान को आवन्टित किया हुआ है। इन कक्षाओं को संस्थान में कार्यरत योग्य शैक्षिक स्टाफ द्वारा पढ़ाया जाता है।

संस्थान में कार्यरत शैक्षिक स्टाफ वर्तमान शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने में अग्रणी है। दो शिक्षा अधिकारी पीएच.डी गाइड हैं ये राजस्थान के शिक्षकों को शिक्षा में पीएच.डी करवा रहे हैं। दो शिक्षा अधिकारी कम्प्यूटर प्रशिक्षित हैं। ये बी.एड कक्षा शिक्षण के साथ ही विभाग द्वारा निर्धारित कम्प्यूटर शिक्षा के लिये सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर रहे हैं।

संस्थान को शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी मानकर श्रीमान् निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर द्वारा अनेक शैक्षिक कार्य सौंपे जाते रहे हैं। प्रारम्भ में पूरे राज्य में बी.एड प्रवेश का कार्य टी.टी. कॉलेज द्वारा सम्पन्न करवाया जाता था। वर्ष 1996 में शिक्षा विभाग की महती योजना प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के लिये माइक्रोप्लानिंग, चीफ मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण और जिला

अधिकारियों का प्रशिक्षण इस संस्थान में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण को तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री प्रियदर्शी ठाकुर स्वयं सम्बोधित करने आये थे। वर्ष 1996 में ही तत्कालीन निदेशक डॉ. बी. शेखर द्वारा संस्थान को कक्षा 8वीं बोर्ड परीक्षा की विश्वसनीयता विषय पर अध्ययन करने का कार्य दिया गया। संस्थान के शैक्षिक स्टाफ द्वारा दिये गये निर्णय के आधार पर ही राज्य में कक्षा 8वीं की बोर्ड परीक्षा व्यवस्था लागू की गई थी। वर्ष 2006 में मुख्यमन्त्री जी की योजना के अनुसार नागौर, बीकानेर व चालौर जिलों में चयनित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जाकर संस्थान के शैक्षिक स्टाफ द्वारा कक्षा 10 व 12 में मध्यावधि शैक्षिक मूल्यांकन सम्पन्न कर समय पर रिपोर्ट एसआईईआरटी उदयपुर को भेजी गई। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के लिये विषय कैप्सूल तैयार करवाये गये। संस्थान को प्रमुख शासन सचिव शिक्षा द्वारा कक्षा 11 व 12 के लिये विषयवार मॉड्यूल निर्माण कार्य दिया गया है। कार्य अन्तिम चरण में है। ये मॉड्यूल राज्य में नया पाठ्यक्रम लागू होने के बाद कक्षा 11 व 12 में शिक्षण करने वाले व्याख्याताओं के लिये उपयोगी होंगे। मॉड्यूल निर्माण के लिये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा वित्तीय सहायता दी जा रही है माननीय बोर्ड अध्यक्ष प्रोफेसर पी.एस. वर्मा ने स्वयं 14 जून 2013 को संस्थान में आकर मॉड्यूल निर्माण की प्रगति की जानकारी ली। संस्थान को हाल ही प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा द्वारा नवपदोन्नत व नवनियुक्त प्रधानाध्यापक माध्यमिक विद्यालय के प्रशिक्षण का कार्य सौंपा गया है। संस्थान के प्राचार्य के निर्देशन में प्रशिक्षण की कार्य योजना तैयार की जा रही है।

राज्य के शिक्षा विभाग ने भी संस्थान को महत्वपूर्ण मानकर यहां प्राचार्य का पद संयुक्त निदेशक शिक्षा, उपाचार्य का पद उप निदेशक शिक्षा, दो प्रोफेसर जिला शिक्षा अधिकारी स्तर के और रीडर के पद प्रधानाचार्य उपाधि स्तर के रखे है। इससे सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में मण्डल और जिला स्तर के कार्यालयों से समन्वय में सुगमता रहती है।

56 कमरों और एक बड़े हॉल के इस भवन ने कई रूप बदले हैं। प्रारम्भ में यह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वार हॉस्पीटल के रूप में काम लिया गया। बीकानेर में प्रारम्भक हुआ सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज प्रारम्भिक महिनों में इसी भवन में लगाया गया था। फिर शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय। इसके बाद बी.एड व एम.एड कॉलेज। अब उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान और इसी के साथ अंग्रेजी सन्दर्भ केन्द्र इसी भवन में संचालित हो रहे हैं।

बीकानेर स्थित राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान को स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में एक मार्गदर्शक और सहयोगी माना जा सकता है।

व्याख्याता, राज. उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मो. 9928370327

पाठक फरमाते हैं...

आवरण पृष्ठ स्वतंत्रता सैनिकों, शहीदों, महापुरुषों के रंगीन चित्रों से महक रहा है। अंक की विशिष्टता यह है कि प्रारम्भ दिशाकल्प से लेकर अंतिम पृष्ठ प्रतिध्वनि तक परोसी गई पाठ्यसामग्री पूर्णरूपेण सामयिक है। जन्माष्टमी, पर्यावरण, वृक्षारोपण, मेजर ध्यानचन्द, महापर्व ईद एवं स्वतंत्रता भावों से ओत-प्रोत अगस्त माह के सभी पर्वों को समाहित किये हुये है। बाकी आलेख भी शैक्षिक परिदृश्य ही सूचित कर रहें है। उदाहरण स्वरूप मलाला यूसुफजई, बच्चों की प्रशंसा कीजिये, शिक्षक के विभिन्न रूप, विद्यालय प्रबन्धन स्टॉफ की भूमिका और जीवन का आधार आदि आदि। एक और विशिष्टता तारीफे काबिल है समय पर पत्रिका मिल जाना, रैपर में पत्रिका भेजना जिससे तुड़े मुड़े नहीं। इस माह तो 6 अगस्त को ही मिल गई। प्रतिध्वनि बिल्कुल नया स्तम्भ है जिसमें वरिष्ठ सम्पादक की ध्वनि पाठकों में सतत रूप से प्रतिध्वनित होती रहती है। दिनों दिन शिविरा निखार पर है। साज-सज्जा व पाठ्य सामग्री दोनों ही आयामों में निखर रही है। अतः यही कारण है कि पत्रिका के मिलने की बेसब्री से पाठकों को प्रतीक्षा रहती है और रहता है पढ़ने का चाव।

–टेकचन्द्र शर्मा
'शर्मा सदन', मुनि आश्रम के पास, झुन्झुनूं
मो. 9311526526

शिविरा अगस्त 2013 के अंक में उत्सव-पर्वों को उत्साह पूर्वक मनाने के लिए प्रेरित करता दिशाकल्प तथा सम्पूर्ण जीवन दर्शन का दिग्दर्शन करवाता आलेख 'श्री कृष्णम् वंदे जगद्गुरु' पठनीय एवं प्रेरणादायी। 'अनोखी जीत में छिपी करारी हार' के लिए आदरणीय श्री अजय सिंह कछवाहा को हार्दिक बधाई। 'सा विद्या या विमुक्तये' बौद्धिक दासता से मुक्ति तथा आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को शिक्षा पद्धति में समावेशित करने की आवश्यकता को दर्शाता है, इस हेतु श्री टेकचन्द्र शर्मा को साधुवाद। बालिका शिक्षा और खेलों को बढ़ावा देने वाले आलेख 'मलाला यूसुफजई बनी मशाल' तथा 'ऊपर चाँद तो नीचे ध्यानचन्द' सार्थक है।

–लियाकत अली खाँ
भीमसर-333001

माँ

❑ विष्णु दत्त शर्मा
प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., सरदार नगर
बनेड़ा (भीलवाड़ा)

मुझे जिन्दा रखने को जो खुद को मार देती है।
मां मेरी मुझे हर पल जिन्दगी उधार देती है।

जमाने भर के गमों को छुपाकर सीने में,
चुनती है काँटे मगर हमको बहार देती है।

औलाद के सुख से कोई बड़ा सुख नहीं उसको,
उसी के गम में जिन्दगी बिसार देती है।

इस जहां में मां खुदा से कम नहीं होती,
ये मां ही है जो खुदा को आकार देती है।

उसकी बातों में होती है दुआएं या नसीहतें,
कोई मांगे या ना मांगे बस वो प्यार देती है।

दुनिया का वजूद है मां के वजूद से,
मां ही हम सबको ये संसार देती है।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

कल्याणधणी की पावन धरा टोंक

❒ योगेन्द्र सिंह नरुका

भक्त और भगवान के मिलन की पावन धरा टोंक जहां साक्षात् भगवान विष्णु डिग्गीपुरी के राजा कल्याणधणी के रूप में विराजमान होकर भक्तों व दीन-दु:खियों के कष्ट हरते हैं। यही वो धरा है जहां अजमेर के राजा बीसलदेव ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की थी व वरदान प्राप्त किया था। ये धरा संत पीपाजी की सहधर्मणी रानी सीताजी सोलंकी व धन्ना भगत की जन्म स्थली है।

ध्रुवपद के डागुर बानी के वंशज अल्लादियाँ खाँ, राजस्थान के लौह पुरुष दामोदरलाल व्यास, राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचन्द कुलिश, राजस्थान के पूर्व गृह मंत्री किसान नेता दिग्विजय सिंह, शायर अख्तर शीरानी, मख्मूर सईदी, महावीर चक्र विजेता बिग्रेडियर रघुवीर सिंह, भारत की पहली एमबीए सरपंच छवि राजावत, संस्कृत कवि आचार्य पुष्पेन्द्र सिंह व चित्रकार योगेन्द्र नरुका आदि इसी माटी के अनमोल रत्न हैं। राजस्थान के सर्वप्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री द्वारा बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु स्थापित वनस्थली विद्यापीठ जिले का गौरव है।

जिले के रेढ़ क्षेत्र में एशिया का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है वहीं जिले की देवली तहसील में एशिया का सबसे बड़ा अग्निशमन केन्द्र स्थापित है। खेड़ा सभ्यता, उनियारा चित्रशैली, देवधाम जोधपुरिया, दादाबाड़ी मालपुरा, सांखना का शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सुनहली कोठी, अरबी-फारसी शोध संस्थान, केन्द्रीय भेड़ अनुसंधान केन्द्र अविकानगर व आंवा का दड़ा महोत्सव जिले की शान है।

भौगोलिक परिदृश्य :- कल-कल करती बनास नदी के किनारे जयपुर-कोटा राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 12 पर चारबेत की थाप, मोगरे की खुशबू, मीठे खरबूजों व गंगा-जमुनी तहजीब के लिए जाने वाले टोंक नगरी स्थित है। जयपुर से टोंक मुख्यालय 100 किमी. की दूरी पर अवस्थित है। टोंक के उत्तर में जयपुर, दक्षिण में बूंदी, भीलवाड़ा, पश्चिम में अजमेर व पूर्व में सवाई माधोपुर जिला है। यह जिला 25°41' से 26°34' उत्तरी अक्षांश तथा 75°07' से 76°19' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 7178.33 वर्ग कि.मी. है। यह समुद्रतल से 364.32 मीटर की ऊँचाई पर है। जिले में अरावली की पहाड़ियां हैं। यहाँ सिंचाई तथा पेयजल की पूर्ति के लिए बीसलपुर, गलवा, मांसी बांध का निर्माण किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- टोंक की स्थापना को लेकर इतिहासकारों में मतभेद रहा है पर कई इतिहासकार व शायर रामसिंह को टोंक का संस्थापक मानते हैं। रामसिंह ने 24 दिसम्बर 0946 को टोंक की आधारशिला रखी थी। इतिहासकार बाबू ज्वाला प्रसाद भरतपुरी ने अपनी पुस्तक 'वाकया राजपूताना' में भी इसका उल्लेख किया है। टोंक के प्रसिद्ध शायर मोहम्मद सादिक बहार ने अपनी एक नज्म में टोंक की स्थापना को यूं लिखा है-

खानदाने-पाल में था रामसिंह एक सूरमा,
फतेह दक्खन के लिए उस राह से जाने लगा।
इस जगह ऐसा असीरे, जुल्फे फितरत हो गया,
मातहत लशकर को फौरन
हुक्में-आबादी दिया।
गैर से हातिफ यह बोला बाग यह जन्नत का है,
रहती दुनिया तक रहे
यह टुकड़ा (टोंक) खिलवत का है।

15 नवम्बर 1817 को अमीर खाँ पिण्डारी टोंक का प्रथम नवाब बना।

1857 की क्रान्ति के समय टोंक के नवाब ने अंग्रेजों का समर्थन किया लेकिन टोंक की जनता एवं सेना की सहानुभूति क्रांतिकारियों के साथ थी। नवाब के मामा मीर आलम खां ने विद्रोहियों का साथ दिया था। 1858 ई. के प्रारम्भ में तांत्या टोपे के टोंक आगमन पर टोंक की जनता ने तांत्या को सहयोग दिया एवं टोंक का जागीरदार नासिर मुहम्मद खाँ ने भी तांत्या का साथ दिया जबकि नवाब ने अपने आपको किले में बंद कर लिया।

राजस्थान निर्माण के समय टोंक 9 रजवाड़ों में से एक था। टोंक के लावा ठिकाने को चीफ शीफ प्राप्त थी।

प्रमुख स्थल :- टोंक के ऐतिहासिक, धार्मिक आस्था वाले कुछ प्रमुख स्थल पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं-

1. डिग्गीपुरी के राजा श्री कल्याणधणी :- जिले की मालपुरा तहसील के डिग्गी कस्बे में श्री कल्याण जी का प्राचीन मंदिर है। यहाँ प्रत्येक एकादशमी एवं पूर्णिमा को दर्शनार्थी भारत के कोने-कोने से आते हैं और मिन्नते माँगते हैं। मुख्य मेला प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला एकादशमी को लगता है।

2. डिग्गी गढ़ :- राजपूतों की खंगारोत शाखा का डिग्गी गढ़ भी अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है। यहाँ पर एक शस्त्रागार भी है जो मध्यकालीन युद्धों की यादें तरोताजा करता है।

3. सोलंकियों का गढ़ :- प्रतिवर्ष टोंक महोत्सव की शुरुआत यहीं से पूजा-अर्चना के साथ की जाती है। यह गढ़ पुरानी टोंक में स्थित है।

4. ककोड़ का किला :- नरुका शासकों द्वारा निर्मित यह किला जिला मुख्यालय से सवाई माधोपुर रोड पर 22 किलोमीटर दूर ककोड़ ग्राम में ऊँचे पहाड़ पर स्थित है। इस किले में ऐतिहासिक महत्व के भित्ति चित्र व लेख है।

5. फूलैतागढ़ :- सम्वत् 1671 में बेरानपुर के झगड़े के बाद नारायणदास नरुका को फूलैता की जागीर मिली। सम्वत् 1782 में इन्द्रशाल सिंह नरुका ने फूलैता में गढ़ का निर्माण करवाया। यह ऐतिहासिक गढ़ टोंक जिले के नगर-नैनवा मार्ग वाया ककोड़ पर एक पहाड़ी से घिरा हुआ है।

6. हाथी भाटा :- जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर गोठड़ा गाँव के पास ऐतिहासिक हाथीभाटा का सुन्दर शिल्प है। एक ही चट्टान को तराशकर बनाये गये हाथी शिल्प की तीन सूंडें हैं, सिर पर सूर्य का चित्र है और पीठ पर

पोशाक (झूल) एवं घंटी का चित्रण अनोखा है। इसका निर्माण रामसिंह के शासनकाल में संवत् 1200 ई. में हुआ है। इसका प्रमाण हाथी के दाहिने कान पर खुदे शब्दों को पढ़ कर मिलता है।

7. उनियारा :– राव चन्द्रभान नरुका ने उनियारा नगर की स्थापना की। रंगमहल, चारभुजा जी का मंदिर, जगत शिरोमणी मंदिर व राव राजाओं की छतरियाँ यहां विशेष रूप से दर्शनीय हैं। यहाँ के रंगमहल में चित्रित भित्ति चित्रों पर बूंदी और जयपुर शैली का समन्वित प्रभाव है तथा यह ढूढ़ाड़ शैली की प्रमुख उपशैली के रूप में विश्वविख्यात है। यहाँ के गढ़ परिसर में एक संग्रहालय भी है जिसमें ऐतिहासिक दस्तावेज, पेन्टिंग, सिक्के आदि संग्रहित हैं।

8. सुनहरी कोठी :– टोंक बड़ा कुआं के पास नजर बाग में रत्न, कांच एवं सोने की झाल देकर बनाई गई सुनहरी कोठी अवस्थित है। इसे शीशमहल के नाम से भी जाना जाता है। सुनहरी कोठी की दीवारों एवं छत में काँच, रत्न जड़ित सोने की बेलबूटियाँ, फूल, पच्चीकारी एवं मीनाकारी का कलात्मक स्वरूप आज भी आकर्षण का केन्द्र है।

9. जामा मस्जिद :– जिला मुख्यालय पर स्थित इस मस्जिद की दीवारों पर सोने व मीनाकारी का कलात्मक कार्य किया गया है।

10. अरबी–फारसी शोध संस्थान :– जिला मुख्यालय पर स्थित इस संस्थान में देश–विदेश से विभिन्न शोधार्थी अपने शोध कार्य व ज्ञान–पिपासा को शान्त करने के लिए आते हैं। यहाँ अरबी–फारसी, ऊर्दू के दुर्लभ ग्रंथ संग्रहीत हैं।

11. संत शिरोमणी पीपाजी की सहचरी साध्वी राणी सीताजी सौलंकी की छतरी :– यह छतरी जिले की टोडारायसिंह तहसील में है तथा देश के रामानन्दी सम्प्रदाय के तीर्थ के रूप में जानी जाती है।

12. हाड़ी रानी की बावड़ी :– यह बावड़ी 600 साल पुरानी होने के बाद भी अपनी कला के लिए अद्वितीय है। बावड़ी की सीढ़ियां भूल–भूलैया सी लगती है। इस बावड़ी का निर्माण सम्वत् 1398 में टोड़े के शासक–राव रूपाल की रानी हाड़ी ने करवाया था।

13. बीसलपुर :– यहाँ राजा बीसलदेव के द्वारा निर्मित शिव मन्दिर है। राजा बीसलदेव के नाम पर ही बीसलदेव बांध का निर्माण किया गया है जो वर्तमान में टोंक, जयपुर, अजमेर के पेयजल के काम आ रहा है।

14. राजमहल :– बनास नदी के किनारे बना यह महल अपनी भव्य स्थापत्य कला, भित्ति चित्रकारी व प्राकृतिक सुषमा से पर्यटकों को सहज की आकर्षित करता है। इसके साथ ही अन्नपूर्णा गणेश मंदिर, सोनवा का गोपीनाथ मंदिर, बम्बोर का चारभुजा नाथ मंदिर, अरनियामाल के बालाजी, नगर फोर्ट के मुचकंदेश्वर शिव व माण्डकला तीर्थ जन आस्था के प्रमुख केन्द्र हैं वहीं टोडारायसिंह की जगन्नाथ कछवाहा की बावड़ी व रूठी रानी के महल अपने सुनहरे अतीत की गाथा कह रहे हैं।

जिले में नटवाड़ा, सुरेली, निमोला, धौली, खरेड़ा, झिराना, सिरस, निवाई, जूनिया, लाम्बाहरि सिंह, बन्थली, धान्धोली, अलीगढ़, टोरड़ी, तिलांजू, सुनारा, गनवर, लावा, झिलाय, पचेवर, बगड़ी, मेहन्दवास, आवां, डांगरथल गढ़ व किले आदि प्रमुख ऐतिहासिक धरोहर हैं।

–व्याख्याता व विभागाध्यक्ष (चित्रकला)
रा.सेठ आनंदीलाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान,
जयपुर मो. 8104259066

प्रेरक संस्मरण

पारखी आँखें

❒ विश्वनाथ भाटी

जुलाई 1984 ई. में मैं ग्यारहवीं कक्षा का छात्र था। अंग्रेजी के व्याख्याता व कक्षाध्यापक श्री बुधमल जी हँसावत अंग्रेजी विषय का शिक्षण करवा रहे थे। अचानक मेरे पेट में जोर का दर्द उठा। मैं रह–रह कर दर्द वाले स्थान को एक हाथ से दबाकर पाठ में ध्यान लगाने की कोशिश कर रहा था। गुरुजी का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने पूछा–''क्या बात है बेटा! पेट दर्द हो रहा है?'' मैंने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया। गुरुजी ने तत्काल एक छात्र को भेजकर चपरासी गणपतराम को बुलाया और कुछ निर्देश देकर मुझे उनके साथ अस्पताल भिजवा दिया। पेट का वह दर्द मुझे कई बार हो जाता था, मगर आर्थिक तंगी की वजह से जाँच आदि करवाने को गंभीरता से नहीं लिया गया था। अस्पताल में डॉक्टर ने जाँच करवाई और पन्द्रह दिन तक दवाई लेने के निर्देश दिए। कोई फीस या दवाई के पैसे मुझसे नहीं माँगे गये। अपना कालांश पूरा करने के बाद गुरुजी स्वयं भी डॉक्टर के पास जा पहुँचे और मेरी बीमारी के बारे में चर्चा की। पन्द्रह दिन तक बराबर मेरी दवाई और स्वास्थ्य के बारे में भी खबर लेते रहे। उस उपचार के बाद आज तक मुझे वह दर्द नहीं उठा।

कभी–कभी मैं सोचता हूँ कि क्या आज हमारे पास वह संवेदना है? क्या हम शिक्षक होने के नाते कक्षा में शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कारणों से अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के बारे में चिन्ता करते हैं? क्या कभी हमारी आँखों ने अपनी कक्षा के विवश विद्यार्थियों की आँखों में झाँक कर उनका दुःख दर्द जानने की कोशिश की? ऐसे छात्रों को उनके हाल पर छोड़ कर हम भाग कर अप–डाउन वाली बस में तो नहीं चढ़ गए?

–प्राध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय
तारानगर (चूरू)–331304
मो. 9413888209

अभिभावक विद्यार्थी संबंध

❒ मधु सोनी

आज आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव से महानगरों-नगरों में एकल परिवार प्रणाली का प्रभाव भले ही बढ़ने लगा हो, पर संयुक्त परिवार व्यवस्था पूरी तरह से समाप्त नहीं हो गई है। पिता, चाचा, ताऊ के संयुक्त परिवार में दस-पन्द्रह बच्चे अपने आप पल जाते थे। परिश्रम आधारित संयुक्त व्यवसाय में दिन-रात लगे रहने के बावजूद घर में सभी बच्चों को घर में प्रत्येक सदस्य का प्यार मिलता और उनसे जीवन की महत्वपूर्ण बातें जानने-समझने के अनुभव मिलते। किसी एक के बच्चे सबों के लिए अपने बच्चों की तरह प्यारे थे। सभी की देखभाल होती, संवाद होते और परिवार के संस्कार मिलते। बच्चों के लिए मिलजुल कर सीखने के बहुत अवसर थे। परस्पर साथ रहने के कारण प्रेम, सहकार, समर्पण, त्याग, अपनत्व आदि जीवन मूल्य अपने आप उग आते थे। एक आनन्ददायी, उत्सव जैसा उल्लासपूर्ण व स्वानुशासी जीवन जीते थे बच्चे। जब इतनी सारी विशेषताएं थीं, तो सवाल उठता है कि संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली की बजाय एकल परिवार प्रणाली प्रचलन में क्यों आ गई? इसका एकमात्र कारण है औद्योगीकरण का प्रादुर्भाव। कल-कारखानों के खुलने से स्थानीय देशी कुटीर उद्योग-धंधे ठप्प हो गए और रोजी-रोटी के लिए परिवार के परिवार नौकरी के लिए बाध्य कर दिए गए। जिन संयुक्त परिवार के पास अपने उद्योग व्यवसाय थे, उन्हें भी कारखानों की स्पर्धा में अपने हाथ खींचने पड़े।

आज का एकल परिवार सिर्फ अपने तक सीमित है। बड़े परिवार के टूटने के साथ ही अनेक समस्याएं सताने लगी हैं उसे। सबसे बड़ी समस्या है आर्थिक। महानगरों के खर्चीले जीवन में एक व्यक्ति की पगार से काम नहीं चलता। परिणामत: पति-पत्नी दोनों का जीवन कामकाजी हो जाता है। निश्चित समय पर घर छोड़कर काम पर जाओ और निश्चित समय के साथ ही घर में लौटो। ऐसे में एक-दो या तीन बच्चे हों तो उनकी देखभाल कौन करे? एडजस्टमेंट तो खैर करना ही पड़ता है लेकिन संयुक्त कुटुम्ब व्यवस्था के बच्चों की परवरिश को लेकर जो निश्चिंतता थी, वह यहां काट खाने लगती है। माता-पिता के संसर्ग और प्यार-दुलार से वंचित बच्चों को जिस घुटन और एकाकीपन का सामना करना पड़ता है, वह इतनी भयावह है कि सीधे दिलों पर प्रभाव डालती है। वहीं से मनोविकृतियां जन्म लेती हैं।

ऐसे में सोचने की बात है कि माता-पिता के पास क्या विकल्प बचे रहते हैं? बच्चा छोटा है तो आया के भरोसे छोड़ो। थोड़ा बड़ा हो तो बेबी सिटिंग के लिए शिशु गृह में छोड़ो। आजकल हर गली-मौहल्ले में नर्सरीज मिल जाती है। गरज यह, कि एकल परिवार वालों को इन्हीं का आश्रय लेना पड़ता है। लगभग सभी घरों में फ्रिज, टी.वी., वी.सी.आर., कम्प्यूटर, ए.सी. आदि बिजली और इलेक्ट्रोनिक्स के सामान रहते ही हैं। ऐसे में बालकों के साथ स्वयं की उपस्थिति को टी.वी. पर गेम्स और सी.डी. के द्वारा भरने का प्रबंध करके नौकरी पर चले जाते हैं माता-पिता। आधुनिक उपकरणों और बदली हुई जीवनशैली, साथ ही माता-पिता दोनों की क्रमश: बढ़ती हुई व्यावसायिक व्यस्तता के कारण बालकों की निजी समस्याएं बढ़नी स्वाभाविक है। अकेला बच्चा घर में पड़ा-पड़ा अमूझने लगता है, उदासीनता और निष्क्रियता घर कर जाती है। पौधे को पनपने के लिए हवा, पानी, मिट्टी और सूरज की ऊष्मा चाहिए, वैसे ही बच्चों के विकास के लिए माता-पिता के प्यार-दुलार, वाणी-व्यवहार, संसर्ग और मार्गदर्शन की सख्त जरूरत रहती है।

प्रेम बहुत बड़ी सकारात्मक ताकत है, तो नफरत भी उतनी ही बड़ी नकारात्मक ताकत है। प्रेम के अभाव में बड़े-बड़ों को मनोग्रंथियों से ग्रसित, उदासीन, नकारात्मक और आक्रामक होते देखा है। मां ने जिसे जन्म लेने के साथ ही छोड़ दिया उस कर्म के व्यक्तित्व का दृष्टांत हमारे सामने है। हालांकि उसे राधा ने पाला, पर बड़े होने के साथ ही उसमें ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिकार और संहार के जिन दुर्गुणों ने घर कर लिया था, यदि माता का प्यार उसे मिला होता तो उसके चरित्र का निर्माण ही भिन्न रीति से हुआ होता और वह चक्रवर्ती सम्राट बनता।

महानगरों में आज जो लूट-खसोट, हत्या-बलात्कार और कानून के साथ खिलवाड़ करने के मामले बढ़ने लगे हैं, उनमें गरीबों और कम पढ़े-लिखों के बजाय उच्च शिक्षा प्राप्त अमीरजादों की तादाद सबसे बड़ी है। मेरे इस तर्क को चाहे कोई स्वीकार करें या न करें, पर पेरेंटिंग की समस्या सबसे बड़ी है। संयुक्त परिवार परस्पर की चिंता और प्यार-दुलार के वातावरण में बच्चे स्वत: अनुशासित रहते। लेकिन आज के एकल परिवार में पेरेंटिंग एक विकट समस्या बन गई है। धन का अभाव नहीं है। बिना मांगे ही बच्चों को बहुत-सी वस्तुएं मिल जाती हैं, लेकिन जो चीज नहीं मिल पाती, वह है माता-पिता का उष्मिल प्यार और संसर्ग।

ऐसा नहीं है कि माता-पिता और अभिभावकों को अपने बच्चों के प्रति दायित्व निभाने संबंधी पुस्तकों का, सी.डी. का अथवा विशेषज्ञों का अभाव हो। प्राय: बाल-विकास और बाल-मनोविज्ञान पर विद्वानों के भाषण होते हैं। नेट पर अथाह सामग्री उपलब्ध रहती है, पर माता-पिता को फुर्सत कहां मिल पाती है कि वे इन सबको समझने और व्यवहार में लाने की चिंता करें।

एक बड़ी स्कूल में बालकों के विकास की समस्याओं पर किसी विद्वान का व्याख्यान हुआ था। व्याख्यान के बाद माता-पिताओं ने अपनी-अपनी समस्याएं सामने रखी। हैरानी की बात है कि ज्यादातर समस्याएं एक-समान थी कि हमारा बच्चा टी.वी. से हटता ही नहीं, होमवर्क करता ही नहीं, कोई भी बात मानता नहीं, सुनी अनसुनी कर देता है, खाना नहीं खाता, फास्ट फूड को रुचि से खाता है, अपना काम खुद नहीं करता, नहाने के बाद कपड़े स्नानघर में अनधुले छोड़ देता है, दूसरों से कोई मतलब नहीं रखता, पढ़ने की किताबों को छूता तक नहीं, हरदम उदास और भिन्न रहता है, कुछ कहें तो मुंह फुला लेता है, कम्प्यूटर के आगे बैठा ही रहता है। विश्वास के साथ एक भी काम नहीं करता।

जाहिर है ये कोई बीमारियां नहीं हैं, बालक से दूरी, संसर्ग और संवाद के अभाव में पनपी विकृतियां हैं। बालकों में विश्वास पैदा करने और उनकी ऊर्जा को सही दिशा में मोड़ने की जरूरत है। उच्च शिक्षा दिलाकर बालकों को पूर्ण बनाने की प्राय: अभिभावकों की आंतरिक आकांक्षा होती है, पर इन सबसे पूर्व अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ संबंध को पूर्ण बनाने की जरूरत है। उसकी पूर्णता से स्वत: बालकों में सही दृष्टि का विकास होगा कि माता-पिता के आधार बिना भी जीवन को किस तरह चलाया जाए कि समय का कैसे सदुपयोग किया जाए। एक विद्वान ने लिखा है कि यदि आप ऐसा चाहते हैं कि आपकी संतानें आपको 'भविष्य' में याद रखें, तो आप आज (वर्तमान में) उनके साथ रहना सीखें।

-बीआरआर माहेश्वरी मा. पब्लिक
सैकेण्डरी स्कूल, नागौर-341001

नैतिक शिक्षा और विद्यार्थी

❒ जसपाल कौर

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह परिवार में रहता है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है जहां बालक कुटुम्ब के सम्पर्क तथा संरक्षण में अधिक समय व्यतीत करता है। नैतिक शिक्षा का पाठ बालक परिवार से ही पढ़ना प्रारम्भ कर देता है क्योंकि नैतिकता किसी में पैदा नहीं की जाती वरन् यह अपने आप समय के अनुसार विकसित होती चली जाती है। यह हमारे मस्तिष्क में स्थापित अच्छे सम्बन्धों की, जिन्हें हम सभी के व्यवहारों तथा कार्यों में देखते हैं, अभिव्यक्ति है। लेकिन आज के व्यस्तता भरे जीवन में जहाँ माता-पिता दोनों ही कार्यशील हैं बालक की ओर कम समय दे पाते हैं। साथ ही संयुक्त परिवार का विघटन, आवागमन की सुविधाओं का अभाव आर्थिक कारण आदि से माता-पिता अपने परिवार से दूर कार्यस्थल पर ही रहते हैं जिससे बच्चों की देखरेख और उन्हें नैतिक रूप से शिक्षा देने का उनके पास समय नहीं होता है। अत: आज विद्यालयों से बालकों के नैतिक विकास की दृष्टि से पहले की तुलना में अपेक्षाएं बढ़ती जा रही है। वास्तव में आधुनिक सामाजिक व्यस्त संघर्षशील जीवन में शालाओं का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा संघर्षशील जीवन में शालाओं का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा के लिए शालाएं बहुत अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं।

बालक का समाज से सम्पर्क शाला से ही प्रारम्भ होता है जहां वह एक ऐसे माहौल में पलता-बढ़ता है जिनमें न तो उसका खून का रिश्ता है और न ही कोई वैरभाव वरन् यहां तो समाज के समान आयु के विभिन्न स्थितियों, रुचियों और वातावरण से आये बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण कर रहे होते हैं। अत: नैतिकता के विकास और संरक्षण के लिए शाला का वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज की विकृतियां यहां के वातावरण में कम देखने को मिलती हैं। यहाँ कुटुम्ब के समान स्नेह और प्यार के साथ-साथ सहयोग, सहानुभूति, आपसी अनपत्व आदि ऐसे संस्कार मिलते हैं जिनके कारण शालाओं में बालकों को सामुदायिक जीवन का उत्तम प्रशिक्षण मिलता है। यहाँ बालकों को सामुदायिक जीवन का उत्तम प्रशिक्षण मिलता है। यहां बालकों में ऐसी आदतों, भावनाओं, रुचियों तथा प्रवृत्तियों का विकास होता है जो जीवनभर उनके साथ रहती है। शाला में पढ़ते हुए बालक की आयु भी ऐसी होती है जब उन पर कोई भी छाप या प्रभाव सरलता से डाला जा सकता है। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को किसी भी आकार में ढालकर उसका स्वरूप परिवर्तित कर देता है उसी प्रकार शिक्षक भी बालक को नैतिक रूप से संस्कारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

नैतिक शिक्षा देने के लिए शाला के सभी अध्यापकों को तैयार रहना चाहिये। शिक्षक का अनुकरण बालक करते हैं। शिक्षक का व्यवहार, रहन-सहन, बातचीत का ढंग, उसका पहनावा, उसकी आदतें, सभी बालक पर प्रभाव डालती है। अत: नैतिकता के विकास के लिए शिक्षक को आदर्श मॉडल बनना जरूरी है। शिक्षक अपने आदर्श जीवन के माध्यम से बालकों में उचित प्रेरणा भरे, साथ ही उचित मानदण्ड प्रस्तुत करे, यह अति आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक मृदुभाषी हो, सादगीप्रिय हो। समय की पाबंदी को मानता हो। समय पर यदि शिक्षक स्कूल आता है तब बालक भी उसका अनुकरण करके समय पर स्कूल आना स्वत: ही सीख जाता है। शिक्षक का व्यवहार कुशल होना आवश्यक है। वह बालकों से प्रेम करे और अपने से बड़ों के प्रति आदरभाव रखे यह अति आवश्यक है। आत्मविश्वास, श्रमनिष्ठ, कर्मशील तथा स्वाध्याय को अपना धर्म मानने वाला शिक्षक स्वत: ही बालकों पर अमिट छाप छोड़ता है। इससे बालकों में भी अपने शिक्षक के अनुरूप कर्तव्यशील तथा निरन्तर अध्ययनशील रहकर नई-नई खोज करने की प्रेरणा मिलती रहती है। अपने सहयोगियों से मिलजुल कर कार्य करने, शीघ्र तथा सही निर्णय लेने की क्षमता तथा दया, सहानुभूति, विनम्रता आदि गुणों से लबरेज शिक्षक अपने विद्यालय के बालकों में आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। इसके विपरीत शिक्षक का कठोर व्यवहार, पक्षपात, नशा करने की प्रवृत्ति, बालकों को दण्ड देने, स्वयं समय पर कार्य न करने आपसी असहयोग, वैमनस्यता आदि के कारण बालकों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कुछ शिक्षक सस्ती लोकप्रियता के लिए गलत साधनों का प्रयोग करते हैं जो कि ठीक नहीं है। अत: इन सब बातों से दूर रहकर बालकों के समक्ष आदर्श व्यवहार, जीवनशैली, कार्य, विचार तथा मनोवृत्ति को अपना कर अपने विद्यालय के बालकों को आदर्शवान बनाकर अपने विद्यालय का ब्लॉक स्तर पर, जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर नाम रोशन किया जा सकता है। शिक्षक वह दीपक है जो स्वयं जलकर औरों को प्रकाशवान बनाता है। यदि एक शिक्षक भी विद्यालय में कुछ बालकों को नैतिक बनाने में सक्षम हो जाए तो वह दिन दूर नहीं जब समाज से बुराईयाँ, कुरीतियाँ धीरे-धीरे स्वत: ही समाप्त हो जाएँगी।

शिक्षक का आदर्श, आपसी सहयोग, बालकों के प्रति उनकी भावनाओं के साथ-साथ बालकों में चिन्तन की आदतों का भी विकास करना चाहिए। ग्रुप बनाकर कक्षा में कोई टॉपिक देकर चिन्तन के लिए बालकों को प्रेरित किया जा सकता है तथा स्वयं का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अवसर दिया जा सकता है। सभी शिक्षकों को नैतिक शिक्षा शिक्षण के लिए यदि आवश्यक हो तो प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है। शाला का प्रारम्भ सार्वजनिक प्रार्थना से किया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा हेतु एक सर्वमान्य सार्वजनिक पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिये तथा उसे विभिन्न स्तरों पर लागू किया जाना चाहिये। हरवार्ट की पंचपदी का प्रयोग करके इसके लिए उपयोगी साबित हो सकता है। कहानियों, चित्रों, प्रतिरूपों के माध्यम से नैतिक शिक्षा-शिक्षण को रोचक तथा सरल बनाया जा सकता है। कहानी विधि का प्रयोग प्री-प्राइमरी स्तर पर अधिक उपयोगी साबित हो सकता है। बालकों की समस्याओं पर विचार करना, तुलना करना या सोच विचार कर निर्णय देने के अवसरों का उपयोग करना सिखाया जाना चाहिये जिससे उनमें स्वयं सोचने

तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के गुणों का विकास होगा और बालक अपने इन्हीं गुणों के माध्यम से आदर्श प्रस्तुत करेगा।

इनके अतिरिक्त खेल का मैदान और कक्षा की गतिविधियाँ भी नैतिक शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से बराबरी से रहने, टीम स्पिरिट को प्रोत्साहित करने तथा दूसरों के व्यक्तित्व का आदर करने की भावनाओं को बल मिलता है। इसके अतिरिक्त कक्षा में सामाजिक सेवा कार्यक्रम (एन.एस.एस.) अन्य देशों या स्थानों के पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करना, प्राकृतिक आपदाओं का मुकाबला मिल-जुल कर करना, वीरों की ओजस्वी गाथाओं, जीवनियों के माध्यम से भी बालकों में नैतिक शिक्षा को विकसित किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त पुस्तकालय में पठन की आदत का विकास करना, सेमिनार में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना, शाला में हरे-भरे वृक्ष लगाना, खेल के मैदान को सुसज्जित करना, रेडक्रॉस की गतिविधियों में भाग लेना, स्काउट-गाइड का विद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण देकर बालकों को समाज सेवा के लिए प्रेरित करके उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व के गुणों को विकसित किया जा सकता है।

वास्तव में वह शिक्षा जिसमें नैतिक मूल्यों पर बल नहीं दिया जाता है वह दिशाविहीन तथा खोखली है। व्यक्तित्व को सही दिशा देने, व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का समाधान करने के लिए नैतिक शिक्षा दिया जाना जरूरी है। लेकिन नैतिक शिक्षा शिक्षण ऊपरी तौर पर नैतिकता सम्बन्धी तत्वों तथा बातों का परिचय कराना ही न रहे, वरन् यह छात्रों के जीवन को नैतिक सुदृढ़ आधार तथा मानवीय सम्बन्धों में भ्रातृत्व की भावना का विकास करने हेतु एक मार्गदर्शक के रूप में हो। यह तभी सम्भव है जब नैतिक शिक्षा विवेकपूर्ण ढंग से दी जाए, जिसके माध्यम से बालक के मस्तिष्क के साथ-साथ हृदय एवं संवेगों को परिष्कृत किया जा सके और बालक को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सके।

-अध्यापिका, रा.उ.प्रा.वि., सरजौली
पोस्ट बूज, जमवारामगढ़ (जयपुर) 303109
मो. 9413418004

सुधारें बच्चों का भविष्य

❒ मधुबाला शर्मा

वर्तमान काल में बालकों का भविष्य अंधकारमय प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में एक जटिल प्रश्न सामने आता है कि इस वैज्ञानिक युग में, भौतिकवादी प्रतिस्पर्द्धा के युग में, पाश्चात्य संस्कृति से परिपूर्ण विचारधारा के युग में बालकों का भविष्य कैसे सुधारा जाए? बालक जो भावी समाज की नींव होते हैं। उस नींव को किस प्रकार मजबूती प्रदान की जाए जिससे वे सुनागरिक बन सकें और समाज तथा राष्ट्र को भी सुदृढ़ता प्रदान कर सकें।

इस समस्या का समाधान हम एक क्षण में नहीं कर सकते। इसके लिए एक पीढ़ी को सर्वतोभावेन इस हेतु तन-मन-धन से प्रयास करने होंगे तभी आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कारवान, सभ्य एवं आत्मसम्मानी बनाया जा सकता है। किसी भी परिवार में ऐसी कोई जादू की छड़ी नहीं है कि बालकों पर घुमाई और बालकों का भविष्य प्रकाश में भर जाए। इसके लिए लम्बी तपस्या की आवश्यकता है। जो परिवार के सभी सदस्यों के साथ-साथ समाज एवं बालकों के भविष्य का गुरुत्तर भार वहन करने वाले शिक्षकों को करनी है किन्तु इसमें प्रमुख भूमिका परिवार की होती है।

परिवार एक प्रयोगशाला होती है और माता उसकी प्रमुख वैज्ञानिक। यदि इस प्रयोगशाला में सुसंस्कृत एवं आत्म सम्मानी बालकों का निर्माण करना है तो उसी के अनुरूप प्रयत्न एवं प्रयोग किये जाने चाहिए।

इसके अलावा हम यह कह सकते हैं कि परिवार एक पाठशाला है, बच्चा यहाँ जो भी सीखता है, वही उसके संस्कार बन जाते हैं। बच्चा कुम्हार की उस कच्ची मिट्टी के समान है जिससे कुम्हार अपने इच्छानुरूप पात्र बना सकता है। इस कच्ची मिट्टी में जिस प्रकार के संस्कार भरे जायेंगे उसी के अनुरूप पात्र निर्मित होंगे। यह माँ एवं परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर करता है कि वे उनमें किस प्रकार के संस्कार डालना चाहते हैं। क्योंकि मनुष्य का बचपन वह दर्पण है जिसमें उसके भावी व्यक्तित्व की झलक देखने को मिल जाती है। विश्व के महापुरुषों की जीवनी से यह स्पष्ट झलकता है कि उनका बाल्यकाल किस तरह अनुशासित, सुसंस्कृत एवं आत्म सम्मानपूर्ण था। उनमें साहस, आत्म विश्वास, धैर्य, संवेदना की ऐसी उदात्त भावनाएं थी, जिन्होंने उन्हें महापुरुष के स्थान तक पहुंचा दिया। इसके विपरीत अपराधी प्रवृत्ति के मनुष्यों की जीवनी से पता चलता है कि उनका बाल्यकाल किस प्रकार कुण्ठाओं से ग्रस्त था, अव्यवस्थित था? इसलिए बालकों का भविष्य सुधरे, इस हेतु माँ को पूर्ण मनोयोग से बालक के पालन पोषण का उत्तरदायित्व लेना चाहिए। क्योंकि परिवार में माँ ही एकमात्र ऐसी सदस्या होती है, जिसके सम्पर्क में बालक सबसे अधिक रहता है। गर्भ से लेकर ठीक से होश संभालने तक वह माँ के ही पास रहता है। यदि इस समय में उसकी देखभाल भली भाँति की जाए तो ऐसा कोई कारण नहीं कि हम उसके भविष्य के लिए चिन्तित हों और उसे महामानव की प्रतिमूर्ति न बना सके।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि बालक का भविष्य किसी एक कारक पर निर्भर नहीं करता। उसके भविष्य के लिए अनेक कारक जिम्मेदार हैं। अतः हम यहाँ एक-एक कर सभी कारकों पर चर्चा करते हैं।

सर्वप्रथम, गर्भाधान के पश्चात् माता एवं परिवार के लोगों को चाहिए कि वे गर्भिणी का विशेष ध्यान रखें। तीन माह के गर्भ पर पुंसवन संस्कार करवाया जाये। इस समय गर्भिणी को चाहिए कि वह अपना आहार-विहार, चिन्तन सही रखे। दूसरों के व्यवहार और वातावरण की शिकायत करने में समय और शक्ति न गँवाकर, धैर्यपूर्वक गर्भ को श्रेष्ठ संस्कार, देने का प्रयास करें। प्रसन्न रहें, ईर्ष्या, द्वेष क्रोध आदि मनोविकारों से बचती रहें। इसके लिये माँ के साथ-साथ परिवार के सभी सदस्य यह प्रयास करें कि गर्भ पर कुसंस्कारों की छाया तक न पड़ने पाए।

इसके पश्चात् जब बालक शिशु होता है उस समय भी माता को चाहिए कि वह उसमें उचित संस्कार ठीक से डाले। इस काल में माँ को चाहिए कि वह स्वयं नियन्त्रित रहकर शिशु का पालन पोषण करे। स्वच्छता का ध्यान रखना, एकान्त में शान्त भाव से दुग्धपान कराना-उनमें प्रमुख है। माँ का दुग्ध विभिन्न नाड़ियों से गुजर कर आता है तथा उसमें भावना भी संयुक्त होती

है। इसलिए यदि माँ के मन में खिंचाव-तनाव तथा हीन भावनाएं होंगी तो उन भावनाओं का प्रभाव दुग्ध द्वारा शिशु पर भी पड़ने की पूरी-पूरी सम्भावना होती है। जो आगे चलकर शिशु के प्रगति के मार्ग में अवरोधक सिद्ध हो सकती है।

इसके बाद जब शिशु बड़ा होता है और धीरे-धीरे बातों को समझने योग्य हो जाता है, यहीं से उसका शिक्षण प्रारम्भ होता है। इस अवस्था में परिवार ही उसकी प्रवेशिका होती है। जिससे वह सब कुछ सीखता है। परिवार की व्यवस्था इस प्रकार की हो कि बच्चा हर प्रकार की अच्छी आदतों का अनुकरण कर सके।

प्रगति का घोंसला छोटी-छोटी आदतों के तिनकों से बुनकर तैयार होता है। देखने में ऐसी आदतें छोटी भले ही हों परन्तु इसका प्रभाव बच्चों के कोमल मन पर बहुत अधिक पड़ता है। इसमें सर्वप्रथम है-नियमित दिनचर्या। प्रतिदिन समय पर उठना, स्वच्छता, स्नान, व्यायाम, खेलकूद आदि का उसमें पूरा-पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

इसके बाद ज्यों-ज्यों बालक का शारीरिक विकास होता है त्यों-त्यों उसमें उचित संस्कार पड़े, इसकी तरफ मनोयोग से ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि बाल्यावस्था में पड़े संस्कार ही बालक के भविष्य का निर्माण करते हैं। यद्यपि यह कुछ सीमा तक ठीक है जन्म लेने वाला बालक अपनी तरह के संस्कार लेकर आता है और अपनी अधिकांश जीवनयात्रा उन्हीं के सहारे प्रारम्भ करता है। जिस प्रकार कच्चे लोहे को पिघला कर इस्पात ढालने की अपनी विधा होती है। पेट्रोलियम से कीमती मोबी ऑयल निकालते हैं। उसी प्रकार बच्चे के संस्कार वे चाहे कितने भी जन्मों से जड़ पकड़े हुए हों उन्हें सुधारा और संवारा जाना बिल्कुल आसान बात है, यदि हम बच्चे को वैसी दिशा और वातावरण दे सकें।

इसके लिए प्रारम्भ से ही बालकों में ऐसी भावना भरनी चाहिए कि वे अपने से बड़ों का सम्मान करें, उनसे शिष्टाचार से बातचीत करें। इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि परिवार में भी इसी के अनुकूल वातावरण बनाया जाए, क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि बालक अनुकरण द्वारा सीखता है। इसके लिए आवश्यक है कि वह बड़े लोग भी बच्चों या अपने से छोटे-बड़ों से वैसा ही व्यवहार करें जैसे वे बच्चों से अपेक्षा रखते हैं। बड़ों को भी बच्चों के साथ शिष्टाचार के साथ पेश आना चाहिए। व्यवहार में नम्रता-शालीनता-सज्जनता होना अत्यन्त आवश्यक है।

इसके लिए अतिरिक्त बालकों में प्रारम्भ से ही धार्मिक-भावनाओं का समावेश किया जाना चाहिए ताकि वे धर्म के मूल्यों को समझ सके, उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ सके, इससे वे बड़े होकर अनीतिगामी न हो सकेंगे।

हमें बालकों में मितव्ययिता एवं सादगी की आदत का भी विकास किया जाना चाहिए। बच्चों को स्वच्छ तथा स्वस्थ तो रखा ही जाए, उन्हें आकर्षक भी बनाया जाए किन्तु किसी भी दशा में फैशनेबल न बनाया जाए। इससे समय और धन दोनों की हानि है। उन्हें सादगी एवं सज्जनता का गौरव सीखने दिया जाए, इसमें वे सादगी में हीनता का अनुभव न करेंगे, उसकी प्रामाणिकता पर स्वयं सन्तुष्ट होंगे तथा दूसरों की दृष्टि से वजनदार सिद्ध होंगे।

इसके अतिरिक्त माता-पिता को यह भी पूरा ध्यान रखना चाहिए कि बालकों को आदेश कब दें? बच्चे को आदेश देने का सर्वोत्तम समय वह होता है, जब वह माँ के पास शांत, स्वस्थ मनः स्थिति में होता है। आदेश मुख्यतः विधेयात्मक होने चाहिए निषेधात्मक नहीं। 'इसे मत करो', 'वहाँ मत जाओ', जैसे आदेशों के स्थान पर उन्हें आकर्षक और प्रशंसापूर्वक भाव से आदेश देना चाहिए। क्योंकि बालकों से जोर जबदरदस्ती काम लेने का कोई बार प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है।

बच्चे को बार-बार टोकना भी ठीक नहीं, क्योंकि एक तो बच्चे स्वभावतः चंचल होते हैं, किसी काम पर अधिक नहीं टिकते। फिर टोकाटोकी से तो इनकी उस थोड़ी बहुत एकाग्रता, तन्मयता में भी विक्षेप पड़ता है। फिर बच्चे के मन पर यदि टोकने से उखड़ जाने वाले संस्कार अंकित हो गये तो उनकी एकाग्रता की शक्ति पर इसका प्रभाव पड़ता है और आगे चलकर वे किसी भी काम पर तन्मय-एकाग्र नहीं हो पाते। जो उन्हें असफलताओं की ओर ले जाती है।

माता-पिता को चाहिए कि बच्चे में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का विकास करें, इसके लिए माता-पिता को भी किसी समस्या के प्रति ठोस निर्णय लेने चाहिए। प्रायः माता-पिता, बच्चे के गलत निर्णय लेने पर उन्हें डाँट फटकार लगाते हैं या प्रताड़ित करते हैं-यह गलत है। गलत निर्णय लेने पर बच्चों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए तथा उनको प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास करें, इससे बच्चों में आत्म-विश्वास जागेगा और उसे सही निर्णय लेने में सहायता मिलेगी।

वस्तुतः बच्चे की आदतों की पूरी जिम्मेदारी माँ बाप की है। पाँच वर्ष की उम्र तक ही बालक योग्य माँ से इतना सीख सकता है, जितना अगले चार वर्ष तक भी विद्यालय में न सीख सकेगा।

कई लोग कठिन नियंत्रण और बच्चों को भयभीत रखकर उनके सुधार की अपेक्षाएँ किया करते हैं, वे दोहरी भूल करते हैं। दोपहर की रेत से अधिक से अधिक पैर जल सकते हैं किन्तु ज्वालामुखी तो सर्वस्व नाश करता है ऐसे बालक तो और भी भयंकर अपराधी और दुष्ट प्रकृति के हो जाते हैं अतः दबाव डालने की नीति तो बिल्कुल अव्यावहारिक है।

कुशल माता-पिता बच्चे के संवेदनशील हृदय और मस्तिष्क के साथ अपनी बौद्धिक-उर्वरता जोड़ दें, तो चोर की वीरता को सिपाही के शौर्य में बदल देने की तरह सुधारा और सजाया जा सकता है। यह रचनात्मक दृष्टिकोण हर माता-पिता में विकसित हो तभी भावी पीढ़ी की सुसंस्कृत रचना साकार हो सकती है।

इसके अतिरिक्त बालकों में स्वावलम्बन की भावना का विकास किया जाना भी अत्यन्त आवश्यक है। आजकल विशेष रूप से देखा जा रहा है कि बालक किसी भी कार्य को करने में अपनी तौहीन समझते हैं। अतः बालकों को श्रम का महत्व अवश्य समझाया जाना चाहिए।

अतः यदि परिवार तथा माता-पिता प्रारम्भ से ही बच्चे के क्रियाकलापों की ओर ध्यान दें, बच्चों की चहुँमुखी प्रतिभा को विकसित करने में अपना पूरा योगदान दे तो कोई कारण नहीं कि बच्चे सुसंस्कृत, सभ्य, आत्म स्वाभिमानी, निडर एवं आत्मनिर्भर न बन सकें और समाज के आधार स्तम्भ सिद्ध न हों।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक युग के बच्चों का भविष्य कैसे सुधरे? यह प्रश्न चुनौती भरा अवश्य है किन्तु असम्भव नहीं। यदि प्रत्येक माता-पिता थोड़ी सावधानी रखें तो भावी पीढ़ी का सुधरा हुआ रूप प्रस्तुत किया जा सकता है।

बी-3-334, सुदर्शना नगर, बीकानेर

युवा ही बनाएंगे बहादुर नई दुनियाँ

❒ करण सिंह चौहान

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तेज गति से हो रहे मूल्य ह्रास को स्पष्ट देखा जा सकता है। बहुत से क्षेत्रों में तो यह गिरावट हमारे पूर्वजों के अनुभव व दर्शन के पैमाने की सीमा को भी लांघ चुकी है। हम भी अपना समय कहीं खो न दें, इसलिए भूल का अहसास होते ही सुधार के लिए ठोस कदम उठाना आवश्यक है।

हम आज अपने ऐतिहासिक अभिनन्दन 'नमस्कार' से कोसो दूर होकर आधुनिक 'हाथ' का प्रयोग करते हुए वास्तविक आदर खोते जा रहे है। 'पिताश्री' एवं 'माताश्री' जैसे आदरणीय सम्बोधनों को छोड़ 'डैड' एवं 'मॉम' के प्रयोग को आधुनिकता का चिन्ह समझने लगे हैं। चाहे हम इन उत्कृष्ट मूल्यों को प्राचीन कह कर नकार दें, परन्तु इनके बारे में गहनता से विचार करना अति आवश्यक प्रतीत होता है।

युवा वर्ग असीमित ऊर्जा एवं महत्वपूर्ण आकांक्षाओं का एक सतत स्त्रोत है। इन्हें आने वाले कल में नायक की भूमिका निभानी है और इसी दिशा में युवा वर्ग को दिशा-निर्धारण करने के लिए चार स्तम्भ हैं माता-पिता, शिक्षक, वातावरण एवं स्वयं। लेकिन दुर्भाग्यवश सही मार्ग दर्शन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता का अभाव, उचित अवसर एवं लक्ष्य निर्धारण में एकाग्रता की कमी, आध्यात्मिकता शिक्षा एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता के कारण वे वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं और इन कर्णधारों के सहयोग से समता वंचित होते हुए हताश हो उठता है। परिणामवश इसाक ऐसीमोव का यह कथन सत्य हो जाता है 'सात करोड़ में से मात्र एक व्यक्ति ही समय की बालू रेत पर अपने पदचिन्ह छोड़ पाते हैं, बाकी तो कीड़े-मकोड़ों की तरह जीवन यात्रा पूरी करते हैं।'

माता-पिता एवं शिक्षक जीवन में पुलों की भूमिका निभाते हैं, जिस पर युवा पीढ़ी अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होती है। अपना दायित्व निभाने के उपरान्त परिवारजन एवं शिक्षक यह संदेश देते हुए कि युवा अब अपने स्वयं पुलों का निर्माण करें एवं समाज के प्रति अपना दायित्व निभाए, समय के कालचक्र में विलीन हो जाते हैं। काश! इस आत्मीय संदेश को गम्भीरता से लिया जाता। अगर आज हम हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण करें तो उस समय के दिशा-निर्देश आज भी उतने ही प्रासंगिक नजर आएंगे, जितने हजारों वर्ष पूर्व थे। जैसे शिक्षा समाप्ति पर गुरु की सीख सदा बोलना, गुणों का अनुसरण करना, ग्रंथों का अध्ययन करना कभी नहीं छोड़ना, अपने माता-पिता की पूजा करना और जो भी देते हों, अपनी इच्छा से, यथा शक्ति तथा सहानुभूति से देना आदि। अगर उक्त सीख का अनुसरण किया जाए तो वर्तमान की कई समस्याओं का निराकरण हो जाएगा।

हमारे देश की प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951-1956 में शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य व्यक्ति में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना रखा गया था। लेकिन आज हम कहां पर पहुंच चुके हैं। यह रोजमर्रा के उदाहरणों से स्पष्ट होता है। जैसे दूरभाष पर पूछने पर अपने पुत्र/पुत्री से कहते हैं- 'कह दो मैं घर पर नहीं हूँ।' मित्र की शादी के निमंत्रण पर 'वैसे मेरा अभी कोई अवकाश तो शेष नहीं है, परन्तु आप शादी में बीमारी का अवकाश लेकर आ जाऊंगा। ऐसी स्थिति में अब हमें एक ऐसी पद्धति की आवश्यकता है, जो केवल मस्तिष्क की शक्ति नहीं, अपितु मस्तिष्क, हाथ व हृदय तीनों के समन्वय पर आधारित हो, जिससे जीवन मूल्यों का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके। यह शिक्षा पद्धति हमें अपने स्वयं द्वारा ही परिवार से शुरू कर बच्चों को इसके प्रति प्रदान करनी होगी।

एक अत्यन्त ही व्यस्त व्यापारी थका हुआ घर आया और आते ही समाचार-पत्र पढ़ने लगा। उसका छोटा पुत्र उससे बात करने का प्रयास रहा। उसे दूर भेजने के प्रयोजन से उस व्यापारी ने समाचार-पत्र के एक पृष्ठ को फाड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए तथा बच्चे को उस फटे पृष्ठ को जोड़ने के लिए कहा। थोड़ी देर बाद उसका पुत्र वापस आया और जुड़ा हुआ समाचार-पत्र अपने पिता को थमा दिया। कैसे? उस समाचार-पत्र के पृष्ठ के पीछे एक बच्चे को सही तरह से विकसित होने का अवसर प्रदान किया जाए तो संसार स्वतः ही आज हम दोराहे पर खड़े हैं और निर्णय करने में गम्भीर त्रुटियां करते हैं। हम अपनी समझ-बूझ और ज्ञान के अहंकार के आधार पर दूसरों के लिए निर्णय करते रहते हैं। एक बच्चे ने अपने पिता से कहा कि कक्षा में उसे ब्लैक बोर्ड नजर नहीं आता। पिता ने उसकी आंखों की बहुत से नेत्र चिकित्सकों से जाँच करवाई। सभी चिकित्सकों ने यही कहा कि उसके नेत्र ठीक हैं। जब उस बच्चे से पूछा गया, तो उसने कहा 'मेरे आगे एक लम्बा लड़का बैठता है इसलिए मुझे ब्लैक बोर्ड नजर नहीं आता।'

जीवन मूल्यों के अतिरिक्त हमें सार्वभौमिक मूल्यों के बारे में सजग रहना आवश्यक है, जैसे-'अहिंसा, नम्रता, मानवता, प्रसन्नता, दान देने की प्रवृत्ति आदि। सार्वभौतिक मूल्यों के आधार पर ही अन्य आवश्यक मूल्यों का निर्धारण करते हैं जैसे गरीबों के प्रति दयाभाव, धर्म निरपेक्षता, हर एक से स्नेह, उत्कृष्टता, सहभागिता, दूसरों के विचारों का आदर, उत्तरदायित्व, सहानुभूति आदि। जीवन मूल्यों के निर्धारण के लिए स्वावलम्बी होना, नियमों पर आधारित जीवन जीना एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

स्वावलम्बी होना क्यों महत्वपूर्ण है, इसे यूं समझे। एक व्यक्ति को एक तितली की चक्रपट्टी (कोंकुन) मिली। एक दिन उसे चक्रपट्टी में एक छोटा छिद्र दिखाई दिया। उसने देखा कि तितली उसमें से बाहर आने का प्रयत्न कर रही है, मगर छिद्र से निकल नहीं पा रही है। उसने कोकून का छेद बड़ा कर दिया और तितली बाहर आ गई। परन्तु उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि उस तितली के शरीर पर सूजन थी और उसके पंख बहुत छोटे थे। वह तितली को कई दिनों तक देखता रहा, मगर न तो कभी उसके पंख बढ़े और न ही सूजन मिटी। वह जीवन पर्यन्त उसी अवस्था में रही तथा कभी भी उड़ान नहीं भर सकी। आखिर ऐसा क्यों हुआ? अपनी दयादृष्टि व जल्दबाजी से उस व्यक्ति ने प्रकृति के नियमों को तोड़ दिया था। कोकुन से निकलने के प्रयास

से ही तितली के अंगों का तरल केमिकल पंखों में जाता है और पंख पूर्ण रूप से विकसित होकर उसे स्वतंत्र होने एवं उड़ान भरने में मददगार होते हैं। प्रकृति के नियमों के अनुसार संघर्ष कर स्वावलम्बी होना एक आवश्यक प्रक्रिया है।

प्रकृति के ये उदाहरण उस शिक्षक की भांति है जो सिर्फ विवेक एवं ज्ञान के भवन में ही प्रवेश नहीं दिलाते बल्कि स्वयं के लिए मनन करने की शक्ति प्रदान करती है, ताकि जीवन में संघर्ष की शक्ति प्राप्त हो सके।

हम स्वयं के लिए नियम बनाने में आनन्द का अनुभव करते हैं और उससे भी अधिक आनन्द हम उस नियमों को तोड़ने से प्राप्त करते हैं। ऐसी स्थिति में मूल्य आधारित जीवन का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि क्या नियम के बिना एक सैनिक युद्ध कर सकता है? क्या एक कैप्टन अपने जहाज को उड़ा सकता है? क्या एक खिलाड़ी खेल सकता है? क्या एक संगीतकार वाद्य बजा सकता है? नहीं तो फिर अपने जीवन में क्या हम सांस्कृतिक, वित्तीय, शिक्षा, व्यवसाय, वातावरण, सामाजिक दायित्व आदि पहलुओं का दायित्व बिना नियमों के निभा सकते हैं।

रोशनी को लेकर चलने से छाया पीछे रह जाती है-यह रोशनी आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाने से सहज प्राप्त हो जाती है। रुडयार्ड किपलिंग की पंक्तियों में एक व्यवहारिक आध्यात्मिक जीवन का सुन्दर चित्रण है। अगर आप समूह में रह कर भी अपने गुणों को सुरक्षित रख सकें, अगर राजाओं के साथ रहकर भी अपना सामान्य व्यवहार न छोड़ें, अगर तुम्हारे शत्रु या मित्र कभी पीड़ा न पहुँचा सकें और अगर सब व्यक्ति आपके साथ हों, मगर कोई भी अधिक नजदीक नहीं हो, तो ही यह वसुन्धरा और इससे जो कुछ है तुम्हारा होगा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण सदैव कोई चमत्कार प्रदान नहीं करता, लेकिन धारणा में बदलाव अवश्य प्रदान करता है, जिससे समता की स्थिति प्राप्त होती है एवं हर परिस्थिति में जीवन जीने की कला निहित होती है। मूल्यों पर आधारित जीवन से हम अव्यवस्था को व्यवस्था और चिन्ता को आनन्द में बदल सकते हैं तथा ज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर हो सकते हैं। हम करने में सक्षम है, परन्तु हमने यदि इस दिशा में कदम उठाने में विलम्ब किया तो प्रकृति, जो सर्वशक्तिमान है इस कार्य को सम्पादित करने के लिए ठोस कदम उठाएगी।

-ग्राम-श्रीसेला वाया बाली, जिला-पाली
फोनः 02938-222013

मूल्यपरक शिक्षा-एक विचार

❒ रमेश चन्द्र कनेरिया

शिक्षा : जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है, जहां सच्चे, सभ्य और चरित्रवान नागरिकों को ढाला जाता है। बिना शिक्षा के किसी भी देश का आदर्श निर्माण किया जाना संभव नहीं है। 21वीं सदी में प्रवेश करने वाली भावी पीढ़ी को सुशिक्षित कर स्वानुशासित बनाना हमारा कर्तव्य है। किन्तु उस कर्तव्य का निर्वहन कैसे हो? यह एक चिन्तन का विषय है।

स्वामी विवेकानन्द ने 19वीं सदी में शिक्षा के बारे में अपनी अभिव्यक्ति निम्न शब्दों में प्रस्तुत की थी कि 'शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूंस-ठूंस कर भर दिया गया है। हमें उन विचारों की अनुभूति करने की आवश्यकता है जो जीवन-निर्माण और चरित्र-निर्माण के लिये आवश्यक हो। यदि आप पांच परखे हुये सिद्धान्तों को ही अपने जीवन में अपना लें तो आप पूरे ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करने की अपेक्षा ज्यादा शिक्षित हैं।'

19वीं सदी में कही गई ये बात आज भी शिक्षा जगत में शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करने के लिऐ सटीक एवं खरी उतर रही है। शिक्षा में वर्तमान में 'नैतिक आदर्श' मात्र ज्ञान का विषय बनकर रह गये हैं। आचरण में उसका अंश मात्र भी दृष्टिगत नहीं हो रहा है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53), श्री प्रकाश समिति (1959-60), कोठारी आयोग (1964-65), एन.सी.ई.आर.टी. (1975), राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रारूप (1979) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने 'मूल्य परक शिक्षा' पर भले ही जोर दिया हो किन्तु उसका प्रभाव नगण्य सा प्रतीत हो रहा है।

यद्यपि यह सही है कि भौतिक प्रगति और समृद्धि के बिना कोई भी राष्ट्र प्रगतिशील नहीं कहलाता किन्तु यह भी स्मरण रखना होगा कि बिना नैतिक अंकुश और नियंत्रण के, भौतिक लालसा की उत्कण्ठा ने अशान्ति को ही जन्म दिया है। आज उसी का दुष्परिणाम पूरे देश में परिलक्षित हो रहा है। तभी तो सत्य के नाम पर छल, चोरी, लूट-पाट, काला बाजारी, दलाली, अपहरण, फिरौती, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार की घटनाएं बढ़ रही हैं। आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्तता, अलगाववादी दृष्टिकोण, संसद पर हमला, रेल की पटरियों पर बम, टू जी स्पेक्ट्रम, किडनी चोरी जैसे काण्डों की भरमार चल रही हैं। आये दिन हत्याएं, भ्रूण हत्याएं और आत्म हत्याएँ हो रही हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र में संकीर्णता के सांप जहर उगल रहे हैं। एक दूसरे पर अविश्वास के अजगर ने अपनत्व को लील दिया है। गड़बड़ियां गिरगिट की तरह नित नया रंग बदल रही हैं। भ्रातृत्व भावना की जगह ईर्ष्या द्वेष के बम-बारूदों की बोली में बात हो रही है। चारों और बड़बोलेपन के बिच्छु डंक मार रहे हैं। स्वार्थरूपी मगरमच्छ देश के प्रजातांत्रिक मूल्यों को निगल रहे हैं। सहिष्णुता, दया और परोपकार का ग्राफ ऊंचा नहीं पढ़ पा रहा है।

ऐसे समय में 'मूल्यों की शिक्षा' ही उपरोक्त समस्याओं से जूझने का एक मात्र समाधान लग रहा है। बिना नैतिक अंकुश के समाधान की ललक आकाश कुसुम सी दिखाई दे रही है।

शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के मन और मस्तिष्क को इस शिक्षा की उपादेयता के लिए तैयार करना होगा। जब तक 'मूल्यों की शिक्षा' के प्रति शिक्षाविदों, विद्यालय संचालकों और शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं होगा तब तक शिक्षा से 'व्यवहार परिवर्तन' की बात करना बेईमानी ही कहा जायेगा। इस पर चिन्तन कर सुधार करने की आवश्यकता है ताकि सच्चे, प्रमाणिक और निष्ठावान बालकों का निर्माण हो सके।

-शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक, माध्य.शिक्षा विभाग, कोटा

श्रद्धांजलि

शताब्दी शिक्षक श्री तेजकरण डंडिया की याद में

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

उजाले मेरी यादों के अपने पास रहने दो

राजस्थान के शताब्दी शिक्षक श्री तेजकरण डंडिया नहीं रहे। पिछले आठ दशकों से राजस्थान में शिक्षा की अलख जगाने वाले डंडियाजी दरअसल एक युग के प्रतिनिधि शिक्षक थे। वे हम शिक्षकों के पितामह थे। सदैव शिक्षा व संस्कार तथा शिक्षक व शिक्षार्थी के बारे में चिन्तनमग्न रहने वाले डंडिया साहब शिविरा के नियमित पाठक एवं शुभचिन्तक थे। उनसे बात होती रहती थी। पत्र व्यवहार था। शिक्षक दिवस' 12 के दिन सायं उनके निवास पर प्रणाम करने हम गए थे। बहुत खुश हुए। उनके कृतज्ञ शिष्य धोक लगाने आ रहे थे। उनका घर जैसे शिक्षकों के लिए तीर्थस्थल सा लग रहा था। इस दौरान आने वाले श्रद्धालुओं में महान कमेन्टेटर सरदार जसदेव सिंह एवं उनकी पत्नी भी थी।

वे गणित के निष्णात शिष्य थे। डंडियाकृत गणित को हम भूल नहीं सकते। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान को गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। बोर्ड की यह पहचान बनाने में जिनका पसीना बहा, उनमें डंडिया साहब का अग्रणी स्थान है। यही कारण है कि बोर्ड के स्वनाम धन्य सचिवों की शृंखला में उनका नाम अत्यन्त श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उन्हें महामहिम राज्यपाल महोदय से शिक्षक पुरस्कार भी मिला। आप 'प्यास जगाओ प्रायोजना' के प्रवर्तक थे, जिसने हजारों छात्र-छात्राओं की हस्तलिपि सुधारने का काम किया। वे अब नहीं है। वहाँ चले गए हैं जहाँ जाने के बाद कोई लौटता नहीं। मगर उनका अवदान व आशीर्वाद हमारे साथ है। यों ही नहीं बन जाता कोई शताब्दी शिक्षक। वे त्यागी, तपस्वी, साधक, आराधक थे। ईश्वर उन्हें चिरशान्ति तथा राज्य के शिक्षकों को उनके द्वारा प्रतिपादित महान शिक्षक, महात्मा श्री तेजकरण डंडिया को शिविरा का विनम्र प्रणाम एवं आदरांजलि-श्रद्धांजलि। उनकी पुस्तक 'उजाले मेरी यादों के अपने पास रहने दो' में उपसंहार शीर्षकाधीन छपी इन प्रेरणादायी पंक्तियों के साथ-

नश्वर है यह सारी जगती,
फिर भी हमको जीना है।
सोच करे तो सारा जीवन
मर-मर कर ही खोना है।
जो भी क्षण बचे हैं अनुपम
व्यर्थ नहीं तुम इनको समझो।
शुभ के अर्थ लगाकर इनको
जी-जी कर यूं मरना सीखो।

-वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका

युगदृष्टा थे डंडिया जी

शिक्षा जगत के युगदृष्टा, पथ प्रदर्शक स्व. तेजकरण जी डंडिया का पूरा जीवन शिक्षा को समर्पित था। एक शताब्दी से ऊपर जीने वाले वैसे ही विरले व्यक्ति होते है, लेकिन उनका जीवन तो विशेष था, जो शिक्षा जगत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखे जाने थे। श्री डंडिया जी ने 22 वर्ष की उम्र में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया था, जो निरन्तर बुलन्दियों तक पहुँचते हुए जीवन के 102 बसन्त तक जारी रहा। श्री डंडिया जी आदर्श शिक्षक, उत्तम नागरिक तथा करुणावान समाजसेवी के रूप में जीवन जीया जो अब रिक्त हो गया। शिक्षा, शिक्षक तथा बच्चों को उन्होंने जीवनपर्यन्त अपनी सोच व अनुभव से नई दिशाएं दीं। उनके द्वारा किया गया गणित में लेखन कार्य व लेख सुधारने के लिए नवाचार प्रयोग शिक्षक, बच्चे तथा अभिभावकों के लिए हमेशा के लिए सीख देने वाले अमिट दस्तावेज बन गए हैं।

जयपुर के मध्यम परिवार में 20 जनवरी 1911 को जन्में स्व. डंडिया जी ने सन् 1933 में जयपुर की सुबोध मिडिल स्कूल में सहायक अध्यापक के पद पर शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1937 में सरकारी सेवा में पदार्पण किया तथा प्रथम नियुक्ति रा.उ.प्रा. विद्यालय बांदीकुई में सहायक अध्यापक के पद पर हुई। आगे पदोन्नत होते हुए सन् 1958-59 में जयपुर के रा.उ.मा.वि., माणक चौक में प्रधानाचार्य बने। इतना ही नहीं आगे चलकर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर के सहायक सचिव, उप सचिव तथा सचिव पद तक पहुँचे।

श्री डंडिया जी ने अपनी विशेष पहचान शिक्षा विभाग में अपनी सेवाएं देकर के तो बनाई ही थी, लेकिन विशेष प्रतिभा के धनी सोच व मन में जज्बा होने के कारण अपनी अलग छाप छोड़ी जो हमेशा के लिए अमिट हो गई। वे गणित विषय के ख्याति प्राप्त विद्वान व लेखक बने। उन्होंने गणित पर 50 से अधिक पुस्तकें स्वयं ने तथा श्री ब्रजबल्लभ जी माथुर के साथ लिखी। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में 10वीं कक्षा

की अनिवार्य गणित डंडिया एण्ड माथुर के नाम से लगभग 25 वर्ष से अधिक माध्यमिक स्तर के बच्चों ने पढ़ी। इस कार्य में सहयोगी के रूप में श्री एल.आर. गुप्ता भी रहे। राज्य का बहुसंख्यक समाज उन्हें गणित के लेखक के रूप में आज भी जानता है।

अपनी स्व उपज, सोच अनुभव से स्व. डंडिया जी ने मनोवैज्ञानिक आधार पर लेख सुधार के लिए 'प्यास जगाओ' नाम से परियोजना विकसित की। राज्य के शिक्षा विभाग ने भी इसे स्वीकार किया तथा स्व. डंडिया जी के निर्देशन में डंडिया तकनीक के नाम से लाखों शिक्षकों व बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वैज्ञानिक दृष्टि से स्व. डंडिया जी द्वारा विकसित की गई तकनीक का आज भी लेख सुधार के लिए अपनाया जाए तो सुन्दर लेखन में वरदान सिद्ध होगी। लेख सुधार के लिए उनके द्वारा लिखी पुस्तकें व विकसित परियोजना आज शिक्षा जगत के लिए अनुपम धरोहर बन गई।

श्री डंडिया जी को सन् 1995 में दी ग्रेट सन ऑफ राजस्थान की उपाधि से नई दिल्ली में ऑल इंडिया कांफ्रेन्स ऑफ इंटेलेक्चुवल्स संस्था ने नवाजा था। स्काउटिंग का सर्वोच्च सम्मान सिल्वर एलेफेंट महामहिम राष्ट्रपति द्वारा उन्हें नवाजा गया था। शिक्षक दिवस 5 सितम्बर सन् 1971 को राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान से शिक्षा विभाग द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इसी प्रकार उनको अनेक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्होंने शिक्षा जगत को नई सोच, दिशा तथा अपने अनुभवों की कार्य योजना दी जो आज ज्योति पुंज बन कर के अपनी रोशनी बिखेर रही है।

राज्य के राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय पुरस्कृत शिक्षकों के लिए गौरव की बात है कि स्व. डंडिया जी स्वयं सन् 1971 के पुरस्कृत शिक्षक थे तथा उन्होंने राज्य के सभी पुरस्कृत शिक्षकों को एक मंच प्रदान किया। पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान के संस्थापक संरक्षक का पद स्वीकार किया। सन् 1995 से जब फोरम का गठन हुआ था, तब से जीवन पर्यन्त तक संरक्षक रहे थे। उनके द्वारा दी गई सीख हम पुरस्कृत शिक्षकों के लिए आगे मार्गदर्शन का काम करेगी। इसीलिए स्व. डंडिया जी द्वारा स्वीकार किया गया संरक्षक का पद उनके नाम से ही

हमेशा के लिए पुरस्कृत शिक्षक फोरम के लिए यथावत रहेगा। फोरम की कार्यकारिणी द्वारा लिए गये प्रस्ताव को स्व. तेजकरण जी डंडिया स्मृति श्रद्धांजलि सभा में स्वीकृति मिल गयी। साथ में श्री डंडिया जी की स्मृति को हमेशा बनाये रखने व शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए इसी वर्ष से शिक्षाविद् तेजकरण डंडिया स्मृति चार शिक्षक पुरस्कार दिये जाएंगे। इनमें माध्यमिक, प्रारम्भिक तथा संस्कृत शिक्षा के 1-1 तथा सेवानिवृत्ति के उपरान्त सक्रिय पुरस्कृत शिक्षकों का एक पुरस्कार होगा।

श्री डंडिया जी के 103वें जन्म दिवस पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम ने अपने संस्थापक संरक्षक का 27 जनवरी 2013 को श्री महावीर दिगम्बर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुर के सभागार में सार्वजनिक अभिनन्दन किया था। माननीय मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री के सानिध्य में यह उनके जीवन का अंतिम सार्वजनिक अभिनन्दन कार्यक्रम था। इस अवसर पर उन्होंने पुरस्कृत शिक्षकों को सीख दी थी कि केवल सरकार द्वारा पुरस्कृत हो जाने से काम नहीं चलेगा। पुरस्कृत शिक्षकों को इस सम्मान की गरिमा बनाये रखने के लिए आगे ऐसा काम करना है, जिससे बच्चों व समाज का विकास हो सके।

–रामेश्वर प्रसाद शर्मा
–3/403, विक्रूट, गांधी पथ, वैशाली नगर, जयपुर
मो. 9413801999

आत्मीयता को नमन

यह शैक्षणिक सत्र 1994-95 की बात है। मैं जयपुर के मोदीखाना क्षेत्र में स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक पद पर कार्यरत था। आदरणीय तेजकरण जी डंडिया द्वारा प्रतिपादित हस्तलिपि सुधारों प्रायोजना 'प्यास जगाओ' उन दिनों खूब प्रचलित थी। मैंने भी अपने विद्यालय की कक्षा 6 से 10 के लगभग 175 विद्यार्थियों के लिए अक्टूबर माह में 'प्यास जगाओ' शिविर लगाने का मानस बनाया।

तत्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) श्री घनश्याम सुखवाल के समक्ष अपना विचार प्रकट किया। उन्होंने डंडिया साहब से मेरी मुलाकात करवाई। डंडिया जी ने प्रसन्नतापूर्वक अपने आशीर्वाद का हमें आश्वासन दिया।

शिविर का बहुत प्रभावी आयोजन हुआ। डंडिया जी तीन बार निरीक्षण करने पधारे। निरीक्षण को वे शिक्षकों व विद्यार्थियों से अपना मिलना कहते थे। एक-एक विद्यार्थी की कॉपियाँ देखते और अपने आशीर्वाद वचनों से हौंसला अफजाई करते। गजल का व्यवहार था जो उन्हें महामानव कहलाने योग्य है। मैं साथ रहता। बड़ा अच्छा लगता।

समापन अवसर पर सब बच्चों को अपने हाथों टॉफियाँ वितरित की। एक-एक बच्चे से मिले। शिक्षकों को आशीर्वाद दिया। ऐसे आत्मीय और स्नेही थे डंडिया साहब।

–महावीर प्रसाद गर्ग
4/475, जवाहर नगर, जयपुर
मो. 9414466463

अर्पित भाव सुमन...

शोकाकुल शिक्षा जगत नयनन आंसूधार।
चले गये ये छोड़कर हमें बीच मझधार।।
चलकर फर्श से अर्श पर पहुँच गये थे आप।।
विशेषज्ञ आप गणित के अमिट रहेगी छाप।।
कहते कहते बीच में औचक हो गये मौन।
किससे पूछे हम अहो! गणित पढ़ावे कौन।।
श्री तेज करण जी डंडिया श्रद्धा सहित नमन।
सब शिक्षकों की ओर से ये अर्पित भाव सुमन।।

–टेकचन्द्र शर्मा
शर्मा सदन, मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं
मो. 9352116526

स्नेह के सौदागर

श्री डंडिया जी को गणित की पुस्तकों के लेखक एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के सचिव के रूप में तो जानता था पर जब शिविरा में प्रकाशित मेरे लेखों की एक पोस्टकार्ड में उन्होंने सराहना की तो मुझे उनमें अपनापन लगा और मैंने निःसंकोच उनसे उनके विद्यार्थी काल और आज की शिक्षा तथा जीवनशैली पर प्रश्न भेजे और उन्होंने सहृदयपूर्वक उत्तर दिये और यह परिचर्चा शिविरा में बीते कल की मुलाकात आज से शीर्षक के साथ छपी। इसके बाद दो और परिचर्चाएं छपी और गत वर्ष शतायु शिक्षाविद से साक्षात्कार बोर्ड जनरल और शिविरा दोनों में प्रकाशित हुए।

गणित से बच्चे क्यों डरते हैं? पूछने पर उन्होंने कहा था, मैं स्वयं गणित से डरता था पर मोतीलाल जी माड़साब ने मेरा डर तो दूर कर दिया और फिर तो गणित की पुस्तकें लिखने लगा। डंडिया माथुर की पुस्तक वर्षों तक लोकप्रिय रही।

उनके स्नेह एवं सादगी तथा भाषण में बुलन्द आवाज और प्रायः हर स्पीच में इन पंक्तियों के प्रयोग ने सदैव सभी को प्रभावित किया-'खुद ही को कर बुलन्द इतना कि हर तदबीर से पहले खुदा बंदे से यह पूछे कि बता तेरी रजा क्या है?' लेख सुधार के उनके प्रयोग 'प्यास जगाओ' तथा 'डंडिया तकनीक' के बारे में भी साक्षात्कार किया था। गणित विषय पर उन्होंने 50 से ऊपर पुस्तकें लिखी है। उनकी कमी मुझे बहुत खलती है और याद आता है उनका स्नेहिल स्पर्श जो मुझे हमेशा मिलता रहता था जब भी किसी समारोह में हम मिलते थे तो वे मेरे ही कंधे पर हाथ रख कर चलते थे। उनकी आत्मकथा प्रतीक पुस्तक 'उजाले मेरी यादों के' पठनीय है और उनकी सोच, दर्शन एवं विचारों का सटीक, रोचक लेखन है। 'गणित के मसीहा' और स्नेह के सौदागर को नमन!

-रूपनारायण काबरा
ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर
मो. 8233360830

धुन के धनी डंडिया जी

1992 में टैगोर शिक्षण संस्थान की वैशालीनगर इकाई में हमने डे-बोर्डिंग स्कूलिंग को अपनाया था। इसकी अवधारणा है लंबे स्कूल टाइम में सम्पूर्ण शिक्षा, सामूहिक भोजन, विश्राम, खेलकूद एवं दोहरान का भी वक्त मिलता है। माता-पिता दोनों ही काम पर जाते हों उनके लिये यह व्यवस्था उपयोगी है। इसकी चर्चा सुनकर श्री तेजकरण जी डंडिया जो महावीर स्कूल संस्थान के अध्यक्ष तथा महावीर स्कूल के निदेशक भी थे। वे डे-बोर्डिंग की पूरी कार्यशैली, अवधारणा और लक्ष्य को समझने के लिये लगातार तीन दिन तक विद्यालय आए और सभी गतिविधियोंको सूक्ष्मदृष्टि से देखा। उनका प्रयास, दिलचस्पी एवं लगन को देखकर मैं दंग रह गया। वे सीखने में माहिर थे इसीलिये तो इतने प्रशंसनीय लेखक, प्राचार्य एवं निदेशक रहे तथा लेख सुधार और ''प्यास जगाओ'' कार्यक्रम भी उनकी लगन, सोच, समझ एवं दिलचस्पी के प्रतीक हैं। उनकी पुस्तक ''उजाले मेरी यादों के, अपने पास रहने दो'' उनको भूलने नहीं देगी। ये उजाले हम सभी को रोशनी देते रहेंगे। उनका चिन्तन स्वानुभूत था। ऐसे शिक्षाविद को खोकर हमने एक स्नेहिल संरक्षक खो दिया है।

-पी. डी. सिंह, निदेशक
टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर-302016

संस्मरण

चिरस्मरणीय चतरसिंह मेहता

❒ शिवरतन थानवी

'शिविरा' जुलाई 2013 ने छात्रवृत्ति पर विस्तृत निहायत उपयोगी सामग्री भी दी और स्व. श्री चतरसिंह जी मेहता से संबंधित दो लेख देकर यह प्रमाणित कर दिया है कि 'शिविरा' कितनी जागरुक है। इनका अपना लेख 'भारतीय चिंतन और शिक्षा के उद्देश्य' जो इस अंक में दिया गया है वह उनके चिंतन-मनन का और उनके व्यक्तित्व का उत्तम द्योतक है। उस लेख पर जो संपादकीय टिप्पणी लिखी गई है वह भी उनकी प्रतिष्ठा व योग्यता के सर्वथा अनुकूल है। और उनके समग्र जीवन का जो स्वरूप डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सारगर्भित शब्द-चित्र में मुखरित हुआ है वह भी उनकी स्मृति में एक अनुपम कृति है।

जिस तत्परता से 'शिविरा' ने यह सब कुछ किया वह 'शिविरा' का एक बहुत ही सराहनीय और सही कदम है। मेहता जी वास्तव में एक अच्छे शिक्षक, एक निपुण शिक्षाधिकारी और शिक्षा समुदाय ही नहीं, वृहद् समूचे समाज के एक उत्कृष्ट सेवक भी थे। 'शिविरा' के निर्माताओं में उनका अग्रणी स्थान था। उनका सुदीर्घ अनुभव, उनकी अन्तर्दृष्टि और उनका अथक परिश्रम इसके प्रबंधन व संपादन में सदैव सक्रिय रहा। शिक्षक थे तब भी हम दोनों साथ रहे, 'शिविरा' में भी हम साथ रहे और जीवन पर्यंत मेरा उनसे घनिष्ठ स्नेह संबंध सदा बना रहा।

समाज सेवा की दृष्टि से भी वे कम सक्रिय नहीं थे। उन्होंने कई उत्साही मित्रों के साथ मिल कर 'जागृति संस्थान' नाम की एक संस्था की स्थापना भी की थी समाज में 'सूचना के अधिकार' की व्यापक चेतना के लिए उनके देहान्त पर इस संस्थान ने एक सार्वजनिक शोकसभा आयोजित कर इन्हें भावभरी श्रद्धांजलि दी थी, इनकी अमूल्य सेवाओं को याद किया था। मेहता जी ने 'सूचना के अधिकार' कानून व उसके समाज में सही उपयोग पर प्रकाश डालने वाले ग्रंथों की रचना भी की जिनका दूर-दूर तक स्वागत हुआ और उन्होंने इनके क्रियात्मक उपयोग का उदाहरण भी पेश किया। कई मुकदमे लड़ कर और जीत कर। एक कर्मठ आरटीआई कार्यकर्ता के रूप में पूरे देश में उनकी धाक थी।

शिक्षा समुदाय ही नहीं, पूरे समाज की सूचना और जागृति के लिए उन्होंने शिक्षा विभाग राजस्थान की प्रवृत्तियों से संबंधित तमाम आदेश-परिपत्रों का संग्रह कर ग्रंथों में समाज को दिया और नए-नए संस्करणों में वे उन्हें अपडेट भी करते रहे। शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षा विभाग की यह भी एक अहम सेवा थी।

शिक्षा निदेशालय में उन्होंने शिक्षक-प्रशिक्षण अनुभाग की स्थापना कराई जिसके वे पहले प्रभारी अधिकारी बने और राज्य की तमाम शिक्षक-प्रशिक्षण प्रवृत्तियों का सफलतापूर्वक संचालन किया।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा वाले श्रेष्ठ शिक्षक और शिक्षाधिकारी समाज की एक महान विभूति होते हैं जिन्हें हम कभी भुला नहीं सकते और जिनके पदचिह्नों पर चलें तो हमें भी अमित लाभ होगा।

-मोची स्ट्रीट, फलौदी-342301 (जोधपुर)

स्पर्श / डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता / कमल प्रकाशन पुरुषोत्तमायन, दहीवाली गली, ब्यानिमान मौहल्ला, भरतपुर-321001/ संस्करण : 2013 / पृष्ठ संख्या : 112 / मूल्य: ₹ 125

स्पर्श, डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता का तृतीय एवं सद्य प्रकाशित काव्य संग्रह है जिसमें कुल 85 कविताएं संग्रहीत हैं। इन कविताओं में हैं- भारतीय संस्कृति संरक्षा। कवि भारतीय संस्कृति के लिए समर्पित है। भारत भूमि की रक्षा, पर्यावरण, जीवन मूल्य, सामाजिक एवं राष्ट्रीय सरोकार विश्वबन्धुत्व, उत्सव, मेले, पंच सकार आदि विशेष वर्ण्य विषय रहे हैं।

कवि 'दयाल' ने आज के क्षीण होते माता-पिता एवं गुरुजनों के प्रति सम्मान देकर नई पीढ़ी में पुनः स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया है। कवि धरती के माध्यम से कहता है-

कहती माता तुझको तेरी,
भूल न जाना ममता मेरी।
तू रक्षक है मेरा सपना,
टेरे माता तू है अपना।
लज्जा रख ले कुछ तो मेरी,
अन्न मिलेगा माटी ढेरी।
मैं माटी हूं जाया तेरी,
तेरा मन है माया मेरी।।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' का समर्थन करते हुए कवि ने भारत, राजस्थान, लोहागढ़ तथा अपनी गली का चित्रण कर जन्मभूमि के लगाव को व्यक्त किया है।

'दयाल' जी प्राकृतिक तत्वों की विकृति के प्रति चिन्तित हैं। वे प्राकृतिक सुरूप को पसन्द करते हैं, विद्रूप को नहीं। अतः पर्यावरण की शुद्धता के पक्षधर रहे हैं। प्रदूषित पर्यावरण का एक चित्र यहाँ द्रष्टव्य है-

रहा प्रदूषण का अति जोर,
हवा विषैली है चहुं ओर।
हम बच्चे डरते हैं आज,
कान फोड़ सुनते हैं शोर।

देश एवं समाज में बढ़ते विकारों से कवि अछूता नहीं रहा है अतः वर्तमान समस्याओं के प्रति चिन्तित है। दिनदूनी बढ़ती महंगाई, भ्रूण हत्या, नारी-उत्पीड़न, दहेज की कुप्रथा, खाद्य प्रदूषण, सांस्कृतिक अपकरण, भ्रष्टाचार, घोटाले, आरक्षण, क्षीण होती राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता, चलते हुए सम्बन्धों की घुआँ की घुटन, हिन्दी का अनावश्यक विरोध, बेरोजगारी, आतंकवाद आदि ज्वलंत समस्याओं ने कवि के हृदय को झकझोर दिया है। महंगाई के प्रति कवि की पीड़ा पठितव्य है-

खुला रहा हूं बैठ निठल्ला,
महंगाई की खाब।
मन होता है नंगा होलूं,
पर आती है लाज।
मार झपट्टा आ जाती है,
ज्यों झपटा हो बाज।
कुछ न पूछो अपनी हालत,
कितनी पतली आज।।
खुरसा सी क्यों है महंगाई,
इसका खोलो राज।

और यह राज इन्हीं कविताओं खुलता हुआ देखा जा सकता है-

नारी उत्पीड़न से कवि स्वयं पीड़ित है-

नारी को अबला बतला कर,
नौ-नौ आँसू रुला दिया।
फिर फैशन की शान बनाकर,
चिर निद्रा में सुला दिया।।
प्रसव-काल में लिंग परीक्षण,
नारी का अपमान किया।
कन्या-भ्रूणों को छिद्रवा कर,
भावी को गुमनाम किया।

दहेज, भ्रूण हत्या, कन्या विक्रय, सामूहिक दुष्कर्म आदि नारी उत्पीड़न के घटक हैं। आरक्षण जो समाज की भावात्मक एकता पर कुठाराघात करता है, समाज के लिए घातक सिद्ध हुआ है। इन पंक्तियों में कवि की पीड़ा द्रष्टव्य है- 'आरक्षण से मची खलबली, शर्ट टाट की कहीं मखमली।' कवि मनभेद नहीं चाहता। एकता ही उसका लक्ष्य है-

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
सब आपस में भाई-भाई।
पिता हिमालय धरती माता,
फिर क्यों फैले भ्रम की काई।

कवि की दृष्टि इतनी तीक्ष्ण है कि समाज में फैली कोई विकृति उनकी निगाह से बच नहीं पाई है। दुराचरण की कालिख पर एक प्रहार देखिए-

कितना लम्बा दौर चलेगा,
यह युग कितना और छलेगा।
बाँधी हुई आँखों पर पट्टी,
अंधा युग सब ठौर पलेगा।

परन्तु फिर भी कवि आशावान है, वह निराशा के कारण टूटा नहीं है-

पौंगा पंथी युग बदलेगा, स्वार्थ बसेगा धीरे-धीरे।
ढोंगी अपनी मौत मरेगा, विष फूटेगा जैसे खीरे।।

समाज और देश में फैली सभी विकृतियों एवं ज्वलंत समस्याओं पर सपाट बयानी की है। कुछ कविताओं में कवि ने व्यंग्य और हास्य का भी सहारा लिया है। संग्रह की कविताओं की भाषा, सरल, सहज, सुबोध गम्य प्रवाहमयी एवं ब्रजभाषा से प्रभावित है।

कवि हिन्दी भाषा एवं शिक्षा की दुर्दशा से भी अप्रभावित नहीं रहा है। लोहागढ़ कभी किसी से नहीं विरोध, शुद्ध सात्विक की भाषा हिन्दी, आबादी है या बर्बादी, बोलो हिन्दी बस्ती-बस्ती आदि कविताएँ हिन्दी की तथा शिक्षा, हम ही हैं भारत के भाग्य, वर्तमान आदि कविताओं में शिक्षा की दशा एवं दिशा की ओर संकेत किया है। निःसंदेह कवि प्रेम पूर्वक देशभक्ति एवं एकता की भावना के सहारे जीना चाहता है। इसके लिए वह कुछ स्थानों को छोड़ कर प्रगति के प्रति आशावान है। दयाल जी पुस्तकों को कर्म की आराधिका मानते हैं अतः वे श्रम के उपासक हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि संग्रह की कविताएं कवि के हृदय के स्पर्श से व्यक्त होकर सहृदय पाठक के हृदय का स्पर्श करने वाली तथा सुलभ सम्प्रेषणीय है। यह संग्रह पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है। अतः सहृदय पाठक समुदाय में समादर पायेगा, ऐसी मेरी कामना है।

-मेघराज कटारा 'पंक'
36, बसन्त नगर, भरतपुर-321001
फोन 05644-260448

मिट्टी के पाँव (उपन्यास)/देवेन्द्र कुमार 'देव'/त्रिवेणी पब्लिकेशन, बी-128, सरस्वती नगर, जोधपुर/संस्करण 2013/पृष्ठ सं. 106/ मूल्य ₹ 150

श्री देवेन्द्र कुमार 'देव' की रचना मिट्टी के पाँव नारी चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति बनकर उभरी है। रचना एक झटके के साथ हमारी आँखें खोल देती है और बताती है कि प्रगति और विकास के ऊँचे सोपान पार करने का दावा करने

वाले हम अभी शायद इतनी प्रगति नहीं कर पाए हैं, जिसमें अपने अहंकार और स्वार्थलिप्सा को छोड़ कर एक नारी के अधिकार और सम्मानपूर्ण जीवन की कल्पना हो। कदाचित् अभी हमने उतनी करुणा नहीं उपजी है, जो किसी गरीब तथा विवश के दुःख को बढ़ाने की जगह कम करने का प्रयास करें।

उपन्यास के केन्द्रीय पात्र 'शारदा' के माध्यम से लेखक समाज में विवाह और तलाक, खाप पंचायतों की भूमिका और उनकी कार्य प्रणाली तथी गरीब के शोषण जैसी समस्याओं को काफी कुछ उघाड़ कर रख पाने में सक्षम हुआ है। निरपराध होते हुए भी किस प्रकार एक नारी व्यभिचारी पुरुष की अहम्मन्यता और स्वार्थ का शिकार बनकर कष्ट भोगने को विवश होती है, किस प्रकार न्याय व कानून की इतनी सुदृढ़ व्यवस्था के बावजूद खाप पंचायतें समाज में अपनी प्रभावशाली भूमिका बनाए हुए हैं और किस प्रकार पैसे के बल पर न्याय को धनवान के पक्ष में कर सकती हैं। और किस प्रकार समाज के ठेकेदारों द्वारा पहले से टूटे हुए गरीब आदमी पर कर्ज का बोझ बढ़ा कर उसकी भलाई का दावा किया जाता है। यही विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ अनेक पात्रों के माध्यम से उपन्यास में रेखांकित हुई हैं।

उपन्यास का सुखद पक्ष यही है कि इतना पीड़ित होने पर भी स्वाभिमानी शारदा के आत्मबल में कहीं कमी नहीं आती है और वह डट कर मुकाबले के लिए उठ खड़ी होती है, पुरुषों की पंचायत में खुलकर बोलती है और सबको निरुत्तर भी करती है। यह शारदा का साहस और जिजीविषा ही है जो एक ओर उसके पति रतिलाल को पश्चाताप की अग्नि में जलने को विवश करता है तो दूसरी ओर तथाकथित न्यायप्रदाताओं को भी अपनी शूल का अहसास करवाता है परन्तु शारदा की क्षमा उन्हें और भी छोटा बना देती है तथा सम्पूर्ण व्यवस्था पर एक प्रश्नचिह्न छोड़ जाती है।

वस्तुतः इस उपन्यास का कथ्य उस समाज को ही सामने रखता है, जिसका हम सब हिस्सा हैं, जिसकी सबलताओं-दुर्बलताओं के हम सब साक्षी हैं। न केवल कथ्य बल्कि भाषा की दृष्टि से भी यह बात सटीक जान पड़ती है। लेखक ने भारी-भरकम शब्दजाल के मोह में न पड़कर सीधी-सादी-बोलचाल की भाषा में अपनी बात सामने रखी है, जो पाठक की मूल संवेदना तक पहुँच पाने में सहायक सिद्ध हुई है।

-सुरेन्द्र शर्मा, व.अ. (हिन्दी)
रा.मा.वि.उ.सी. छोटी, श्रीगंगानगर

लोक सूक्ति कोश/माधुरी शास्त्री/वाङ्मय प्रकाशन, ई-776/7, लाल कोठी योजना, नकुल पथ, जयपुर-15, फोन 0141-2742504/संस्करण 2012/पृष्ठ सं. 112/मूल्य ₹ 280

समीक्ष्य कृति 'लोक सूक्ति कोश' लोकोक्तियों, कहावतों, मुहावरों, सूक्तियों एवं सुभाषितों का अद्भुत संग्रह है जिसमें जीवन एवं व्यवहार से जुड़े विभिन्न विषयों पर आधारित उपयोगी सूक्तियाँ सम्मिलित की गई हैं। दरअसल लोक जीवन में अनुभवों एवं व्यावहारिक धरातल से रुबरु होते हुए लोकोक्तियों आदि का स्थान होता है। इस प्रकार के फील्ड टेस्टेड अनुभव (Experience Wealth) धन होता है जिसे पीढ़ियों ने पीढ़ियों के लिए संचित एवं हस्तांतरित किया होता है। जिस बात को कहने/समझाने के लिए दर्जनों तर्क एवं दृष्टान्त दिए जाते हैं तथा उन सबके बावजूद सम्प्रेषणीयता/ग्रहणीयता में कहीं न कहीं कोई कमी रह जाती है, उसी बात को हृदयंगम करने/कराने में कहावत व लोकोक्ति के चन्द शब्द ही पर्याप्त होते हैं और उस पर भी यदि वक्ता की सम्प्रेषण व अभिव्यक्ति क्षमता तत्आशय की निपुणता लिए हुए हो तो फिर कहना ही क्या! इसे भाषा व सम्प्रेषण का आभूषण कह सकते हैं। उदाहरण के लिए 'रोग की जड़ खांसी, लड़ाई की जड़ हांसी' को देखिए। इन आठ छोटे-छोटे शब्दों में जो संदेश छिपा है, उसे समझाने के लिए बड़े-बड़े भाषण और अध्याय, यहाँ तक कि पुस्तकें ही छोटी पड़ जाएगी। मगर किसी उचित अवसर पर उचित तरीके से बोले गए थे चंद शब्द सुनने वालों के भीतर तक असर करते हैं।

पुस्तक 'लोक सूक्ति कोश' विभिन्न विषयों और अलग-अलग भाषा और बोलियों में उपलब्ध चुनीन्दा लोकोक्तियों और राजस्थानी भाषाएं उल्लेखनीय है। पुस्तक को कुल ग्यारह अध्यायों में विभक्त किया गया है। समाहित सामग्री में लोक सूक्ति सागर (9 पृष्ठ), तुलसी की लोक शिक्षा (11 पृष्ठ), शरीर और स्वास्थ्य (13 पृष्ठ), निदान और उपचार (21 पृष्ठ), संस्कृत सूक्तियां (17 पृष्ठ), गुजराती लोकोक्तियां (3 पृष्ठ), पंजाबी लोकोक्तियां (6 पृष्ठ), राजस्थानी लोकोक्तियां (10 पृष्ठ), वर्षा सम्बन्धी लोकोक्तियां (8 पृष्ठ), दिशाशूल सम्बन्धी लोकोक्तियां (1 पृष्ठ) तथा कहावतों के छः पृष्ठ है।

राजस्थान में मारवाड़ के विख्यात ज्योतिषी घाघ पुत्री भड़ली ने सूत्र रूप में दोहे कहे हैं जो विशेष कर कृषि, पशुधन, मौसम एवं रोगों तथा उनके उपचार से सम्बन्धित है। एक दोहा देखिए (पृष्ठ संख्या 22)-

सदा रैन को सोई के जो जागे बड़ भोर।
रहे नीरोग शरीर से, गहे ज्ञान की डोर।।

(जो व्यक्ति रात्रि में नियत समय पर सो जाता है और सुबह सूर्योदय से पहले जग जाता है, वह शरीर से स्वस्थ रहता है। फिर जिसका तन, मन दोनों ही स्वस्थ हों, वह जो विद्या पढ़ेगा उसे तत्काल याद हो जाएगी।)

पुस्तक में हितोपदेश सूक्तियों के साथ ही ज्योतिष एवं शकुन शास्त्र, तीज-त्यौहार, गृह कार्य रोग और उनके लक्षण एवं उपचारात्मक औषधियों, खेतीबाड़ी अर पशु आदि को आधार बनाकर अत्यन्त उपयोगी सूक्तियां दी गई है जिनके अर्थ और अन्तर्निहित कक्षा का भी विवेचन किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में उपोद्धात के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने विषय व कथ्य पर बहुत ही प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया है जो किसी दस्तावेज से कम नहीं है।

पुस्तक के प्रकाशक वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर गहन और विशिष्ट विषयों पर प्रकाशन के लिए जाने जाते हैं तथा इस पुस्तक का प्रकाशन उनकी इस पहचान को प्रमाणित करता है। पुस्तक की समग्र प्रस्तुति यथा कागज, मुद्रण, बाइन्डिंग सब उत्तम है। मूल्य पृष्ठ संख्या को देखते हुए अधिक है लेकिन संदर्भ ग्रंथ श्रेणी का प्रकाशन होने के कारण स्वाभाविक है।

-बजरंग सारस्वत, प्र.अ.
पुरानी लाइन, गंगाशहर-334401 (बीकानेर)

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

एक लीटर में चले हजार किलोमीटर

सुनकर कानों पर भले ही यकीन न हो। पर संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे कुछ छात्रों ने वाकई एक ऐसी कार बनाने का दावा किया है, जो महज एक लीटर पेट्रोल में 1,000 किलोमीटर की दूरी तक फर्राटा भर सकती है।

'ईको-दुबई 1' नातक यह कार महज आधा मीटर चौड़ी और दो मीटर लंबी है। इसका वजन भी सिर्फ 25 किलोग्राम है। निर्माता छात्र पिछले दो साल से इसे बनाने की कोशिशों में जुटे हुए थे। दो हफ्ते बाद यह परीक्षण के लिए सड़क पर उतार दी जाएगी। जुलाई में ईको-दुबई 1 के टक्कर की चार अन्य कारों के साथ इसकी रेस कराई जाएगी। कार बनाने वाले दल में शामिल खामिस अल सुवैदी ने कहा, 'पेट्रोल हमेशा नहीं रहने वाला। एक दिन यह खत्म हो जाएगा और हम पैदल चलने पर मजबूर हो जाएंगे। इसलिए ईको-फ्रेंडली गाड़ियों का निर्माण होना चाहिए जो कम ईंधन में लंबा सफर तय कर सकें। हमने इसी दिशा में ईको-दुबई 1 पेश की है।'

कुआलालंपुर में चार से सात जुलाई के बीच आयोजित होने वाले 'शेल्स ईको मैराथन' में ईको-दुबई 1 को उतारने की योजना है। इस प्रतियोगिता में केवल उन्हीं गाड़ियों को शामिल किया जाता है, जो एक लीटर पेट्रोल पर सबसे तेज गत और सबसे ज्यादा देर तक दौड़ सकती है।

सुनो

नई दिल्ली वैज्ञानिकों ने जैव अभियांत्रिकी की मदद से कृत्रिम कान का विकास किया है और यह विकास उन लोगों के लिये वरदान साबित होगा जो दुर्घटनाओं में अपने कान खो देते हैं अथवा जिनके कान क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। वैज्ञानिकों ने थ्रीडी प्रिंटिंग और इंजेक्टेबल मोल्ड के इस्तेमाल से एक ऐसे जैव अभियांत्रिक कृत्रिम कान का विकास किया है जो प्राकृतिक कान की तरह ही दिखता और काम करता है। जैव इंजीनियरों और चिकित्सकों के द्वारा बनाये गये इस कृत्रिम कान ने मिक्रोटिया नामक जन्जात विकृति के साथ पैदा हुए हजारों बच्चों के लिए उम्मीद की किरण पैदा की है। हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में कर्नेल बायोमेडिकल इंजीनियर और वेल कर्नेल मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों ने बतया है कि 3 डी प्रिंटिंग और इंजेक्टेबल जेल की मदद से जीवित कोशिकाओं से फैशनबल कान को किस प्रकार विकास किया गया जो व्यावहारिक रूप से एक मानव कान के समान है।

फौलादी पत्थर भी काई से

लंदन। पानी पर जमी काई जल्द ही फौलादी हथियार बनाने में इस्तेमाल की जाएगी। यह दावा अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास के शोधकर्ताओं ने किया है।

उन्होंने कहा कि भविष्य में काई वह सुपर पदार्थ होगा, जिससे हथियार से लेकर रोजमर्रा की इस्तेमाल में आने वाली उस चीज का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसे फिलहाल धातुओं और प्लास्टिक की मदद से बनाया जा रहा है। प्रमुख शोधकर्ता मैलकॉम ब्राउन के अनुसार उनका दल एक ऐसी तकनीक विकसित कर रहा है, जिसकी मदद से काई से नैनोसेल्युओज प्राप्त किया जाएगा। यह बहुत सस्ता होगा, क्योंकि इसे बनाने के लिए सिर्फ काई, पानी, सूरज की रोशनी और समय की जरूरत होगी।

काई से क्रीम

लीजिए, अभी तक आपने काई को देख नाक सिकोडी होंगी, मुंह बिचकाया होगा, लेकिन किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि कुंडों, तालाबों व घर के सिंक में जमने वाली काई से क्रीम भी बन सकती है। दो वर्षों में काई से बनी क्रीम का उपयोग किया जा सकेगा।

काई से क्रीम बनाने का शोध बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के वनस्पति विभाग के वैज्ञानिक प्रो. आर.पी. सिन्हा ने किया है। सिन्हा ने बताया कि शोध के दौरान पता चला कि प्रकृति में फैल रहा प्रदूषण ओजोन के सुरक्षा कवच को दिन प्रतिदिन कमजोर करता जा रहा है। परिणाम है कि सूर्य की पराबैंगनी (अल्ट्रा वायलेट) किरणों का प्रभाव बढ़ रहा है। इसकी वजह से हमारी त्वचा को भारी नुकसान पहुंचता है। सनबर्न व त्वचा कैंसर का मुख्य कारण पराबैंगनी किरणें ही बनती हैं। प्रो. सिंन्हा और उनकी टीम ने बिहार के राजगीर जिलेमें स्थित गरम कुंड में जमी नील-हरित शैवाल (काई) के नमूने को लिया और उनमें निहित तत्वों को जाना। टीम ने देखा कि काई में तीन प्रमुख तत्व हैं जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों से लड़ पाने में पूरी तरह से सक्षम होते हैं। ये तत्व हैं-माइकोस्पोरिन, एमाइनो एसिक तथा साइटोनेमीन यौगिक। उन्होंने इसका पहला प्रयोग चूहों पर किया जो पूरी तरह सफल रहा। इनमें मनुष्यों की सुंदरता निखारने की भी क्षमता है। इसका प्रयोग फेस क्रीम के रूप में किया जा सकता है। प्रयोगशाला स्तर पर उन्होंने कार्य पूरा कर लिया है। प्रो. आर.पी. सिन्हा विभिन्न कॉस्मेटिक कंपनियों को आमंत्रित कर रहे हैं कि वे काई से जनता की उपयोगिता के लिए सौंदर्य उत्पाद बनाएं। दो वर्ष में त्वचा को पराबैंगनी किरणों से बनाने के लिए काई से बनी क्रीम बाजार में उपलब्ध होगी।

गंजेपन की हीनभावना न सताएगी

लंदन। गंजापन किसी अभिशाप से कम नहीं होता। इसका शिकार बने लोग अक्सर मजाक का पात्र बनते हैं जो धीरे-धीरे उन्हें हीन भावना से ग्रस्त कर देती है। लेकिन अब फिक्र करने की जरूरत नहीं है। फ्रांस की एक कंपनी ने ऐसा अनोखा उत्पाद तैयार किया है जिसके बारे में उनका दावा है कि यह गंजेपन के असर को उल्टा करने में सक्षम है। गहन अध्ययन कर वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया है कि गंजेपन की समस्या तब पैदा होती है जब बालों की जड़ों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। इस स्थिति को 'हाईपोक्सिया' कहते हैं। इसके प्रभाव से बालों की नमी चली जाती है और वह सूखकर गिरने लगते हैं। 'केरास्टस डेंसिफिक' नामक यह उत्पाद बालों की जड़ में ऑक्सीजन का संचार कर उन्हें सक्रिय बनाता है जिससे वहां नए बाल आने शुरू हो जाते हैं। केरास्टस डेंसिफिक को बनाने में 'स्टेमोक्सिडाइन' अणु का इस्तेमाल किया गया है जो हाईपोक्सिया के खिलाफ लड़ने में असरदार है। इस उत्पाद का असर तो जादुई है लेकिन इसे इस्तेमाल करने के लिए अच्छी-खासी जेब ढीली करनी पड़ती है। केरास्टस डेंसिफिक की कीमत करीब 24,000 रुपये है। इसे तीन महीने तक हर रोज बालों की जड़ों में लगाना जरूरी होता है।

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रुपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरणीय भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है।

–वरिष्ठ संपादक

नागौर

रा.मा.विद्यालय, गुणावती (मकराना) में श्री कुम्भाराम खत्ती द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से विद्यालय भवन के बाहरी क्षेत्र एवं मुख्य द्वार एवं दीवारी के डिस्टेम्पर एवं गेट एवं खम्भों पर पेन्ट करवाया गया। रा.मा. विद्यालय, मांगलोद को समस्त ग्रामवासियों से 150 टेबल, 150 स्टूल लागत 1,75,000 रुपये, सर्व श्री अर्जुन दास, बंशीदास छामा से 10 टेबल–स्टूल लागत–11,000 रुपये, श्री गणपतराम सोनी से एक लोहे की अलमारी लागत 5,000 रुपये, कक्षा 10 के छात्रों से एक लोहे की अलमारी लागत 2,500 रुपये, सर्व श्री गंगाराम, हजारीराम राईका (उप सरपंच), हुक्माराम फौजी, सगराम फौजी, सीताराम, रूपाराम खाती सायर सिंह, भगवानाराम बालौड़, हनुमान सिंह भाटी, शंकर पूरी जी, सुरज सिंह, सुगम चन्द चाढवण, खींची परिवार से प्रत्येक से एक–एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1,100 रुपये, श्री पुसाराम सोनी एवं उनके परिवार द्वारा 51,00 रुपये की लागत से एक प्याऊ बनवाई गई।

पाली

रा.मा.वि., खाण्डी (पं.सं. रोहट) को श्री बेना राम पटेल से एक कम्प्यूटर प्रिन्टर व फोटो कॉपी सहित लागत–40,000 रुपये, मिहीरगढ़ खाण्डी की ओर से विद्यार्थी टेबल–स्टूल लागत 11,000 रुपये, नवयुवक मंडल खाण्डी की ओर से 10 विद्यार्थी टेबल स्टूल तथा दो लोहे की अलमारी, लोहे की कुर्सियां लागत 5,100 रुपये। रा.मा.वि., गुढ़ालाल को श्री गमना राम सीखी द्वारा विद्यालय विकास में 11,051 रुपये जमा कराई एवं समस्त छात्र–छात्रा एवं ग्रामवासियों को मिष्टान वितरण किया गया। लागत 4,000 रुपये। रा.उ.प्रा.वि., रामासनी बाला (सोजत) में श्री कालू सिंह राजपुरोहित द्वारा विद्यालय का प्रवेश द्वार मय फाटक बनवाया लागत 51,000 रुपये, श्री महेन्द्र सिंह सिया से व्यायाम के लिए ड्रम एवं साइड ड्रम, माइक सेट, गणतंत्र दिवस पर छात्रों को पुरस्कार लागत 22,000 रुपये, श्री प्रेमसिंह 'सिया' से 17 ट्री गार्ड लागत 11,000 रुपये, श्री गोपाल राम साखला द्वारा दोनों राष्ट्रीय पर्वों पर छात्रों को मिष्ठान वितरण।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि., सिंवाड़ में स्थानीय विद्यालय में जनता ने विद्यालय की 25 बीघा जमीन पर स्थाई कब्जा करने के लिए चार दिवारी का सम्पूर्ण दायित्व अपने उपर लेकर 4000 फीट लम्बी तथा सात फीट ऊँची दिवार का निर्माण पर 40,00,000 (40 लाख) रुपये खर्च ग्रामीणों ने स्वयं अपने खर्चे से करवाया।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि., गजनेर को वाटर कूलर लगाने में निम्न भामाशाह का सहयोग रहा। श्री राजेन्द्र कुमार मार्गव से 25,000 रुपये, श्री हजारी राम गेधर से 11,000 रुपये, कक्षा 10 व 12 के छात्र–छात्राओं से 16,000 रुपये, शाला स्टाफ से 7,500 रुपये, श्री पेमाराम लखेसर से 1100 रुपये, श्री चम्पा लाल शर्मा से विद्यालय को ट्री गार्ड लागत 5,000 रुपये। रा.मा.वि., भोजास (त. श्री डूंगरगढ़) को श्री गोरधन सिंह राजपुरोहित द्वारा 1,11,000 रुपये की लागत से 100 टेबल एवं 100 स्टूल लोहे के सप्रेम भेंट। इसके अतिरिक्त 25,000 रुपये की लागत से शाला भवन में विद्युत फिटिंग तथा सात छत पंखे भी सप्रेम भेंट। कक्षा 10 के छात्रों के संयुक्त अंशदान से 1,500 रुपये की लागत से एक छत पंखा शाला को भेंट। रा.उ.प्रा.वि. न.3, बड़ा बाजार को श्रीमती सोदरा देवी, तथा उनके पुत्रों द्वारा इस विद्यालय को एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट तथा इसकी लागत 30,000 रुपये।

प्रतिध्वनि...

...पृ. 50 का शेष

गुरुजन अपने विद्यार्थियों का बहुत ध्यान रखते थे। मेरे छात्र जीवन की याद आ रही है। जवाहर माध्यमिक विद्यालय, भीनासर में आदरणीय लक्ष्मीनारायण जी व्यास प्रधानाध्यापक (1972–74) थे। आदर्श शिक्षक व कुशल संस्था प्रधान। अनुशासन के मामले में बहुत सख्त। विलंब से आने, काम नहीं करने, शरारत करने पर दण्डित करते। उनके दिल में बसी मक्खन सी नरमाई हम गुरु पूर्णिमा के दिन देखते। शाम के समय गोठ होती। विद्यालय की छत को पानी से धोकर साफ किया जाता। टाटपट्टियों पर बिठा कर हम विद्यार्थियों को पहले जिमाया जाता। प्रधानाध्यापक जी स्वयं एक–एक छात्र के पास जाकर एक–एक लड्डू अपने हाथ से खिलाते जैसे माँ बच्चे को खिलाती है। हमें बड़ा अच्छा लगता। वह सख्ती तब न जाने कहाँ गई होती थी। चेहरे पर प्यार झलकता था। जैसे मौन भी यह कह रहा हो, 'हाँ खा बेटे खा। एक लड्डू तो और खा। देख मैं तेरी माँ हूँ ना।' हम बालक आपस में बतियाते कि आज दूसरे हैडमास्टरजी है क्या! मैं बहुत ईमानदारी से कह रहा हूं कि गुरु पूर्णिमा के दिन उनके द्वारा दिलाए गए संकल्पों की छात्र पूर्ण पालना करते। हमें गर्व है कि ऐसे महान शिक्षकों से पढ़ने का हमें सौभाग्य मिला।

गुरु पूर्णिमा एवं शिक्षक दिवस गुरु–शिष्य की पुरातन व पावन परम्परा को स्मरण कराते हैं। यह परम्परा उच्च आदर्श एवं विमल मूल्यों की परम्परा है जिसका अनुगामी आज की पीढ़ी के शिक्षकों को बनना है। इसी में उनके शिक्षक होने की सार्थकता है।

–ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

प्रतिध्वनि

ज्ञान के प्रवाह की परम्परा और गुरु-शिष्य

पाँच सितम्बर यानी शिक्षक दिवस। शिक्षक दिवस माने वह अवसर जब सरकार समुदाय तथा विद्यार्थी अपने गुरुजन का सम्मान करते हुए ऋषि ऋण से उऋण होने का उपक्रम करे तथा शिक्षक अपने कर्तव्यों को याद करते हुए अपने वास्तविक कार्य एवं व्यवहार की समीक्षा करें तथा उसे और बेहतर बनाने का संकल्प लें। वे अपनी उच्च गरिमामयी स्थिति को समझ कर व्यक्ति निर्माण प्रक्रिया के प्रमुख सूत्रधार बनें तथा व्यक्तियों के माध्यम से समाज व राष्ट्र निर्माण का स्वप्न साकार करें।

यहाँ शिक्षक का सम्मान करने से आशय लोक मंगलमयी ज्ञान की उदात्त परम्परा को नमन करना तथा उसे सतत अक्षुण्ण बनाने का संकल्प लेना है। चूंकि ज्ञान परम्परा के संवाहक शिक्षक होते हैं, अतः ज्ञान के प्रति मान प्रकट करने के लिए कृतज्ञ शिष्य स्वयं को विनीत भाव से उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः गुरु-शिष्य परम्परा ज्ञान के प्रवाह की परम्परा है जिसमें गुरु के रूप मे एक पक्ष ज्ञान प्रदान करता है तथा शिष्य के रूप में दूसरा पक्ष ज्ञान ग्रहण करता है। यह ज्ञानान्तरण की उज्ज्वल परम्परा है जिसे हम भारतीयों से बेहतर और कोई समझ नहीं सकता।

ज्ञान की उदात्त परम्परा में गुरुजन का ध्येय स्वयं को ज्ञान कुशल बनाने का रहता था। अर्थ उनके लिए साधन मात्र होता था। अतः वे इतना ही अर्थ चाहते थे जिससे उनके परिवार का भरण पोषण हो जाए। बस! न अच्छे वस्त्र आभूषण व अन्य सुविधाओं की इच्छा और न घर-मकान की अभिलाषा। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि राज्य के हर भाग में अब से एक-दो पीढ़ी पहले के ऐसे उत्तम गुरुजन मिल जाएंगे जिन्होंने साधुओं सा जीवन जीते हुए शिष्य व समाज हित में खुद को रमाया। उन्होंने आधी रोटी, फूटी टपरी व टूटी साइकिल के सहारे विद्यार्थियों के रूप में हजारों हीरे तराशे। ज्ञान सम्पन्नता के साथ अर्थ विपन्नता को उन्होंने सहज ही में गले लगाया। मगर उनके प्रति सामाजिक आदर एवं विश्वास देखते ही बनता था। क्या मजाल कोई गुरुजी को हलका बोल ही दे। तब के गुरुजन को अर्थ विपन्नता स्वीकार थी। मगर ज्ञान में कमी रहने से वैसे विचलित हो उठते थे। बोर्दिया काल (1964-68) में गणित के वरिष्ठ अध्यापक हेतु ली गई परीक्षा में अव्वल आए श्री उदाराम का कृषकाय शरीर, खादी के कपड़े व टोपी तथा पैरों में अति साधारण चप्पल को देखकर आज का आदमी उनके पढ़े लिखे होने पर ही शंका करें। मगर यह सच है। सेवानिवृत्ति के बाद उदाराम जी अपनी पेंशन का बड़ा भाग गौशाला में दान करते रहे।

आज के आधुनिक शिक्षकों के पास सुन्दर वस्त्र, वाहन व अन्य सुविधाएं हैं यानी वे अर्थ सम्पन्न है। उन्हें स्वयं की ईमानदार समीक्षा करते हुए यह देखना चाहिए कि क्या वे इतने ज्ञान सम्पन्न (Knowledge riched) भी हैं। यदि कोई कमी है तो उस डेफिसिएंसी को जरूर पूरा करना चाहिए। हमें याद रखना है कि ज्ञान से ताकतवर कोई और वस्तु हो नहीं सकती। अतः हमें ज्ञान से दोस्ती करनी चाहिए। ज्ञान मान की कुँजी है। जहाँ ज्ञान (Knowledge) एवं मान (Respect) होगा, वहाँ सामान (Material) बहुत बौना हो जाएगा, उसे तो आना ही पड़ेगा।

उस दौर में माता-पिता बच्चे की अंगुली गुरुजी को थमा कर निश्चित हो जाते थे। अनुशासन व ज्ञानग्रहण में कमी दिखायी देने पर तब के गुरुजन शिष्यों को दण्ड देते थे। उसमें छिपी आत्मीयता व अपणायत दण्ड के रूप में मिलने वाले दर्द से ज्यादा वजनी होती थी। फलतः न तो बच्चे घर आकर उसकी चर्चा करते थे और न घर वाले उसे गलत मानते थे। एक दादा ने अपने छात्र जीवन का एक ऐसा ही वाकया पोते को सुनाया। पोते ने पूछा कि आपने घर आ कर अपने पापा को नहीं बताया। दादा ने जो कहा उस पर विचार करने की जरूरत है। उसने कहा कि घर पर बताकर क्या और मार खानी थी। अब शारीरिक दण्ड अपराध की श्रेणी में आते हैं तथा न ही इसका आशय सजा की महिमा बताना है। शारीरिक दण्ड कतई नहीं दिए जाने चाहिए। बात दण्ड में निहित आत्मीयता की है जो मुस्कराहट में छिपी कुटिलता से महंगी होती थी। हमें अपने छात्र जीवन के गुरुजन की याद आती है। प्रतिनिधिस्वरूप यदि कोई शिक्षक मिल जाते हैं तो सिर स्वतः झुक जाता है, हाथ चरणस्पर्श करने के लिए उतावले हो उठते हैं। यह दण्ड में छिपी नैतिकता की कीमत है। नैतिक दण्ड डण्डे से नहीं वाणी व भाव भंगिमा से दिया जाता है जिसका प्रभाव बेअन्त होता है।

एक गुरुजी शिष्यों के द्वारा गलती करने पर उपवास कर लेते थे। फिर शिष्य उन्हें मनाते, हाथाजोड़ी करते, कसमे खाते, वादे करते। उपवास करके जैसे स्वयं को दण्डित करते लेकिन प्रभाव शिष्यों पर पड़ता। बिजली चमकती कहीं और, गिरती कहीं। गांधीजी ने उपवास के बल पर आजादी की जंग सफलतापूर्वक लड़ ली। उपवास की महिमा बताने के लिए इससे बढ़िया कोई दूसरा उदाहरण कदाचित नहीं मिलेगा। ऐसा परिवारों में भी कभी-कभी देखने को आता है। यदि बेटा कहना नहीं मानता है तो माँ-बाप, ज्यादातर माँ उपवास कर बैठती है। बेटे को मानना पड़ता है।

सच्चा शिक्षक शिक्षण रूपी बाड़ी में आत्मीयता, वात्सल्य, दया, प्रेम, करुणा, उपकार की खाद-पानी देता है। स्वयं त्याग के उदाहरण प्रस्तुत करता है। खुद को पिता समझ कर बालकों से प्रेम करता है तथा शिष्यों को पुत्र समझ कर उनकी गलतियों को नजरअन्दाज करता है। शिष्यों को स्वयं से बड़ा देखना चाहता है।

वर्षों पहले की बात है। एक गांव की पाठशाला के गुरुजी हर अमावस्या के दिन शाला में बच्चों का सामूहिक भोजन रखते। मीनू व कार्य योजना निश्चित थी। गांव में गौधन की कमी नहीं थी। ग्रामीण यथा सामर्थ्य दूध व अन्य सामग्री भिजवाते। मदद करने भी उपस्थित होते। बच्चों के साथ खाना खाते। भोजन क्या होता था मानो स्वास्थ्यवर्द्धक औषधि हो। गांवों में विवाह-शादी, मरने-जन्मने के अवसर पर आयोजित समारोहों में शिक्षकों को सम्मानपूर्वक बुलाया जाता था। ऐसी मनभावन परम्परा आज भी गांवों में कमोबेश दिखाई दे जाती है।

(शेष पृ. 49 पर....)

शिविरा पत्रिका मासिक/सितम्बर 2013 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

शिविरा, सितम्बर–2013
चित्र समाचार

बीकानेर

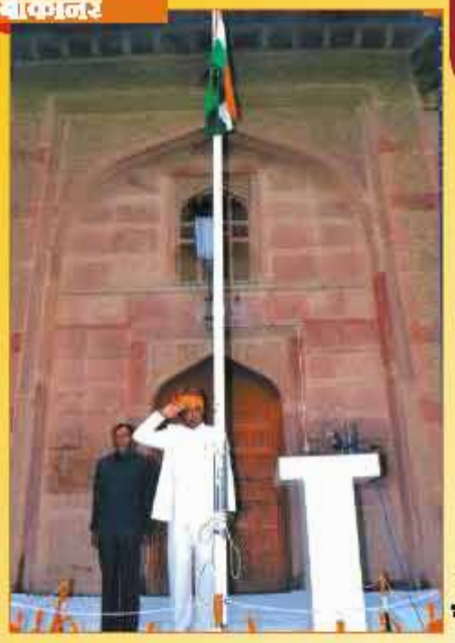

67वें स्वतंत्रता दिवस पर श्री पी.सी. माथुर, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर निदेशालय परिसर में ध्वजारोहण करते हुए। पास में खड़े हैं मोहम्मद इक्रीश खान, उप निदेशक (खेलकूद) मा.शि.राजस्थान, बीकानेर

बीकानेर

माननीय गृह राज्य मंत्री श्री बीरेन्द्र बेनीवाल विशेष योग्यजन को स्कूटी प्रदान करते हुए। पास में खड़ी हैं बीकानेर जिला कलेक्टर आरती डोगरा।

जयपुर

श्री बी.एल. सोनी, निदेशक, राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर द्वारा 'स्टूडेन्ट पुलिस कैडेट योजना' का राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मालवीय नगर, जयपुर में शुभारम्भ किया गया।

बीकानेर

राजस्थान राज्य भारत स्काउट–गाइड स्थानीय संघ बीकानेर परिसर में हाजी मकसूद अहमद, अध्यक्ष, नगर विकास न्यास, बीकानेर द्वारा नवनिर्मित हॉल का लोकार्पण किया गया।

सूरजगढ़

राज. सार्वजनिक पंचायत समिति पुस्तकालय, सूरजगढ़ के द्वारा रा.बा.उ.मा. विद्यालय, सूरजगढ़ के तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण जन चेतना रैली।

हनुमानगढ़

राजस्थान राज्य भारत स्काउट–गाइड स्थानीय संघ हनुमानगढ़ टाउन का वार्षिक अधिवेशन रा.उ.मा.विद्यालय, किशनपुरा किशनाड़ा में सम्पन्न हुआ।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

जामा मस्जिद, टोंक

जामा मस्जिद का निर्माण टोंक रियासत के प्रथम नवाब अमीर खाँ ने 1246 हिजरी में शुरू करवाया था। बाद में उनके पुत्र नवाब वजीरुद्दौला ने 1297 हिजरी संवत् से 1298 हिजरी संवत् तक करवाया।

जामा मस्जिद में इबादतगाह सहित चार विशाल मीनारें अपनी ऊँचाई व सुन्दरता के लिए अलग ही पहचान बनाए हुए हैं। इस मस्जिद के चार दरवाजे हैं जो मुगलशैली के हैं। मस्जिद की मुख्य इमारत के तीन गुम्बद उसी तरह बनाए गए हैं जैसे दिल्ली व आगरा में शाहजहाँ व अन्य मुगल बादशाहों ने भवनों में बनवाये थे। यहाँ की स्थापत्य कला सोने-चाँदी व नीलम, पन्नों के रंगों से की गई सुन्दर बेलबूटों की चित्रकारी के कारण अपनी अलग ही पहचान बनाए हुए है।

सौजन्य : योगेन्द्र सिंह नरूका, व्याख्याता चित्रकला, राजकीय सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर उ.मा.वि. जयपुर